Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसाउली

६१ ग
१५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❀ ओ३म् ❀

पुस्तक-संख्या ......69/95......

पंजिका संख्या 29639/25.3.2003

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकते। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
पुस्तक सं० 61/172
आगत सं० 29629
तिथि० 25.2.1972
गुरुकुल ग्रन्थालय कांगड़ी

CHECKED 1973
Initial

स्टाक प्रमाणीकरण १९८४-१९८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी संशोधन ग्रंथमाळा–ग्रंथांक ५
उच्च अभ्यास अने संशोधन विभाग
आद्य कुलपति: कै. वा. डॉ. आचार्यश्री आनंदशंकर बापुभाई ध्रुव

असाइत नायकनी रचेली

हंसाउली

[वि. सं. १४२७]

[ग्रंथ १—मूलमात्र]

संपादक
पं. केशवराम काशीराम शास्त्री

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

प्रकाशक
गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी : अमदावाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवेदन

गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटीए गुजराती भाषा द्वारा उच्च अभ्यास अने संशोधनने खीलववा केटलाक समयथी प्रवृत्ति आदरी, तेने अंगे केटलाक विद्वानोने ग्रंथो लखवानुं काम पण सोंप्युं हतुं. १९३९ना मार्चमां मुंबई सरकारे नीचे जणावेली योजना मंजूर करी देणगी आपी :

१. भाषा अने साहित्य (Language & Literature)

१ गुजराती भाषानो इतिहास, एनो ऊगम अने अधिक कक्षाओमां विकास;

२ गुजराती छंद:शास्त्रनो अध्ययनात्मक निबंध;

३ जूनी गुजरातीना शिष्ट ग्रंथोनु संपादन (सोसायटीना हाथप्रतसंग्रह तथा बीजेनी हाथप्रतोने आधारे);

२. इतिहास (History)

१ इतिहास साधनग्रंथो;

२ गुजरातनो सांस्कृतिक इतिहास (सचित्र);

३ समाजशास्त्र (Sociology)

१. गुजरातनी भिन्न भिन्न जातिओ उपर निबंध.

ते अन्वये आ पुस्तक प्रसिद्ध करवामां आवे छे.

गुज० वर्ना० सो०
अमदावाद
ता. ११-१-१९४५

रसिकलाल छोटालाल परीख
अध्यक्ष
उच्च अभ्यास अने संशोधन विभाग

अनुक्रमणिका

निवेदन ३
अनुक्रमणिका ४
प्रस्तावना ५
हंसाउली १-९८
प्रथम खंड ३
द्वितीय खंड २७
तृतीय खंड ५१
चतुर्थ खंड ७३
परिशिष्ट-हंसाउली-पूर्वभवकथा १०१-१०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तावना

हाथप्रतो

आ काव्यनुं संपादन करवामां नीचेनी त्रण हाथप्रतोनो उपयोग करवामां आव्यो छे. ते त्रणे हाथप्रतो गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटीना दलपतराम हस्तलिखित पुस्तकसंग्रहमांनी छे. एनी बीजी बे हाथप्रतोनी "जैन गूर्जर कविओ, भाग १ला"मां नोंध थयेली छे, जेमां एक सं. १५१३ अने बीजी सं. १५५६ जेटली जूनी छे, पण ए मेळवी शकाई नथी. ते साथे अहींनी सं. १६७६ वाळी हाथप्रत अ उपरनी हाथप्रतोना आदि अंत साथे सरखावतां पाठनी अने भाषानी दृष्टिए जूनी अने प्रामाणिक वधु दीसे छे, एटले एने मुख्य राखी एनी वाचना तैयार करवामां आवी छे.

नं.	उतार्या साल	वर्गणी	भाषास्वरूप
५५३ एल	१६७६	अ	मध्य गु. २जी भूमिका
८३१ ङ	१७२०	ब	,, ४थी भूमिका
८०७	१८८४	क	,, ,,

आनी पुष्पिकाओ काव्यांते आपवामां आवी छे.

लेखक

आ काव्यनो लेखक सुप्रसिद्ध असाइत नायक छे. काव्यांते जणाव्या प्रमाणे सं. १४१७मां तेणे आ कृति रची छे. आ कवि जैनेतर कविओमां जूनामां जूनो जणाय छे. (आ कवि विशेनी आवश्यक माहिती कविचरित—भाग १लामां मारा तरफथी आरंभमां ज आपवामां आवी छे. विशेष जे कांई मळे छे ते **हंसाउली-ग्रंथ २जामां** उपोद्घातमां आपवामां आव्युं छे.)

परिशिष्ट

परिशिष्टमां मतिसुंदर नामना जैन साधुए रचेली " हंसाउली-पूर्वभवकथा " १४२ कडीनी आपवामां आवी छे. ए काव्य कविए "असाइत"ना काव्यना पूर्व भाग तरीके रचवानुं जणाव्युं छे: पोते पूर्वभवनी कथा कही छे के—

"पाणीग्रहणकथा छि जेह, **असाइत कवि** भाषइ तेह." (१४०)

आ काव्य कविए सं. १६२१मां इलिदुर्ग-ईडरमां बनाव्युं छे. कविनुं ए ज रहेठाण छे के नहि ते ए जैन साधु होवाथी आपणे कही शकता नथी. ए जणावे छे के— ". . . . . बोल्युं त्रहं तणुंचरी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवत सोल एकवीसि जाणि, **इलिदुर्ग** उत्तम अहिठाण, १४९.
कृष्णपक्ष वैशाख मास एकादशी गुरुवार उल्लास
मंगलीक प्रथम अधिकार कहि **मतिसुंदर** : हुई जयकार. १५०''

आ कविनुं बीजुं कोईपण काव्य अद्यापि मळ्युं नथी. मतिसागर अने मतिसार नामना बे जैन कविओ थया छे. पण ते तो बे पचीशी पछी थया छे. तेओने मतिसुंदर साथे कांईपण संबंध जणातो नथी.

आ साधुए वस्तु क्यांथी लीधुं छे ते जाणी शकातुं नथी. शिवदासनी हंसा-चार खंडीना पहेला बे खंडमां हंसाउली-नरवाहन-मुनिकेसरना पूर्वभवनी कथा छे, पण तेमां १ला भवनी कथामां नामो जुदां छे, एटले क्यांक बीजा ज प्रवाहमांथी बंनेने वस्तु मळ्युं जणाय छे.

ए उत्तम प्रकारनी कविता खास आपतो नथी. मात्र करुण रस जमाववा ए सावधान रहे छे.

एनी भाषा, काव्यबंध वगेरेनी कांई विशिष्ट छाप नथी. असाइतनी कृतिमां ज ते प्रकार आवी जाय छे.

गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटीना संशोधन विभागने अंगे आ काव्यनुं संपादन तैयार करवामां आव्युं छे. आ काव्य टीका-टिप्पण-उपोद्घात-शब्दसूची सहित एक ज पुस्तकरूपे बधुं तैयार छतां पेपर कन्ट्रोल ऑर्डरने कारणे आनु काम जान्युआरी १९४५मां जेटलुं थयुं होय तेटलुं बहार पाडी नाखवानुं होवाथी मात्र काव्यपरिशिष्ट साथे ज छपाय छे. बीजो भाग हवे छपाशे. आ समग्र कार्य पाछळ लेवामां आवेली महेनत त्यारे ज लेखे गणाशे के एना गुणदोषनी विद्वानो चर्चा करी एने कसोटीमांथी पसार करशे. ए तो 'हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकापि वा ।'

आ विभागना अध्यक्ष अध्या. रसिकलाल छो. परीख, अध्यापको उमाशंकर जोशी, मधुसूदन चि. मोदी अने भोगीलाल सांडेसरानी तेम ज मारा मार्ग-दर्शक भारतीय विद्याभवन मुंबईना प्रधान आचार्य मुनिश्री जिनविजयजीनी सूचनाओनु ऋण अहीं न भूली शकाय. छेवटे मारा मित्र अध्या. विष्णुप्रसाद र. त्रिवेदी (सूरत-एम. टी. बी. आर्ट्स कॉलेजना अंग्रेजी ने गुजरातीना प्रोफेसर)नो पण उपकार नहि भुलाय. एमणे आ संपादनने संपूर्ण अवलोकी केटलीक बहुमूल्य सूचनाओ करी मने आभारी कर्यो छे.

अमदावाद
ता. ११-१-१९४५

केशवराम का. शास्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसाउली

स्टाक प्रमाणीकरण १९८४-१९८[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम खंड

[वस्तु]

सकति-संभूअ, सकति-संभूअ, पत्त-परमेसु
सिद्ध-बुद्धि-वर विघन-हर, करुं कवित, मनि धरुं आदिहि.
कासमीर-मुषमंडणी (हंसगमणी) सरसति सामिणि, तास प्रसादि
वेदव्या[स] वालमीक रषि इम पहनु उपदेस.
तास प्रसादि 'असाईत' भणि: वीरकथा वरणव्योस. १

गाथा

अमरावती-समाणं पेषि प्रमाणं तिहूअण-वयाणं,
पुर पाटण पहिठाणं; अहिठाणं वीर बावनया. २

☞ **सूचना**—अहीं पाठांतरो नोंधतां कडीना आंक आंकडाथी अने ते पछी १-२-३-४ ए चरणो a-b-c-d थी आप्यां छे.

बनो आरंभः—

श्रीगणेशाय नमः ।

बमां १ली कडी नीचे मुजब अशुद्ध प्राप्त थाय छेः—

" अमरा विसमांण । परतष्टा परमांण पुर पइठांण ।
जांणि त्रिभूआणं । इहि ठांग वीर बावनीआ. "

२. b. पहूअ-वयाणं. अ.

कनो आरंभ :—

श्रीगणेसायि नम ॥ श्रीसारदायि नम ॥
हंसावलीनी कथा लषी छि ॥ गरुभोम नमह ॥ छंद ॥ राग रांमग्री ॥

१-३ प्रथमनी त्रण कडी क नीचे मुजब आपे छे: —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चउपई

यादव तणु वंश वरणवुं, वचन[स]रस नाटिक अभिनवुं.
ए तां उदभुत वात-कवीत, भणतां गणतां पसरि चीत. ३

सालिवाहिन-सुत उत्तम ठाइ, राज करि तिहां नरवाहन राइ.
बावन वीर माहि झूझार लहुडु भाई शकतिकुमार. ४

शषिर-बद्ध दससहस्र प्रासाद, कनक-कलस-धज नर-विनाद.
गोदावरीइ निरमल नीर; पुर पहिठाण वसि तिहां तीर. ५

" संकत संभुना प्रणमु पाय, मय्रा को सरस्वती तु माय.
वीदरु व्यास तणी मुषकथा, सरता सरवे सांभलजो जथा. १
पदबंध चतुराई लीलवीलास, किहि कर जोडी कवी असाइतदास.
मंन तणु पोचाडे कोड, वरणवु जादव छपन करोड. २
ते तणी कथा कहू सार. सांभलजो मंन करी नीरधार.
बावन वीर ते बलीया घणु, वरणव करु हू ते तणु. " ३

३. d. भणता. अ.

४. आ कडी बमां ८मी पछी छे. a. सालिवाहन तश उतम ठाय. ब. b. करि नर°. ब., करे नर°. क., °राय. ब-क. c. मांहि गिहिगिहि. ब. °वीर तेहे माहा जुजार. क. d. त्रिहिपनमु को नवि सांसहि. ब. लोढो भाइ ते सकतकुयार. क.

५. a. सीषरबध दश सिहिश प्रासाद. ब., सकरबंध तेहे सेत्र पांसाय. क. b. °स दस सिहिस प्रासाद. ब., कनक सुद वजडावे राअ. क. °नू नीरमल. ब., घोहोधावरी वेहे नरमल नीर. क. d. पुर पिठांण वसि तस तीर. ब., तांहां पर पेठांण वसि छि तीर. क.

—आ कडी पछी बमां नीचेनो विशेष छे:—

" पुर पइठांण अछि मनोहारि, सअल लोकनि सोभाकार.
सिहिस मुषि कवो बोलइ सोइ, तस्य रधि पार न पांमि कोइ.
रांइणि रूष अनि सिहिकार; वनस्पति नवि लाधि पार.
कदली केतक नि षझूर. तश गंधि पशरि दह दश पूर.
गढ मढ मंडप चांपा कूप, तिहां लह्यां छि अभीनव रूप.
दानसील सोहि सूवीशाल. दांन दीइ तिहां बालगोपाल.
कोटीधज तिहां वासि घणा, तश घरि रधि तणी नहि मणा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूध श्रावक सू वीसा वीशाल, ते आवि देहेरे पोसाल.
विविध श्रेणि सोहि सूवीसाल, जिनमंदीर दीसि घणमाल.
दिन दिन उछव दीसि घणा, पूरि रंग सवे मन तणा.

५मी कडी पछी क्रमां नीचेनो विशेष छे:—

" जांहांणे घोडाना जांणे मरम, छत्रीसावदना जांणे सरंम.
हाथ पजरु दीठु जेहे, रुषी उफराटा थया तेहे.
उफराटा थया रुषीराय, कुयर वेहे जइ लागा पाय.
रुषीजी रोस करो छो सोय, आहा षत्रवट आंमारी होअ.
आ षत्रवट अमे पालीयि; हरांण रोज सुअर वालीये.
पिहिली बुमे धावु जेह, षत्रवट साबु तेहे.
अल्या गउ श्रांमणनी वारि चडो; बुम होय तांहां जुजी मरो.
ओतर सोम पुरवना राय, जात्रा करवा कासी जाय.
सांज पडी, आथंमीआ सुर, तांहां कुंअरांनि थआं असुर.
सांज पडीनि सुरज आथमा, कुअर बेहू लक्षमांणा-पर आवीया.
रतंनागर आवो सांचरी उभो रहो जवार ज करी.
आसंन्यावासन्या दीधां मांन; कीधीधो जवार लेही फोफल-पांन.
प्रधान किहि : तंमे यिम ज सुणो; ऊठी कुअर भोजंन करो.
आमां आवडी छि जे काज, अंन नां लेहेसु एक लगार.
सोहोल-कला ससीवदनी जेहे, मरघा-लोचंनी कैयि तेहे.
अिनु मुष जांहांणीयि पुनंमनो चंद, विणा नासक दीठो फेणव.
भंमर तोहो गुंजारव करे, जंमतो नर अिम ओचरे.
ओत्र किहि : तु सोम अवधार; आहा मनि प्रणावो नार.
मज रुप कांहां दीधु माहाराज; दइस नेम नि मारी आज.
किहि मि मोडी पेपल-डाल; किहि मि भागी सरोवर-पाल;
किहि मि कीधां पाप अघोर; किहि मि मेलां सरोवर फोड;
किहि मि कीधा गोत्र-गाअ; किहि मि दुभा मात पित्याअ;
किहि मि उथापा अगाट; किहि मि दुभा श्रांमण भाट;
एवु हैये गुण वीमांसी रही, तारी जवंती मंदर मांहां गही.
मारा पत्या अवधारो वात, मनि करावो कासीनी जात्र.
किहि श्रांमण येवी वदा नार, एवी तु छि लड कुआर.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण वेदशास्त्र अभ्यसि. चारि वरण–वरणांतरि वसि.
बिसहस जिहां जिन थापीआ; वीस सहस माहि व्यवहारीया. ६

उत्तम धवलहर पोलि पगार. वास नगर नव जोअण बार.
चउरासी चउहटे वुहरीइ. राइचा उभव बंदिणि दीइ. ७

सांघ जात्र जूवटा घणा; कलहट कोलाहल तेह तणां.
एक चउषलीया कुडी घसि; वेस–हरि मंदिर वीससि(?). ८

रूडी रूपि राजकूअरी, त्रिणिसि साठि अंतेउरी.
बहू वाराइत वानि घणि, दासी त्रीस सहस तेह तणि. ९

जोगी संन्यासी जात्रा करि, इकोत्र परीआ तेना ओधरि.
अनेक मागां आवे आंही, तिनि तीरथ उपजि नही.
मारा पत्या अवधारो वात, निकर हतानो योडो हाथ."

—आ प्रक्षेप मूळ साथे जराये संगत थतो नथी. आ पछी **क** प्रति ४थी कडीनो पूर्वार्ध अने ५मी कडीनो उत्तरार्ध नीचेना पाठे आपे छे:—

चोपाइ

" सालीवाहंनसुत ओतंम ठाय, राज करि नरवाहंन राय.
घोधावरी वेहे नरमल नीर; पर ठिठांण वसि छि तीर.

६. a. ब्रांमण वेद ते सिन्न अभयास.**क**. b. च्यारि वरण तिहां उत्तम वसि. **ब**, वरांण चार वसानो वास.**क**. c. बसिहसव सही जिन थापिआ. **ब**., छ सिहसि सीव जंन थापिया. **क**. d. वीस सिहस्र मांहि वीवहारीआ. **ब**., वीस सिस्र घिर वेहेवारीया. **क**.

७. आ कडी पहेलां **ब** ४थी अने ८मी कडी वांचे छे; **क**मां नथी. a. प्रकार. **ब**. b. वसि नयर नव जोअण बार. **ब**. c. चुरासी चुहुटां वुहुरीइ. **ब**. d. राउत बिठा दाण ज लीइ. **ब**.

८. a. जूवट तिहां घणां **ब**. b. कलहट वाला कोलाहल तणां **ब**. c. नित्य चुहुवटीआ कुडी घसि. **ब**. d. वेशाहर मंदिर वीससि. **ब**. –**क**मां नीचे मुजब:–

" सीध सिस्त्र वेवारीया तांण, चोहोरासी चोठि धिम ज भणे.
ब्रांमण तांणी व्रता बहू घणी, हाट व्रग तेहे बहू ज तांणी.
एकलीया गुडली आ कसि; वेसानां मंदर वीस सिस्त्र.

९. a. रुपि रुडी. **ब**–**क**. b. साठा. **ब**. अतीओरी षरी. **क**.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजऋधि नवनधि नरमली; चतुरंग सेन छत्रीसि कुली.
बावन वीर सदा गहिगहि, पणि त्रिपनमु नवि सासहि. १०

तेणि पुरि पाटणि नयर-नरिंद, एकवार पुढिउ निस नीद.
थयुं प्रभात; सुपनंतर होइ. ऊगिउ सूर, न जागि सोइ. ११

गियु कणयापुर पाटणि ठाइ, परणि कुंयरि-कनकभ्रमराइ.
हंसाउली-कर ग्रहीउ जसि, सपन-प्रेम मनि लागु तसि. १२

नरवि पुढिउ परवसि चीत. कोइ न जाणे : मन भयभीति.
राजद्वारि लिहि जे मान, राइ ऊठाडु जई प्रधानि. १३

---

c. वारायत छि तेह तणि. **ब.**, बहू वीर हठ वाधि घणी. **क.** d. सिह्सि त्रण्य रणझणइ. **ब.**, त्रांणसि तेह ज तांणो. **क.**

१०. a. रधि. **ब.**, रीध. **क.** नीरमली. **ब.**, तेटली. **क.** b. चतूरांग सेना. **ब.**, चंपकसेन. **क.** c-d. °वीर सूभा झझार, लुढउ बांधव शगतिकुमार. **ब.**, वसि नगर ते नव ग्रेहे, मांनां कोय सासीक छि. **क.**

११. a. तिणि......पाटण.......नीरंद. **ब.**, प्र पोहेठाण नगरनरंद. **क.** b. एक देवस नसी पुढिउ इद. **ब.**, °वार पोहोडो राजंन. **क.** c. हुऊ प्रभात सूपनांतर सोय. **ब.**, थयो प्रभात सुपनांत्र सोय.**क.** d. जागइ कोइ **ब.**, उगो सुर, नव जागि कोय. **क.**

१२. a. गव्यु कणीआपुर पाटण मांहि. **ब.**, गयो कणीयांपर पाटांण ठाय. **क.** b. °कुअरी कनकत्रह्मराय. **ब.**, प्रांणो कुंअरी कंनकभ्रंमरांय. **क.** c. हंशा....जिसइ. **ब.**, °वली-वर ग्रहो जसि. **क.** d. सूपन-प्रेम राय लागु तसि. **ब.**, सुपनांत्र मनि लाहागु तसि. **क.**

१३. a. पुढिउ राजा परवसि चिति. **ब.**, नीसाभर पोडो राजकुआर. **क.** b. कोई न जगावाइ अति भिभइति. **ब.**, कोयि नां जांणे मनंनी वात. **क.** c. राजदूआरि लिहि जे मांन. **ब.**, **लिहि-ने स्थले अ मिल्या** आपे छे. d. उठाडइ रायनि परधांन. **ब.**

१३. c-d ने १४. a. b. ने बदले **क** मां:-

" द्वार मला बहू मंत्री ठाय; मंतसु मलीनि करो उपाय.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊठिउ राजा, थयु गुण दोस; कंपिउ काल, मन वसीउ रोस.
भणि : "काज वणस्युं मुझ. धरी छुरी करि मारुं तुझ." १४

भणि मनकेसरि : " सामि, हूं साध.
देव, म मारिस विण–अपराध."

राजा कहि : "सो निसि होइ. विण–अपराध न मारि कोइ. १५

सुणि, मनकेसर, मनि अंदोह. तइ स्त्री–तणु लगाड्यु छोह.
आज सपनंतर मि पामीउं : हूं कणयापुरि पाटणि गयु. १६

स्त्रीरूपि अनोपम अंगि, ते परणतु हूतउ मननि रंगि.
कनकभ्रम–धूअ हंसाउली, ते पणि नयणि न दीसि वली. १७

जोहो जगाड्यु आज मारि राय; नीकर मारु नगर लुटाय.
कर जोडी वेनवीयो राय; मनकेसर जइ लागो पाय. "

१४ मी पहेलां बमां:—

" कर जोडीने लागु पाय; मनकेशर वीनवीउ राय :
तम जुहारइ आव्रू सहू; राजन नीद्रा अवगुण बहू. "

१४. a. उठिउ राय, थयु घणदोस. ब. b. कोपिउ काल मनि, ब.
c. राय भणि. ब. विणासू मूझ. ब., राजा भणे काज वणुसु
मुज. क. d. छरी. ब. मारीस तूझ. ब. काडी षडक. क.

१५. a. हू. अ. भणि मनकेशर, स्वामी साध. ब. b. मारीस. ब.
c. राय करि ते नश्चि होय. ब. d. कोय. ब.
— कमां १५–मीने बदले:
" भणे प्रधानः मांहां मारेस राय. जोहो, तारा मनांनु सारु काज.
तंम जहार आवा छि सहू; राजा–नंद्रा अवगुणे बहू.
उठो राय मंन धरी रोस. किहिसि काजि पछि देस दोष.
राजा किहि : सुणो मंत्री वात; अस्त्री यावानी सांभल सांच. "

१६. a. सूणि मनकेशर अति अंदोह. ब., सांभल मनकेसर सोय. क.
b. अस्त्री तणउ लगाडिउ छोइ. ब., अस्त्री तणु मांनि षांपण
होय. क.—१६मी c–d. अने १७ a.–b. बमां नथी.c–d.
" आज सुपनांत्र हू पांमीयो, हू कणीयांप्र पाटांण गओ." क.

१७. ब प्रति शुद्ध कनकब्रह्म शब्द सर्वत्र प्रयोजे छे; ते ज प्रमाणे
हंसाउलीमां तालव्य शकार प्रयोजे छे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रणिसि साठि न सोहि साथि; पुहक छंडाणु, दाधु हाथि.
विषम-क्रम-गति कुण अवगणि ?
रहि रतन किम रंकह तणि ?" १८
भणइ प्रधान : " म मारिसि आज, तम तेणि अस्त्रीइ काज.
मास-दिवसि नस्यइ सुध लेसि. परतषि स्त्री परणावुं तेउ." १९
हरष-वदन तव बोलि राउ : " मति-मेहर, बिरदनु ठाउ."
द्यउ पसाउ मनकेसरि घणु : "करुं पराक्रम ते अस्त्री तणउं." २०

तव प्रधान ततषिण तेणि वारि, चिहु दसि मांडया सत्रूकार :
सधि-कारणि मेहल्या छि सात; ते कनि पूछि अपूरव वात. २१
जण बिठा विहवराति वाट; पूछि विप्र नगारी भाट;
पूछि ते योगि दरवेस, जे आवइ वेगला वदेस. २२

---

b. प्रणतो'तो हू तिनि संग, क. c-d. राजा कंनकभ्रंमनी हंसावली तेहे मीही निणे नरषी षरी. क.

१८. a. साठां सोहि. ब., त्रांणसि साठ मली तिनि साथ. क. b.पुहूक छंडाण-उ. ब,. पुष नां षाधो, दाजो हाथ. क. c.विषम करम-गति कूण अवगुणि. ब. d.रांकह ब. c-d. 'अस्त्री अंग अनोपंम हसे, रांक रतंन मांनि कंम सांपडे." क.

१९. a. भणि प्रधानः म मारीश आज. ब., भणे मंत्रीः भला मारा राज. क.
b. जु तूम तेणी. ब., जो हो, तारां मंननु सारु काज. क.
c. माश देवश मनि नीसि ले. ब., मास दीवस लगि सुद ज लेस. क.
d. परतष्य.... ०णावूं. ब., प्रतक नार तिनि प्रणावेस. क.

२०. a. तव हरषिउ ते बोलि राय. ब., तव मंन हरषो नि बोलो राय. क.
b. ०र करिउ पशाय.ब., मागे मागे तंनि देयु पोसाय. क.
c. कीउ ऊपाय मनकेशर घणउ. ब., दीयो पोसाअ मंनकेसर घांणो क.
d. करु. अ तणउ. अ. करिऊ उपकर्म ते अस्त्री तणउ ब., करो उपाअ हमे अस्त्री तांणो. क.

२१. a. ततक्षण तेणीवार. ब. जेढांणो (?) वरि. क. b.चिहुदसि मांडिया शत्रूकार. ब., चोंहोदेसे सत्रुकार ज करे. क. c. सूधि कारण मेहेल्या. ब., सीध कारांण जांणी ते साथ. क. d.किहिनइ कांइ अ०. ब., किहि पुरव पछंमनी वात. क.

२२. a. ०ठा जे जूइ वाट ब., जण बिसारा चारि वाट.क. b. पूछि छि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इणि परि दिवस ग्या बहूत वहि; देसांतरीइं सोइ सिधि कही.
जमाडु आणी आवासि; तव प्रधान पूछि तसु पासि : २३
" अम्हे पंषीआ छूं देसांतरी; अडसठि तीरथ कीधां फरी.
कणयापुर पूछउ छउ जेउ, मारग मास त्रहुनु छि तेह. २४
समुद्र परि ते पाटण ठाउ. कनकभ्रम ते कहीइ राइ.
हंसाउली कूंअरि ते तसी; रूपि रंभा नि उरवसी ! " २५
मंत्री-मनि माहाउछव होइ; मीठां अन्न जमाडु सोइ.
देसांतरी मंत्री सरसउ लेउ; राजदूयारे पुहुता बेउ. २६
देसांतरी राजा प्रधान, मनि आनंद्या मिली त्रिहुं सान.
गुपति बोल राषे आपणु : " कीजि मंत्र पीआणा तणु." २७

पलंगी भाट. क. c. ०छि योगी नि द०. ब., पूछि जती जोहोगी द.० क. d. जे वेगला वसि व०. क.

२३. a. इणी परि देवस गया बहू वही. ब., कणीयांपर दीवस गओ वही. क. b. देशाउरीइ ऐक शधि ज कही. ब., एक देसांत्री आवो सही. क. c. ते तेडी आंण्यु आ०.ब., तेहे तेडी आंणो अवास. क. d. मनकेशर पूछि नीज पाश. ब., वात प्रधान पूछि पास. क.

२४. a. ०षी तां देशाउरी, ब., अमो पंषी देसावरी.क. b.कीजि फरी. ब. अडसठ. क. c.कणीआं......छु...ब., कणीयांप्र पुछि ते ठाय. क. d. त्रिहूनु तेह ब. कमां २४. d. अने २५. a. नथी.

२५. a. समूद्र....पटण ठाय. ब. b. ०भ्रंम कोहो केवो राअ. क. ०ली बेटी छि असी. ब. ०री केसी. क. d.०भा अपछर जसी. ब., रूप रंभा अवछरा जिसी. क.

२६. a. मंत्रीनि मनि उछव होय. ब., तव मंत्री मंनमोहन होअ. क. b. पंचामृत जमाडिउ शोय.ब., अपत पंड जांमाडा सोह. क. c. देशाउरी सोइ शरसु लीउ ब., देसांत्री मंन आनद होअ. क. d. राजदूआरइ. ब. बिहु. ब., राजदवारि पोहोता दोह. क.

२७. a. देशाउरी नि राय. ब., देसांत्री क. b. ०द्या मंत्री (?) अ. त्रिहू शांन. ब., मंन आनंद मला ते मांन. क. c गुपत बोल राषिउ आपणउ. ब,. थापो बोल राषो आपणो. क. d. मंत्रि. अ. प्रीआंणा तणउ. ब., कीजि मंत्री पीयणो आपणो. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरवाहन रा बुद्धि चालवि : बावन वीर बोलाव्या सवे :
"मइ यात्रा छि हीयडि धरी; अम्हे चालस्युं;" भलामण करी. २८
तव राजा वीर प्रति कहि : "राउ विण राज न रहिणि रहि.
जां जइ आवुं ईणि काजि, सकतिकुमा[र बइसा]रु राजि." २९

त्रणि प्रछनगति चालीया; विषम वाट वन लंघी गया.
किहां विप्र कहां योगी थाइ; देशांतरी तणी मलि जाइ. ३०
एक वसइ, एक उद्वस घाट, सावज-चोर-चरड तणी वाट.
अनेक उपाय अनोपम कीया; त्रिहू मासे कणयापुर गया. ३१
कणयापुर पाटण घण देस. कनकभ्रम कहीइ नगर-नरेस.
गढमढ मंदिर पोलि पगार; वास नगर नव जोअण वार. ३२

---

२८. a. ०राय बुधि केलवइ. ब., ०राअ बध चितवे. क. b. बोलाव्या शवि. ब. ०रनि सुपु सरवे क. c. मि यात्र बइ हईडइ धरी. ब., मज जात्रा जावानु मंन. क. d. चालीस सर्व भलामण करी ब. कीजि स्वांमी तंन पावंन. क.

२९. a. इम कहि. ब.—आ कडीनी लीटी ज क मां ऊ० पा०. वीरांनि कहि ब. b. राय व्यण राज किम सूनू रहि. ब., राय वना राज सुनु क्यंम रिहि. क. c. जैई जै आवू इणि. ब., तांहां जै आवु तेणे क्याज. क. d. शक्तिकूमार बिशारु. ब., सकतकुमारनि सुपु राज. क. ०रु. अ.

३०. a. थापी राय वनि चालीआ. ब., त्रांग पुरष वेगि चालीआ. क. b. व्यषम भोमि वन बुली गया. ब., वीषंम वंन ओलंगी गया. क. c. किहा...कहा. अ., किहां योगी थाय. ब., करि वीसांमो, राय जोगी थाय. क. d. ईणी परि वाटि विहिता जाय. ब., कापडी-आनि वेसि जांअ. क.

३१. a. किहां वासि किहा उवश घाट. ब., एक वाटि वाटो वटि. क. b. ०र-वरजत. अ., सोहो जोजंन चाला ते साथ. क. c. कीआ. ब., थआ. क. d. तेणि पाटणि गया ब., त्रोहोमास कणीयांप्र गया. क.

३२. बमां कणीआपुर एवी जोडणी सर्वत्र मळे छे. a. कणीयांप्र कीधो प्रवेस क. b. भलु छई नरेस. ब., ०राअ तांहां नरेस. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा

सरोवर-पालि ऊतरच्या; वाडोइ कस्या विश्राम.
ततक्षणि चाल्यु कापडी राजन करीय प्रणाम. ३३

[चउपई]

बिहू जण सरसु नगरनरेस कणयापुरि कीधु परवेस.
राजलक्षण जे जाणइ विवेक, साहमी आवी मालणि एक. ३४
पहवी बुद्धि न जाणि अन; तेणोइ परष्या पुरुष-रतन.
बत्रीस-लक्षण जाणि भेउ; आपी उलग चउसर लेउ. ३५
सकन भणी फल वंदि राइ; ते तूठउ दीइ पसाय:
'पारिषि मूझ मूल व्रासीइ;' रंगि रतन रामणिनि दीइ. ३६
मालणि मुद्रा देषि पसाउ जाणि: 'को पृथिवीपति राइ'
भणि : "भलि आव्या [परहुअणा]; फल्या मनोरथ मन अम तणा."३७

---

c.॰ लइ प्राकार. ब., गढ मंणी मंदर पोल प्रकास (?). क.
d. वसि नयर. ब., वसि नगर नव जोजंन बार. क.

३३. आ दूहो ब-कमां नथी.

३४. a. सुरनर दिन-वेश. ब., बहू जण सरसो. क. b. ॰र कीधी प॰ ब.; क. मां सर्वत्र **कांणीआप्र** एवी ज जोडणी मळे छे. c. ॰ण लहि ववेक. ब., राजा लगि जांहां ला विवेक. क. d. सांमी यावी मालांण एक. क.

३५. a. एहवई बुधि न जांणि अंन. ब., अवी बुध जांणी जे मंन. क. b.पारष्या पुरूष ब ; पारषां तेणिअि त्रांण रतन. क. c.लष्यण बत्रीसि जांणइ नेह. ब. d सांहांमी आवी मालणि एह. ब,. ३५ c-d कमां नथी.

३६. a. शकन पुप्फफल वंदी राय. ब., सिस भाव जांणे राय.क. b. तूठउ स्त्रीनइ दीइ पशाय. ब., आपो तिनि बहू पोसाय.क. c.प्रधांन रया व्यमासी असू. ब., आपी अमुलक नि आंनोपंम कीयो.क. d. रंगि रत्न रांमिणिनि दीऊ. ब., रांक रतंन मालांणनि दीयो. क.

३७. a. मूद्रा दीउ पसाय. ब., मालांण देखी बहू पोसाय.क. b. जांणिउ कोय प्रथवीपति राय. ष., जांणु कोय प्रथमीप्रथ राय. क. c. भलि पुहुता तह्मे परहूणा. ब., भंणे राजा बाइ आवा परुणा.क. d. ॰थ सवि अह्म तणा. ब., सकल मांनोरथ फला यांम तणा. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलिउ मनकेसरि प्रधान : "पूछुं बुधि; मा, मागुं मान :
तमे अपूरव वेदन लहु; अम ऊतारा-थानिक कहु." ३८
मालणि भणि : "तुमे अह्म बंधु, एह भार मि उडिउ खंध.
बोल एतलु छि पाधरु : अम मंदिरि ऊतारा करु." ३९
ततखिणि चाल्या बिन जिणा; आगलि स्त्री, पूठि परहुणा.
बोल्यु रामा-मंदिर-धणी : "आवी गंगा आलसू भणी." ४०
आसण-बइसण दीधां मान; कीउ परगणु फूल-फल-पान.
सोइजि साचवि अतिथनु धरम. माली कहि नगरनु मरम. ४१
माली भणि : "वीनती सुणउ : तम वीसास अछि अमतणु.
इणि पाटणि फरी जे अजाण, ते नर निश्चइ चूकि प्राण. ४२

---

३८. a. ततक्षण बोलि ते प्र°. ब., बोला मंनकेसर परधांन. क. b. पूछु., मागु. अ. पुछु बुधि नि मागि मांन. ब., पुछु वात बाइ मागी मांन. क. c. अह्मे अपूरव वेद नवि लहु. ब. तेमे पुरव वेदना लोहो. क. d. °थानक ब., अंमनि ओतंम उतारा कोहो. क.

३९. a. तमे अह्म बंध. ब., भांणे मालांण तंम मुज बंध. क. b. दिउ वतू, अह्मे उडेस कंध. ब., दोहो भार, वीरा ओढो कंध. क. c. ए बोल अछि पाधरु ब., एटलो बोल वीरा छि पाधरो. क. d. अह्म ऊतारा थांनक करउ. ब., अंम मंदर उतारा करो. क.

४०. a. ततष्यिण चाल्या बेहू जणा. ब., ततषण चाला त्रांण जांणा. क. b.पुठि परहूणा. ब. आगल मालांण, पाछल परुणा. क. c. ऊठि माली मंदीर ब., उठो माली मंदर घरधणी. क. d. आव्या गंगा आलश भणि. ब., .. आलसु अंम भांणी. क.

४१ a. आशण बिशण. ब., आसना वासना. क. b. कीऊ परगणू फो° ब., कीधो जवार लेइ फो° क. c. ते चलावि अतीथनु धर्म. ब. माली चलावि अतीतनो धरंम क. d. कोहो रांमी नगरना मरांम. क.

४२. a. माली कहि वात एक सूणउ. ब., माली भांणे माहारी वेनती सुणो. क. b. तम वीशास अछइ अह्म तणउ. ब., तंमनि वसवास छि अंम तांणो. क. c. आणि नगरि जे भमि. ब., आहींथी त्रण लीटी क मां नथी. d. चूकइ नसइ. ब.

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंच दिवस पषवाडा माहि, तस गति–पीठ हंसाउलि जाइ,
स्त्री पंचसि लहि हथीयार, सरसी चडि तुरि जेणि वार. ४३
आठमि चौदसि पूनिम–समि, राजकुंयरी नसि नर दमि.
आदित्य सोम वडेरा वार, करि कुंयरि पुरुष–संहार. ४४
पुरुष पंच दिवस दुर्लभा; तेणि दिन राइ न पूरि सभा.
स्त्री राजरीति, नारि गहिगहि. सूर सुभट भड नासी रहि." ४५

माली तणां वचन मनि धरि, मनकेसर मंत्री बुधि करी;
कर जोडी राजा प्रति भणि : "जाउं सकति–पीठ तेहतणि." ४६
मंत्री–वचनि सुणि बोलि राइ : "किम पागडा चूकि पाय?
ए उपाइ निरर्थक थाइ, पाछा जइ स्यूं मुह दाषाइ?" ४७
भणि प्रधान : "पधारु राय; तम प्रतापि मुझ वाधि आय.
बुद्धि–मेहर बिरद मझ पासि; हंसाउली करं तम दासि." ४८
आठणि आ गम मिहतु गयु; देवी प्रति [ते] उलवि रहु.
माडुं चरित; करि सवि काज; देवी थईनि बोलिसु आज." ४९

---

४३ मी बमां पण नथी.

४४. a. पून्यम. ब. आठंम चउदस पुनंम सोय. क. b. हंशाउली स्त्री नरनि. ब., राजकुअरी अस्वारज होअ. क. ४४ c–d थी ४९ मी सुधी कमां नथी. c. वडेरे, ब. d...हंशाउली पुरुष-सिहार ब.

४५ मी कडी बमां ४६ मी पछी. a. पुरूष पंचइ दिन दूर्लभा. ब. b. तिणि ...राय...ब. c. स्त्री राज्य करि, नगर गिहिगिहि ब. d. सुहुड परूष सवि. ब.

४६. a. धरइ. ब. b. बमां सर्वत्र **मनकेशर** एवी तालव्य **श**कारवाळी प्रायः जोडणी छे. करइ. ब. d. जाउ. अ., जांऊ पीठ ते शक्ति तणि. ब.

४७. a. सूणी बोलइ राय. ब. बमां ४७bथी त्रण पद अने ४९a नथी; ४८मी ४९मी पछी छे. b. काम. अ.

४८. a. मनकेसर भणिः सूणि हो राय. ब. b. °पइ वाधि मूझ आय. ब. c. मति-मेहर बुधि माहारइ पासि ब. d. हंसाउली करसू तूम दास. ब.

४९. b. देवी प्रति हू उलवि थाय. ब. c. मांडी चरीच नि करसू काज. ब. d. बोलेस ब.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूइ संध्या जव काली रली, तव मढि पुहुती हंसाउली.
भयंकरा भैरव कलीकली. वागइ डमरा नि डाकली. ५०
धूरि धमधम; तेजी तोषार; सरमि करि काढ्या हथीआर.
हंसाउलीनुं वडुं प्रमाण, काली स्त्री कालिका समान. ५१
विवध फूल-फल नव नैवेद्य; वीणा वंश गाइ गुणभेद.
सोइजि परवरी पंचसि नारि, दीठी कुंयरि मंत्री मढि-बारि. ५२
थयु देवो तव बुद्धिनिधान; हाकि मुनिकेसर प्रधान :
' नरहत्या ति कीधी घणी. मुझ मढि म रहेसि, पापिणी." ५३
हंसाउली शबद जव सुणी, जाण्यु : ' देवि कुपी मुझ भणी.'
कर जोडीनि ऊभी रहि; गत-पूरव-भव-वीतक कहि : ५४
" देवि, अवधारु मुझ वीनती; पेलि भवि हूं पंषिणी हती.
ईडां मेहलां, सेवन कीउं. दव बलतउ तेणि वनि आवीउ. ५५

---

५०. a. थइ...फली. ब. राजकुअरी रंगि रली. क. b. मंडप आवि हं ° क. c. भैरव भूत करि गली. ब. c-d कमां नथी. d. वाजि डमरु ब.

५१. a. घूरी धसि. ब., धरांणी ध्रुजि क. b. सरम...काढी...ब., करि सरांम बाइ वढे. क. c. °नु. अ., °नू वडू. ब., °नु व्रत. क. d. समांनि. ब., जपि छि कालेसरी नांम. क.

५२. a. नैवेद. ब., वीवध पिहिरना नव नीवेद. क. b. विणा वंस ज्ञांन. ब., विणा वंस मरदंग नि मेर. क. c. अस्त्री पंच सयांसू नारि. ब. अस्त्री पंच सुह्ू प्रवरी. क. d. दीठा कुअरी देउल-बारि. ब., मंडप आवी हंसावली. क.

५३. a. °वी बहु बूधिनीधान. ब., ताहारि देवा थै बोलो प्रधान. क. a पूर्वे कमां एकचरण वधारे छे:-" कुअरी आवी मंडप मागि मांन." b. हाकी...परधान ब., हाकी...बांणी ओचरी. क. c. नरहता... घांणी. क. d. म पइसि रे पा.° ब., माहारि डेरे नावेस पापांणी. क.

५४. a ते शवद. ब, हंसावली चित्रो सबंद सुणी क. a पूर्वे कमां एक चरण वधारे;-" पुरषहत्या ति कीधी घांणी." b. जांणिउ...कोपी मूझ...ब., जांणु देवी कोपी मुज भणी. क. c. क जोडीनि उभी रही. क. d. पूरव भवनी वातज. ब., कथा पुरव भवनी कही. क.

५५. a. माय, अवधारउ मूझ विनती ब., माहारी माहा वधारो एहे विनती. क. b. हु पंषिणि हुती. ब., हू तो पेहेले भव हूती पोपटी. क. c. ईडा मेह्ला, सेवन कीउ अ. इडा मेहेली सेवन कीउ ब., अिडां मेलां तां सेवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मझ भरतारि साहस नवि कीउ; अपति मेहलीनि ऊडी गयु.
इस्यं करम ते निष्टुर तणां; मूकी ग्यु बालक आपणां. ५६

अपत्य सरिसु मि घट होमीउ. नाह निसाचर ऊडी गयु.
जाती समरणि संभारुं सोइ, मारुं पुरुष, न मेलुं कोइ." ५७
देवी बोली : "सुणि स्त्री, कानि; धरिउ गर्व ति थोडि ग्यानि.
सास-प्रभावि एतली सिधि; आथी वात न जाणुं मुधि. ५८
ए तां नथी अमारु धरम, मनुषि सरसुं बोलीइ मरम.
साहस सूर्यवंसो राज, दसरथ प्राण तज्या पुत्रकाजि. ५९
तूझ भरतारि साहस जे कीउ, ते सांभलि तु फाटि हीउ.
हवइ वात कहुं संखेव : पूजि [म] प्रतिमानि तूं देवि." ६०

काज. क. d. तिणि वनि दव बलतु आवीउ. ब., तिनि वंन दव लागो दाज. क.

५६. a. मूझ भरतारि सांसु कीउ. ब., मारि नरज भरथारि मांनि सांसो करो. क. b. तेणी वेला ते नासी गयु. ब., तिनि अवसर उडी गओ. क. c–d पहेलां अमां ५७ cd छे. c. अस्यां...नीठर...ब., एसां करंम छि ते जंन तणां. क. d. मेहेली गयु. ब., आपणा. अ., मेली अपत गओ आपांणां. क.

५७. a. शरखु मि घट दहिउ. ब., दावादल मांनि होमी गयु. क. b...... नीशाचर नासी...ब., नाव नरंजन नासी गयो. क. c. संभारु. अ. स्मरण सांभलीउ सोय. ब., ते माटे सती सांमरु संभारु सोय. क. d. मारु. अ., मारूं पुरुष, ने मेहेलू कोय. ब, नव मेलुं कोअ. क.

५८. a. सूणि अस्त्री. ब.; कमां a b नथी. b. धरि अंग वार्ता थोडि ज्ञांनि. ब. c...प्रमांणि...बुधि. ब., सात्र प्रमांणे एटली सुद. क. d. आथी कांइ न जांणि सूधि. ब., आ वात हू जांणु बुध. क.

५९. a. ए तु नहि अह्मारउ धर्म. ब., ते तो नही आंमारो धरंम. क. b. मुनीष्य सरीसां बोलू ब., मांनो सात्र हू बोलु सरम. क. c. साह सूरज्यवंसी रांम. ब., सिव्र सुरज°.क. d. दश°...°कांमि. ब., °थ प्रधांन पुत्रकाज. क.

६०. a. सांसु कीउ. ब., तांमां कारांण जेहे पंषीए कीयो. क. b. हैईउ. ब,. कहू छ वचारे हैयो. क. c. हवडां...ततषेव. ब., हमांणां तुजनि कहू ववेक. क. d जु तू पुरूष न मारि हेव. ब., परपुरष तु मांने देव. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भणइ कूयरि : " नवि जाणूं वात; अजाणतोइ करचा नर घात.
अमे छब्या तमारा पाय. हवि पुरुष न मारुं, माय." ६१
नव नैवेद्य भोग फल करी आकंपी अवला संचरी.
मनिकेसरि ऊठिउ घसमसी. देषी चरि तव देवी हसी. ६२
भणि मंत्रि : " माइ, करयो क्षमा; तूं सीकोत्तर, तूं मातमा.
विषम वेला तूं तोतल तवी; चुसठि चाचरि [तूं] भैरवी. ६३
भरूअचि प्रसीद्ध, प्रताप नवनवा; तूं सरसति तठी संधुवा.
मांगलुरि ते तूं मंगला[ज]; तूं कोइलि पर्वत हींगलाज. ६४
तूंह जि धारधर-आदि अषंड; स्रुधि पर्वत तूं चामंड;
पूजि प्रवा (?) शक्ति तूं सदा; तूं आबू ऊपरि अरबदा. ६५

---

६१. a. हंसाउली कहिं, सुणि मुझ वात ब., हंसा भांणे, तुं सांभल मात. क. b. अजांणति कीधु ब., अंजांणे मीही कीधी घात. क. c. हवइ हू छबू तूमारा पाय ब.. आज छबु मा तारा पाअ. क. d. मारु. अ., आज पछी नहि मारू माय. ब., हमे पुरुष नही मारु मोरी माअ. क.

६२. a. °द ऊतावलां करी. ब., नवनी वेदनः भोगज करी. क. b. सांचरी. ब., आपीनि पछी सांचरी. क. c. मनकेसर. ब., उठो क. d. चरीत्र नि. ब., अचरत दीठु, देवा हसी. क.

६३. a. मंत्री भणि, माय करज्यो. ब., मंत्री भांणे, मा करजो षिमा. क. b. °तरि तू आतमा ष., तु सीकोत्र तु सिधवा. क. c. व्यषममाल ब., वीषंम वेला तु तोतली. क. d °ठि चरचा (?) अ., तु चोसठ छि भेरवो क.

६४. a. भरूअछ पीठ प्रतापि नवी. ब , भरूवच पुठे तु भेरवी. क. b. तू श° ...सिधवा. ब., तु सरदार त्रुठी सिद्दांणी. क. c. मंगलपुर तां मंगला. ब., मांगरोलमां तुहू मेलाल. क. d परवत तूं हिंगला. ब., कोअिल प्रबत तु हिगलाज. क. हीगलाज. अ.

६५. a. " धाराधर आदि...ब , दांमण देसि तु दंमंडा. क. b. तू हरसीधा. ब., तु सीदप्र त्रुठी चांमंडा. क. c. पूई (?) परता वंछीत. ब., पताई पडदो पुरो. क. d. तू आवू परि तू अर्वदा. व , आबुवल उपर हरफुदा. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कास्मीरि बोलि बुद्धि घणी; तूं सरसति हंसगामिनी;
जालामुषी जालंधर भणी; चिमरस (?) योगिन-पुरि योगिनी. ६६
कामरूप कामाष्या तेणि; तूं हरसिधि सुणी नगरि ऊजेणि.
कोइलापुरि महीयलि माइ नाम, तत्र सकति माइ, करुं प्रणाम. ६७
देवी थईनि हूं बोलीउ; सामि-कामि मइ साहस ज कीउ."
" पीठ-प्रसंसा पुण्य विभागि," देवी भणि : "वछ, वर मागि." ६८
मंत्रि मागि बुद्धि आपणी. दीधी विद्या चित्रक तणी.
'तझ सक्ति तूठी : हुउ पसाउ'; जइ जुहारु यादवराइ. ६९
मंत्री भणि : "राजन, अवधारि; नर मारंती राषी नारि.
हवि हुं जाउस तीणि ठाइमि; फेरवसिउं कुंअरिचित चित्राम." ७०

मनकेसर चीत्तारु थयु; गयु रा-लगुनि; रा भेटीउ.
[तिणि] चरित लष्युं त्रणि लोक. हुउ नयर माहि निरघोष. ७१

---

६६. a. काशमीर मुष बोलि घणी. ब., कासमेर मत मागु घांणी. क. b. तू तू सरशति हंसाशनी. ब. तु सरस्वती हंसा तणी. क. c. ज्वाला°... धणी. ब., जालंद्र गांणी. क. d. नगर योगिणि तू योगिणी. ब., नगर संजोगि उजेणी तणी क.

६७. a. कांमरूप नितू कांमरुपिणी. ब., कांमरूउ प्र तु कांमांणी क. b. हरसिधि नयर ऊजेणी धणी. ब., तु हरसीध उजिणी तणी. क. c. कोएला परवत लष्यमी नांम. ब, कोयल प्रवत लषमी नांम. क. d. माय शक्ति तूझनइ करु प्रणांम ब., वली तुजनि हू करु प्रणांम. क.

६८. a. ° नइ ब. थै° क. बोलीयो. क. b. स्वांमीकाजि मि सांसु ब., मारा स्वांमी कारांण मिहि सांसो कीओ. क. c. पुन्य प्रभावि. ब., तारी पुठि आवो मारु भाग. क. d. तूठां देवि. ब., तूठी देवा वर वछ क.

६९. a. बुधि. ब., माता बुध मागु छु घांणी. क. b. चीत्रक. ब., बुध आपो चीतारा तांणी. क. c. तूंठां देवी, करिउ पसाइ. ब., सकत तूठी दीओ पोसाअ. क d. जे जुहारया. ब., आवी झवार घेर कीधो राय. क.

७०. a. भणि प्रधांन, राजा अवधारि ब., भाणे प्रधांन, राजा एवीधार. क. b. नर हणती मइ राषी नारइ. ब, पुरष मारंती राषी नार. क. c.किहि हू जाइश तेणि ठांमि. ब., उछाआंणी उठो ठांम. क. d. फेरू कूअरी चित वि·ाम. ब., कुअरीनि फेरवु चीत्रांम. क.

७१. a. चीतारु बमां वधे. चीतारो थयो क. b. राउ. ब, गओ राज, राजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसाउली मनि षंति धरेवि; महिली पाइ तेडाव्यु तेय.
कूयरि दसि देषाडु ठाम : "लषि, चीत्तारु, भलूं चित्राम." ७२
लष्युं रामायण भारह-भरह; लष्या माल हस्तोहि करह; (?)
लष्यु महावन आगमनिगम; लष्यु अंब-थड पौपटयग्म. ७३
लष्यु दावानल विषम विकराल; लष्यां वाचडां, त्रषा कराल.
ऊडिउ पोपट पाणी भणी; सरसो अपत्य बली पंषिणो. ७४
आव्यु पोपट पाणी लेउ; मनि विमासि : 'गया भव बेउ.'
साहस सक्ति एवडो आहि. लष्यु पंषि झंपाव्यु माहि. ७५
करी वगति सरनामा देउ, चोत्रारु चालिउ द्रव्य लेउ.
[तव] हंसाउलि [जुइ] चित्राम, भारह-भरह भेद श्रोराम. ७६

भेटीयो. क. c. लष्यु अ. तिणि चीत्राम लष्यां त्रैलोक्य. ब., तिणि एटला लषीआ भेद. क. d. नगर मांहि ऊपनु नीर°. ब., त्रीलोकनां करंम मांही संजोग क.

७२. a. षांति धरेय. ब., तारि हंसावलीनी मनि षांतज थओ. क. b. मिली पांहि तेडाविउ तेह. ब., मिहिली पासि तेडावीओ. क. c. कूअरी आलेषी देखाडि ठांम. ब. कुअरो जे. क. d. लषे चीतारा भलां चीत्रांम. ब., लष चीतारा माह्य चीत्रांम. क.

७३. a. लषिउ रांमांइणि भारथ सार. ब, लखीस भारथ रांमांण हार. क. b., तोषार. ब., लषु महिल जांहां अस्त्री-आकार. क. c. महाशर शरशा कमल. ब., लषु नगंम नि अगंम. क. d. आंबा तली...यूगल. ब., लषो पोपट आंबानु वंन. क.

७४. a. लषिउ...व्यकराल. ब., लषो दावादल वीषंम वीकराल. क. b. लष्या वाचडा. अ. त्रीषा वीकराल. ब., लषी वादडी त्राका सकाल. क. c. गयो पोपट पांणी भांणि. क. d. शरसां...बल्यां पख्यणी. ब., अपत सरसी वली पंषीणी क.

७५. a. लेय. ब., पछि आवो पोपट पांणी लेहे क. b. व्यमासि...बेय. ब., मंन वीमांसु गआ भव बेहे क. c. शास्त्रप्रमांणि एटली आहि. ब. शास्त्र प्रमांणे एटली आय. क. d. नांषी पांख झंपाविउ मांहि. ब., उडि पंषीभि झंपाधु माअ. क. ७५ नो आंक बेवडो छे, एटले सरवाळे आ खंडनी १०५ने बदले अ १०४ गणे छे.

७६. a. करि वगति, सरनांमू देय. ब., करो वीगत सर नांमी देहे. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीठउं वन तव मन षलभलि, आंबा उपरि दव [जव] बलि.
प्रीउं झंपाव्यु; प्रेम अपार : दाझि पूरव भव-[भर]तार. ७७
राजकुमरि दुषि पीडि आप : 'बहू नर मारचा; लागां पाप.'
त्रसकति (?) साचउं [जाणूं] कानि ? प्रीऊ-साहस न जाणि नानि.७८

राग रामगिरी

[दूहा]

राजकुंअरि हीअडु हणि : पूरव प्रेम-प्रसंग.
आगि दावानल दहि, वलो दुष दाझि अंग. ७९
[देषी] पोपट पंषीआ, नवलनेह नरनाथ;
जिम वनि भूलि हरणली, तिम हूं सामी साथ. पोपट० ८०

---

b. चीतारउ...लेय. ब., चतुर चालो सबलां लेहे. क. c. तव कुअरी जूई चीत्रांम. ब., भाव धरी कुअरी जुवे चीत्रांम. क. d. भारथ भेदे हर सीरांम. क.

७७. a. दीठउ. अ., दीठू. ब. दाजो वंन, आंबो षलभलो क. b. ते आंबा उपर द्रवज बलो. क. c. प्रीऊ प्रीऊ, प्रे०. ब., लाधो पुरव भव भरथार. क. d. पेला...भरथार. ब., पीउडे झंपावु प्रेमे अपार (चरण ऊ० पा० छे.) क.

७८. a. हंसाउलीनइ भ्रम अपार. ब., हंसावली वीसमे पांमी आप. क. b. लागा. अ., लागू. ब, बहु नर मारा ते लागु पाप. क. c. त्रिशक्ति वात जणावी कांनि. ब, मंन सु जांणे कहू कां न. क. d. पीउ शाह नवइ जांणिउ ज्ञांन. ब, पीयु पाषि नव जागि गनांन क. क मां बे चरण वधारे:—

" जो मलि आज मारो नाथ, करीसे नसि वरु साथ. "

ब. मां रागनुं नाम नथी; मात्र 'दूहा' एटलुं सूचवेलुं छे; क मां राग धंनासी राग सांमेरो.

७९. a. ०कूअरी धरणइ ढली. ब., ०री हंसावली. क b. ०प्रसगो. अ, एनि पुरवि प्रेमां प्रसंन. क. c. दही. ब., क्यांहां दावादल दाजीयो क. d. दूष. ब., प्रेमि दुष दि मोरो अंग. क.

८०. a. अ-कमां 'देषी' नथी. ०आरे क. b. नल वारि नलनाथ (?), ब, कहीं मले मारो नाथ. क. c-d बमां नथी. c. आंमि वंनमां भुली हरणली रे. क. d. तंम हू स्वामीनि साथ. क. ब-कमां ध्रुवपद वळतुं नथी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

29639
24-3-2003
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
69/12

किलकलती विन वचरती, बेली वर वीसास,
सधि सामी साहस कोउ : हूं एकलो निरास. पोपट० ८१
भणि 'असाइत' : भव-अंतरि समरि सामणि कंत,
हंसाउली धरतो ढली, प्रोऊ प्रीउ मुषि भणंति; पोपट० ८२

चुपई

तेतलि पाषलि मिहिला मिली; एक चंदन चरचि आकुली;
एक भणि : 'ए अनंग-उपाय;' कामिणि करि वीजणे वाइ. ८३
एक भणि : 'चित्राम विनाणि, जोता लगि मुषि छंडयु प्राण.
जाउ, कामण अवर मन्नि गणु, ए सही चीतारु डाकिणु.' ८४

---

८१. a. कलकलती वलवलती रे. ब., टलवलती जंम वेनता. क. b. मेहेली वली नीसास. ब., वारे वारे सु रे वमांसो. क. c. शुक स्वामी साहश कीउ. ब., मारा स्वांमी सि नथी बोलता रे. क. d. हू एकल भणि. ब., सकलुणीनि पडीयो वरांसो. क.

८२. मी पहेलां कमां १ कडी वधारे:—

" पिर जुयो कोअ पंखीनी रे, मःरि षांति पडीयो रे.
व्रेनि बांणे वेधवा वधाताअि घडीयो रे."

८२. a...अशाईत...ऊतरि. ब., भांणे असाइत भव उतारो. क. b. शमरि समरण कंत ब., कांहांमनी व्रेहे छि कंथ. क. c. धरणि. ब., धरांणी. क. d पीऊ पीऊ प्रेम प्रसंग. ब, पछि छांडे अंत; पोपट पंखीआ रे. क.— ए पछी कमा आचली लखेल छे.

८३. a तेतलइ मइली पाषलि फरी. ब., येक दासी पाषल मली. क b. चंदन शरस कचोला भरी. ब., एक चंदांन चोले आकली. क. c. कोए कहि अ° ब., एक किहि अिनि गओ उपाइ. क. d. एक विजणे घालि वाय. ब, कांहांमांण मोहां न करां जांणो. क.

८४. a. चीत्रांम विनाण ब., एक किहि, चीतारो मांहां गांणो. क. b. जोतां लगइ चीत छांडिउ ठांम, ब., जोतांमां ए छि डाकयणो क. c. जां मन अवर निर्गुणउ. ब., कांमांण मोहांन ए नवी गांणो. क. d. ए चीतारउ छि डाकिणउ ब, एहे चीतारो छि डाकांणो. क.

पुस्तकालय
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
गुरुकुल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक भणिइ : 'कांई रे रचीइ दाउ:' एक भणि : 'जणावु राइ.'
एक भणि : 'मोकलु फरफरी, जिम चीत्तारु आणि धरी.' ८५
गई चउटि स्त्री उद्यम कीउ; दीठु नर ते बाहि लीउ.
ततषिणि ताणी लोउ आवासि. भणि दासि : 'पडीउं अम पासि. ८६
कई धरातलि घालिउ षाड; कइ शूली सिर वीधु हाड.
राजकुमरि कि साजी करि, कइ चित्रारु निसि मरि.' ८७
भणि चीत्तारु : "'बोल्युं मानि, जिम दुं मंत्र कुंअरि-कांनि."
'शुक अवतरीउ,' कहि संकेत, वलीउं हंसाउलि ततषणि चेत. ८८
वारी सषी मंदिर मोकली; पूछि वात कुंअरि एकली :
"कहि नि बंधव, जेणि कीउ, किहां अवतरीउ ते पंषीउ ?" ८९

---

८५. a. एक भणि कोए शाचु उपाय. ब, कमां लीटीओ ऊ० पा०. एक भांणे ए रचीओ दाए. क. b. राय. ब. एक भाणे साभलावो राए. क. c. जाउ चुहुटि फरी ब., एक किहि मोकलीओ परि. क. d. ए चीतारु आंणउ धरी. ब., जंम चीतारो नीसि मरि. क.

८६. a....°टइ...करी. ब., जायो रे दासीओ वेगि करी. क. b. दीठउ...धरी. ब., आंणो पुरष वसिकि करी. क c. ते तेडी आंणिउ आवासि. ब., ते तेडी आंणो अवास. क. d. पडिउ पाश ईम. बोलि दासि ब., आचो तेडी पुछु पास. क.

८७. a. काई अ., कइ धरती कइ घा° ब, एक किहि अिनि घातो षाड. क. b. कइ सूली, कि विधइ. ब., किहि सुलु अिनां वेधो हाड. क. c. °कुअरि कि शाजी ब., °कुअरीनि. क. d. कि चीतारा नसि. ब., नीकर चीतारो नीसि. क.

८८ a. बोल्यु. अ.,...चीतारउ बोल म...ब., भांणे चोतारो बोल जम नांम.क. b. दु. अ., दिउ. ब., कूअरी नि. ब., जंम जंत्र डसो कुअरीनि कांन. क. c...°तार, कहिउ...ब., सुडानो कहो. क. d. ततष्यण वलिउ हंशाउली–चेत. ब., तारि कुअरीनु वलीयु चेत. क.

८९. a. मइली शवि मंदीर...ब, दासी सरवे वार. क. b पूछइ कूअरि व्यरह –आकुली. ब., पुछि कुमार वात...क. c. किहि बांधव मुझ शाहस कीउ. ब., माहरा बंधव सासरवासो कीओ. ब., d. किहा. अ. °रिउ ते पीऊ प°. ब., क्यांहां अवतरो पोपट पंषीओ. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माइ शक्ति-वर न्यान प्रमाणि; हुं जाणूं पाटण पहिठाण.
सालिवाहन यादवनु जायु, अवतरीउ नरवाहन राउ. ९०
राजऋद्धि नव नधि गंभीर, घरि उलगि [छि] बावन वीर.
त्रणसि साठि अंतेउरी तास, जस्यु कंदर्प लीलविलास." ९१
तस प्रति वात हंसाउली भणो: "करि-न चाड बंधव, अमतणी?
देउं चीत्रारा, बहुत पसाय; केते दिणि तूं आणसि राय?" ९२
"दूरि, माइ, पाटण पहिठाण. कटक न आवि ईहां जाणि.
ऊठू छि दिगविजइ राइ; मास दिवस आणस्युं ईणि ठाइ. ९३
मास-दिवस मनि निस्यु धरु; सयंवरतणी सजाई करु."
कुयरि तणा चरण प्रणमेवि, चाल्यु चित्रक संबल लेवि. ९४
गयु माली-घरि; रा वीनव्यु: "मास-दिवस लगन परठव्यु.
तां लगि जोउ प्रछना रही. सयंवर कुंअरि करावि सही." ९५

---

९०. c. माय....ज्ञांन...व., माहासकतनि गनांन सुजांण. क. b. पिहिठांण. ब., अवतरीओ पाटांण प्रेठांण. क. c. शालि°...जाय. ब..सालीवाहंन जादवनो राय क. d. राय. ब., सुडो अवतरो नरवाहंन राअ. क.

९१. a...रधि. ब.राजरीधनि नवनीध घंभीर.क.. b. घर लगि ते लावे नीर.क. c. साठां. ब., त्रांणसि साठ अतीयोरी अवास. क. d. जांणे...व्यलास. ब., जंम किहि जमली लीलवीलास. क.

९२. a.हंसाउली बचन ते सूणी. ब., हंसावली एवां वचंन सुणी. क. b. करइ अह्म.. ब., करो सार बंधव अंम...क. c. आपिउ चीतारा बहूय पशाय. ब., देयु चीतारा वहू पोसाअ. क. d. केते दीहे लावीस ते राय. ब., केटले दाडि लावे राअ. क.

९३. a. दूरि छि पाटण पिहिठांण. ब. हू रहू पाटांण प्रठांण. क. b ईहा. अ. इहां. ब. ना आवे, ते तु जांण. क. c. इ रिहू छि ते यादवराय ब.,आये आवेसि तारो नाव. क. d. देवस आंणेस इणि ठाय. ब., मास दीवस लावु आंणे ठाय. क.

९४. a. माश देवस मनि नसि धरइ. ब., ते सही लावु नीसि वरो. क. b.सिवरतणी शजाई करि. ब., हांमे सवरा तांणी सगाइ करो.क. c.कूअरी तण चर्ण प्रणमेय. ब., कुअरी तांणो चरांण पांमीओ. क. d. चीतारउ चालिउ धन लेय. ब., वली चीतारो पोसाएज लीयो. क.

९५. a. राय विनव्यु. ब., गओ माली घिर, राए वेनवो. क. b. मास देवस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लछमछ लागी हंसाउली; कंद्रर्प दमि विरहव्याकुली.
मात्रा सरिसु मंत्र परिठविउ, तीणि कनकभ्रम राइ वीनविउ. ९६

राजा ते मंत्र मनि धरि; सयंवर तणी सजाई करि;
नुहत्रराव्या चिहूं दसि चक्रवि; मास दिवस माहि आव्या सवि. ९७
मिल्या लोक जिम जोवा यात्र; पंच शबद नतु वाजि पात्र.
सतावीस दिवस गया जसि, कुंअरि करि विमासण तसि: ९८
'कपटी चित्रक, किहां ते राउ? अवर न वरसूं. होसि सहू आल.'
षिण वाहिरि, षिण भीतरि पाट; चडो अटाले जोइ वाट. ९९

लज्ञ पठव्यु. ब., मास दीवस लगि आंहींज रोहो. क. c. तेतलि कूअरि शजाई करी. ब., एटले जुयो बेठा रही. क. b. सिवरा कुअरी वरसि सही ब., सवरा कुअरीए कीधो सही. क.

९६. a. लथवथ. ब., लछमछि लाज हंसावली. क. b.…दमनी व्यरह…ब., कंद्रप संत्र कांम आकुली. क. c राय कनकब्रह्म विनव्यु. ब., माता सरसो मंत्र पाठवो. क. d. मंदीररचना सबली ठवु. ब., तिणीये कंनकभ्रंमराअ आठवो. क.

९७. a. मनइ. ब.; राजाय मंत्रज मंन धरी. क. b शजाइ. ब., सीवरा तणी सगाइ करी. क. c. नूतराव्या चिहूदसिना रा शवि ब., क. मां c–d नथी. d. मास देवस जोइ अनुभवे. ब. आ पछी क मां:—

दंन गया बहू वचमां वही. वात दीवस त्रांणमां रही.
एक रथ एक घोडे चडि. एक आवता घिहिमर घडि.
अंन तांणी अवारज किहि. मला लोक मंडग ब्रेब्रेहि.

९८. a. मल्या लोक जोवा जिम जात्र. ब., मला लोक जंम जोवा जात्र. क. b. नीत नीत उछवना नाचि पात्र. ब, पंच सबंद नांनावीध पात्र. क. c.…देवस…जिसि ब., गआ वचमांहि क. d. कुअरी करइ व्यमाशण तसि. ब., कुअरी मंन वीमासंण थही. क.

९९. a. कपटी चीतारो किहिवाय. क. आ कडी बमां नथी. b. अवर लोक हसारथ थाय. क. c. षांणु बार षांणु भीतर षडी. क. d. जुयि वाट बाइ मालीये चडी. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहु दिन आगम अवसर सुणी, लि चीत्रारु वधामणीः
[“जाणे कुंअर, पधारिउ रायः कुंअरी, दीउ पंचांग पशाय”.] १००
“सुणि चीतारा, वात विराम, नवि उलखूं पूरव-भव-सामि.
तूं सयंवरावेला सामहे, लग्नवेला वर जमलु रहे.” १०१

लगनतणि दिन उछव अपार; नरनारी कीधां सणगार.
हंसाउली यादव-वर वरिउ, राइ महोछव विवाह करिउ. १०२
वर पारंपर लाधु वहू; कनकभ्रम राइ सुंपिउं सहू.
सरसु वउलाविउ राणोराणि; पुहुचाडचा पाटण पहिठाणि. १०३

परणी आव्यु यादव-राइ; ततषिण वलिउ नीसाणे घाउ.
घरि घरि उछव सविकहितणि; राज करि थानिकि आपणि. १०४

---

१००. a. विहूदिन आगमि मिहितु सूणी. ब., बहू दंने गआ ते मि सवणे सुणी. क. b. चीतारा. ब., लाहावो तारी वधांमांणी. क. c.–d. अमां नथी, c-d, जांणु कुअरीये पधारा राअ, कीधो उपाय तेहे बहू पोसाय. क.

१०१. a. सूणि...विरामि. ब., सुण वीरांम. क. b. उलषू. अ. नन उलषू हूं माहारु स्वांमि ब., हू नीही ओलषु मारो स्वांम. क. c. तू. अ., पूरवभव सयंवर साहमे, ब., सीवरा सरसो सांमो रिहि. क. d. ज्यमलु. ब., लगंनवेला ए जंमांणो विहि. क.

१०२ a. तणइ. ब., तांहां कुअरीये कीधो संणागार. क. b. कीधा शणगार. ब., धरि पुरस ते प्रेम अपार. क. c. हंशाउलीइ. ब., हंसावली देवी वर वलो. क. d. वीहोवामहोछव. ब., राज मोहोछि वीवा करो क.

१०३. a. पारंगत...वहू. ब., वर प्रांणतां लागी वेर. क. b. °राय हरषिउ शहू. ब., °राअ आपी सेन. क. c. शरसी वली वारांगना जांणि. ब., सरसा वलीआ रांणोरांन. क. d. पयठांण. ब., पोहोंचाडो पाटांण प्रेठांण. क.

१०४. a. आव्या यादवराय. ब., प्रांणी आवो जादवनो राय. क. b. ततक्षण वल्या नीसांणे घाय. ब., निसांने बहू वलीआ घाय. क. c शवि किहितणइ ब., धिरघिर योछव मंगल घांणां. क. d. राइकुअरि स्थांनकि आपणइ ब., करि राजा थांनक यापांणां. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिह्न षंडे बह्न बुद्धि जूजुई, एतलि प्रथम* समापति हुइ.
सरव जनमन "असाईत" लहि; कथा षण-अंतरि कवि कहि. १०५

---

१०५. a 'डे छइ मति जूजूई. ब., जूजइ. अ. चार षंडनी बुध जुजवी. क. b. बि. अ., एटलि ..°पति हूई. ब.,एटले कथा सांमापत हवी. क. c. सर्व जनम अशा°. ब., सरव जंनम असाइत लेहे. क. d. कहि कवी कथा ष्यणंतर कहि. ब., कथा एक षंणु एकमां किहि. क. सरवाळोः अ. १०४ (?१०५), ब. १०५, क ११६ $\frac{1}{2}$.

अना १ला खंडनी पुष्पिका—

इति हंसाउलीरास* बि षंड संपूर्णः ॥ छ ॥ छ ॥

ब. नी पुष्पिकाः—

अति हंसाउली प्रथम षंड संपूर्ण ॥ श्री

क. नी पुष्पिकाः—

षड अंक ॥ सांमापत छि ॥ हंसावलीनी षात ॥

*अ प्रतमां अहीं बीजो खंड पूरो थयानुं लखे छे, जो के आ पहेलो खंड ज छे. लहियाए मतिसुंदरनी 'हंसाउली पूर्वभव कथा'ने पहेलो खंड गणी आने बीजो खंड मानी पाठ सुधारी लीधो छे ए स्पष्ट छे. —संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय खंड

[चुपई]

रूडो रूपि सती सहू गणि; चालि चीति नारि नरतणि.
उरि आधान हंसाउलि हुउ; जन्मु पुत्र तणु जिड्डउ. १
दीधा कुयर वारायत-हाथि; [लेई खडग नि चाल्या साथि.]
गयु जिहां जाणि वृष-वीचाल, जिहि तलि मेहल्यु बोलि बाल. २
राइ वचन दासो प्रति कहियां; मेहलि कुयर वृष्य-उलवि रहियां.
बोलाबोल जोउं शरीर : "लक्षण बत्रीसइ अम वीर." ३

---

१ ली पहेलां कमां:—

" हांवि हंसवछनो कथा सही "

" गवरीकुआर मत दो मागांणी, तम पोसाय सीवसीव यि भांणी.
कोअल परबत सीतीसा वांणी, श्रीहिगलाज आद जोगांणी."

१. a. रूपि रूडी शति शहू भणि. ब., रूपे रूडी सती साध्वी. क. b. चितइ ते. ब., चालो राजां परणी परवरी. क. c. ऊरि. ब., अरधंग हंसावली न हवु. क. d. पुत्रतणू जनम जंड्डू उ. ब., पुत्र तांणु जणु जिडवु. क.

२. a. कुअर वाराइत. ब., दीधा कुअर ते धात्रनि हाथि. क. b. अमां रही गइ छे., लेइ कुअर चाली ते साथ. क. c.बइ त्रध्य-विचालि.ब , गइ जांहां पडे वचीत्र वीसाल. क. d. जे थड मेहेल्यां बो.° ब., जे थड मेहेलेतां बो.°क.

३. a. राय...कहइ. ब., तव राजा दासीनि किहि. क. b. मेहेलो बालक उलवि रहि. ब., मेहेली बाल तु अलगी रिहि. क. c. बोल्यां बालक कहिउ शरीर. ब., बेंहेउ बाल जुजवां सरीर. क. d. लष्यण बत्रीश नइ बावनवीर. ब., लषांण बत्रीस नि बावंन वीर. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेई कूयर राजा आवीउ; मंत्र परोहित सरसु कोउ.
नाम नरोप्यां, कीयां शुभकाज; लहुडु हंस, वडु वछराज. ४
पुनरपि राउ परोहित कहिः "वात एक मुझ दुसह हीइ.
बावनवीर बहू सधि लहइ, अधिकु, ऋद्य नहीं सांसहि." ५
राजा बुद्धि विमासी भली; बेउ धात्रि सरसी मोकली.
कुंयर अवर देसइ आठव्या; परोहित साथि पुत्र पाठव्या. ६
देइ शंबल सीषामण सोइः "रषे जणावु बीजु कोइ!"
थानक अवर नगर अणुसरे; पुत्र पालीनि मोटा करे. ७

ग्या परदेसि पंथ वण वही, नगर नरोपम देषी रही.
कीधी वरधि वरस पांचमि; परोहित शास्त्र भणाव्या सवे. ८
सकल शास्त्रनु जाणिउ मर्म; आयुध आपी कराव्या शर्म.
मृगया बे बांधव सांचरि; वाघ सिंघ सूकर संहरइ. ९

---

४. a. कूअर. ब., लेइ कुअर राजा आवीया. क. b. मंत्री परोहीत बोलावीउं. ब., मंत्री प्रोहोति सरसां कीआ. क. c. नांम यूगति सू कीधू सूभ काज. ब., कमां c–d नथी, ५ a–b. नथी. d. लुडउ हंश. ब.

५. a. राय परोहीत. ब. b. वात रषे को वीरज लहि. ब. c. °र कद–सूधि लहि. ब., °र तो जोहो सुद लेहि. क. d. आदि अधिकु ते नवि, ब. तव षोलीआमां जइनि किहि. क.

६. a. ब. मां a–b अने c–d ऊ० पा० छे०, यहवी बुधि व्यमासी. ब. राजा बुध वीमांसी भली क. b. वइ...शाथि. ब., व धावा. क. c. राय अवर देश आठवि. ब., कुअर अवर वेसि पाठवो. क. d. परोहीत सर साथि पाठवइ. ब. मंत्रसर वि–सरसो आठवो. क.

७. a. संबल...सोय ब., देइ सीषांमण सबली नोयो. क. b. कोय. ब., रेषे नां जांणे बीजु कोअ. क. c. गाम नगर रुडू अणूशरे. ब., थांनक अवर आंने सिवरो (?). क. d. पाली नइ. ब., °नि वेहे पोडा करो. क.

८. a. गया परदेस पथ्य घण वह्या. ब., गआ प्रदेस तांहां किहिनि किहि. क. b...., निरुपम ..रह्या. ब.,...आंनोपंम देषी रिहि. क. c. कीधी व्रधि वरश पांचमइ. ब., कीधो सुध ते त्रस पंचांमि. क. d. परोहीत शास्त्र भणावइ शवि. ब., प्रोहोत सुध मंत्र भांणांवसि. क.

९. a. शकल...जाणइ मरम. ब., °ना जांणं सरांम. क. b. आयूध...करा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईणि परि दिवस बहूत ज गया; [पनर वरसना पोढा थया.]
पाछउ वल्यउ परोहित पंथ बहू, गुण सधि कूंयरनु कहू. १०
सुणो वात मनि हरष्यिउ राउ; जनमोतरी जोवरावि ताइ.
पनर वरसना कुंयर ज थया, ते लेवा चाल्या संडिया. ११
घडीया जोइणि षेडि षेदि, पुत्र पधारिया वडि विछेदि.
नगर-निवेसि कुयर आवीया; रमता दीठा दीकोलोया. १२
वहू पषि दोट मल्या सवि साथि; दडु दोटावि गेडी हाथि.
देषी कुयर विमासि बेउ : "आपणपि छि अपूरव पय." १३
एक नरि वीनव्यु नयर-नरिंद : "आव्या कुंयर, भयु आणंद."
भलि महूरति भेटिउ ताउ; कर जोडो बे लागा पाय. १४

वइ...ब., छत्रीस आउदना जांणे मरांम. क. c–d पहेलां ब. मांः—
" छत्रीसि मंडायूध जालवइ, मधूरउ कंठि राग आलवइ. "

c. सीह सांहांमा बांधव संचरइ. ब., म्रघ रांमवा वंन सांचरि. क. d. वाघ संघ सूर्य संग्रहि. ब., सुअर फेरवि. क.

१०. a. इणी परि देवश केतला, ब., यिम करतां बहू दीवस. क. b अमां रही गयेल छे., प्रंद्र त्रसना पोहोडा थआ. क. c....वलिउ परोहीत पंथि वहिउ. ब., देग गया प्रदेस रहा. क. d. गुण-वसेष राजानइ कहिउ. ब., गुण सगला कुअरना कहा. क.

११. a. सूणी...हरषिउ राय. ब., मंन हरषो राय. क. b. °वइ माय. ब., जंनमोत्री जोवरावो ठाय. क. c. सूलष्यण बहूं दीकोलीआ. ब., माहारा पंद्र त्रसना पोहोडा थया. क. d. संढी आ. ब., तेहे लेवा आंणो सांडीया. क.

१२. a. घडीआ जोअण छेडि छेद. ब. घडीया जोवांण उतावला षेड. क. b. पधरावु वडि विछेद. ब., पधारो आज रूडा मेहे. क. c. °नीवाश कु-[अर] आवीआ. ब,. नग्र...कुअर...क. d. °लीआ. ब., मातायि नां दीठा दीकोरीया. क.

१३. a. वहू पछि मलीआ सर्व ते शाथ. ब., टोल मलि पेषि सरवे साथ. क. b....डोटाव्यु जिहू हाथि. ब., दडो डोटवे गेडी हाथ. क. c. देषी कुअर व्यमांसि हइ. ब. वीमासि तेहे. क. d. आपण अपूरव ए कुण थैइइ. व., आपांणे छि अपुरवे येहे. क.

१४. a. एकइ नरि विनव्यु नरिंद. ब., एकनि हरवीनी दीजि डंड. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रा फल-फूल कुंअर प्रति दीइ; बेउ उछंगि आलंगण दीइ.
रूपि लोक आणंद्या घणा : 'किहां वाध्या कुंअर रा तणा ?' १५

राजा कुंअर कहि शुभ काज : 'आपण भेट-महूरति आज.'
दि नरनाथ सीषामण घणी : 'भेटि कालि जणणि तमतणी.' १६

कुंअर आरोग्या; बहु मंत्र कीउ. रमतनि राउसूं जीडू लीउ.
तव बोल्याव्या बावनवीर : 'रमस्युं दडि गोदावरि-तोर.' १७
सवा कोडिनु जोडू हाथि; गेडी लेवि मिल्या सवि साथ.
हंस-वछ बेउ एक ज भीरु; एक गमा थ्या बावनवीर. १८

---

b. आव्यु अ.,...कुअर, हूआ आंणद. ब., आवा कुअर नि थओ आनंद. क. c. भलि महूर्त्ति भेटया राय. ब., भले मुरत भेटा राय. क. d. बि. ब., कर जोडी. क.

१५. a. राय-फल-फूल कुअर लि. ब., राजा एक फल पुत्रनि दीओ. क. b. बि उछंगि अलिंघन दिइ. ब. वहू...अलंघन कीयो. क. क मां १५ c-d, १६ a-b, १५ c-d ए क्रमे लीटीओ छे. c. रूप लोक आनंद वहू घणां. क d. किहा. अ., कुअर राय. ब., कावि कुअर ते राजा तांणा. क.

१६. a. राज कुअरनि कहि सूभ. ब., °रनि किहि सुभ करो. क. b. आपू भेटश मूहूर्त्त राज. ब., आसंन भेटी मुरत वरो. क. c. दिनदिन दि सीषां°, ब., दिहि नरनार सीषांमांण घांणी. क. d. भेटउ कालि जननी तूम तणी. ब., भेटो कुयर जांनुनी तमतांणी. क.

१७. a. कुअर आरोग्या, मंत्र परठीउ.. ब, कुअर आरोगज मंत्रज दीधो. क. b. रमतु राउस जीडु अ. स्वामी रत्नमइ जिडू दीउ. ब., रांमवानि दडुलो मागीओ. क. c. बावन्न. अ., बोलाव्या. ब., तव बोला सरवे वा°. क. d. रमसू जै गोदावरी...ब. जइ रांमसु घोधावरी. क.

१८. a. शवा कोडिनु जिडू हाथ. सवा करोडनो जिडु हाथ. क. b. जिडू लेइ चाला सर्व साथ. ब., गेडी लेइ मलो सगलो साथ. क. c. हंशवछ विहू एक ज भीर, ब., विहि एकज तीर. क. d. एक गमां थया. ब., बावन्न: अ., एकगांमां मला. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रंगि रमि गोदावरितीर; वार बि हारया बावनवीर.
कुंअर नाना, लघुवि घणूं; नीर ऊतारिउं बावनतणूं. १९
भणि वीर: "रमस्युं एक दाण; हारु जीतउ हवि प्रमाण."
करि मंत्र बहु बल पठवे: "हवि साचि मनि रमयो सवे." २०
तेह बावन बल-बुद्धि अपार, धुरि सुहूकनि शक्तिकुमार.
मेघनाद, रूयडु, लहू, लषु, नाडीत्रोड, सेवालउ, भषु, २१
कालसेन काल अंगमि; बापूं लषु दल घेहू रमि;
संषचूड नि सूली-मोड, भीम भयंकर, संकल-त्रोड; २२
विष-पापरु, विष-सम-शरीर, तलपाहडु, वड वनलो वीर;
नाडीजंगु, तिपुर, बाबरु, लोहताष, लवुलोह षरु; २३

---

१९. a. गोदावरी. ब., रंग रांमि घोहोधावरी. क. b. वार विच्यार हराव्या. ब., बावन्न. अ., वार वेहे हरावा वीर. क. c. नांहांना कुअर लघूवइ घणू ब., मांमा नांना छ पण रांमांसु घांणु. क. d....उ शविकिहि ब.,...उतारु तंम वीरांतांणु. क.

२०. a. रमसू एक दांण, ब., भांणे वीर, रांमसु नरवांण. क. b. हारया जीतया तु परमाण. ब., हारु जीतु हमे प्रमाण. क. c. किहि बुध्य बलज सवे. ब., करीय मंत्र बहू बुध पाठवे. क. d. सर्व मनि रमया सवे. ब., साचि मंनि रांमजो सरवे. क.

२१. a. ते...बुधि...ब., बावनवीर बलीया अ°. क. b. सूरपणि रमि श°. ब., धरे सरांम मांही सक्तकुमार. क. c. रूडिलि लव्यु. ब., मेघनाथ दुदडीओ दडे. क. d. °लज भष्यु. ब., °ड सांकलीयो षडे क.

२२. a. कालमेघ कालपंजर गमि. ब., °सेन कालो आंगामे. क. b. बावनवीर तणू दल रमि. ब., बापडीओ धुधढीओ रांमे. क. c. नइ. ब., संघतोड नि मु°. क. d..भमइ ..भैरव जोड. ब., भेम भेकर सांकलमोड. क.

२३. मी पहेलां ब मांः—

व्यषधर व्यषमासन वछीउ, चाचरीउ चुमष चटकीउ,
कनकमेर कालमुष दादरु, क्रीष्णनील पीत कावरु."

२३मी a—b कमां नथी. a. व्यषम पाषर नि व्यषम शरीर. क., b. त्यल पाहउ नइ बावनवीर. ब. c. तालजंघ त्रीपुर बाबरु. ब., नाडीजोतर प्रबंब रहो. क. d. लोहीताष्य हडवच लोहो षरु. ब., लोहो हूतासंन छि मांही षरो. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलयंत्र, जडीउ, जांगडु, गण गंभीर वीर लागडु;
कोलाहल नि अकल अभंग, भूतडीउ, भैरव भव-भंगु; २४
अगनिझालि, अगनि, आगीउ; धर धमधमइ, रमि रगतीउ.
सवि थाका गोदावरि-तीर; कुंयर जमलि नवि पुहुचि वीर २५

वस्तु

वीर थाका, वीर थाका, थया निस्त्रास;
भड भागया सांसल्या; एह दाह हवि कवण देसि ?
प्रजा माहि पाणी ऊतरिउं ए, एह वात राजा सुणेसि.
बहु बावन हलूआ कीया; किहां दूषण जाइ ?
वीर सवे समरे सकि : "अम्हे हराव्या, माइ." २६

---

२४. a. जलजांत्रम मुजहु जांगडु. **ब.**, जुडजंत्र मांही छि जांगडो. **क.** b. गुण गंभीर **वार वांगडु. ब , माही वोर** वांकडो. **क.** c. कालपीउ ते **ब.**, कलांहल कैहे यांनंद, **क.** d. भैरव निसंक. **ब.**, भुतडीओ भेहेर-वीयो चंग. **क.**

२५. a. °ल तपति आ°. **ब.**, आग झाल मांही छि आगीयो. **क.** b. बावन-वीर रमइ रग°. **ब.**, धरि सरंम मांही रगतीयो. **क.** c. गोदावरी. **ब.**. d. कुअर...पुहुचइ ..**ब.**, c-d बदल **कमां** :—

" माहाढंग नि प्रबतडोल. झाडसुक मांहो छि बल-मोड.
सल्या उपाडे वावंन-गजी. तेहेसु कोअ नां पोचि हजी."

ब, २५ मी पछी " **नगरलोक ते सर्वे म°** " आपी बे पानां माटे एटले के चालु पाठे ४४मी कडी सुधी तूटे छे; जोके ए प्रतिमां त्यां आंक ६२ नो छे; '**नगरलोक ते सर्वे**' ए कडी पर ते प्रतमां ३२नो आंक छे, एटले ३० कडी खूटे छे. **अ** प्रति प्रमाणे जोतां १० कडी **ब**मां वधारे जणाय छे. आ वधारानी कडी कई ते पानां तूटेलां होवाथी जाणी शकाय तेम नथी. आ २५ मी कडी **वस्तु छन्दनी बमां** पण नथी के **क**मां पण नथी

२६. e. ऊतरिउ. **अ.** h. किहा. **अ.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चउपई

हंस दोट जव दोधी दडि, तेणि नादि धरा धडहडि.
शक्ति-प्रभावि अद्रस हूउ; तव गढ भीतरि जीडू गयु. २७
जीडू चाहि चिहू दसि फरि; बावनवीर विमासण करि :
"सवा कोडिनु दडु जाइ, ए ऊतर कुण देसि राइ?" २८
एक भणि : "नवि जोवा आहि; जीडू गयु रा-लगुन माहि."
कुंयर भणि : "सवि जाउ तमे; जीडू लेई आवेसूं अम्हे." २९
भणइ हंस : "जोडू चाहीइ." वछराज सीषामण दीइ :
"त्रिणिसि साठि आपणि मात; ऊभु रही रषे करि वात!" ३०

कुंअर [गयु] रा-लगुन मझारि; ऊभु रहिउ धवलहर बाहरि.
तव दासी राणी प्रति कहइ : "पुरुष एक छि अंगणि रहिउ." ३१
राणी रोसि चडी तेणि ठामि : "नरवाहन माहरु स्वामि.
अवर पुरुष मुझ बंधव-वीर." "भणि : 'जा कि ऊतारिसि नीर." ३२
तउ वली वारायत वीनवि : "पुरुष-परीष्या जाणुं सवे.
तन सरव अंग सरीषु सोइ, कि बंधव कि जोटउ होइ." ३३

---

२७. "हंस डाटो दीआ जब दडे, तेहेनी नरघोकि धरती धडहडे.
सक्त प्रमांण अद्रज थाये. तव घढ भीत्र जिहिडु जाए." **क.**
अमां **जीडू** नरजातिमां ज होवा छतां प्रायः तेमांनो ऊं सानुनासिक मळे छे.

२८. "जिहिडु तो चोहोदसि फरे. बावंनवीर वीमांसांण करे.
सवा क्रोडनो जिडु जाय, ए उत्र कुण देसि राअ." **क.**

२९. "एक किहि, मांहां जोसो आंही. जिडु गओ अतीयोरी मांही.
कुअर किहि, सीध जाओ तांमो. जिडु लेइ यावु छु आंमो." **क.**

३०. "भाणे हंस, जिडु जोये. वछराजा सीषांमण देये,
त्राणसि नि साठ छि आपांणी मात. उभा रही मांहां क्सो वात." **क.**
– c. माइ. अ.

३१. "गओ कुअर अतीओरी मोझार. उभो रहो ते झलहलनि वार.
तव रांणी दासीनि किहिः प्रपुरष कुण आंगांणे रिहि." **क.**

३२. राणी रोस चढो तेनी वार, नरवाहंनराअ मारो नाथ.
अवर पुरष माहारि भाइ नि वीर. तु जारे वाल उत्रसि नीर." **क.**

३३. " वलती दासी एम वेनवे. पुरष सरषो जांणु बाइ सरवे.
तंम अंग सरीषो सोय. किहि बंधव किहि वेटो होअ. **क.** b. जाणु. अ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा

वेद-पुराणि प्रसीधुं रि जे बोलि सवि शास्त्र;
भणइ "असाईत" : दुलहा माइ, बाप, गुरु, पुत्र. ३४

चउपई

पाइ लागी पुत्र करि जुहार. हरषि आसु पडि तेणि वार :
" वेला लगन नवि जोउं, बेट, काइं कमूरति कीधी भेटि ? ३५
जेहिनि देहि ऊपना देहि, कस्यइ कमूरति आव्या तेह ?"
"दरसणि जणणितिणि नितइ, अडसठि-तीरथ अम थया, माइ." ३६
मोकलावी कुयर सांचरि; करि जुहार; धवलहरि फरि.
मंत्रेईं मनि मानि माइ; पूछि जीइ, चाल्यु जाइ. ३७

दड न पाग्यु; पाछउ वलिउ; एक मंदिरि कलहट सांभल्यउ :
वाजित्र विविध, उछव सि साथ; कनि वाराइत पूछि वात. ३८
भणइ स्त्री : "मान राइतणुं; नितु नितु त्रिविध वार पेषणूं."
लाधु [तव] लीलावि-विचार; कुंअर करेवा लागु जउहार. ३९

३४मी पहेला क मां:—" आगि कुयर सुणाआवीया. तेहे बोल मारा साचा थआ.
उठी कुअरनु नीरषंण करि. बार सेने थांन झरहरे."

३४ दूहाने वदले कमां चोपाइ ज छे:—
" वेद परमांणे स्वांमीताअ. धरंम बोलु ते सात्र किवाअ.
भांणे असाइत, दोहेली माअ. तिहिनि तेजि नव रेहेवाय." a. प्रसीधु. अ.

३५. " पायि लागीनि पुत्र करौ झवार. आंषे आंसु पडां तेणीवार.
जांहां लगिनां जोयां पेट, तेहे आज मायेने कीधां हेत."

३६. " जिहिनि ओदर उपना वेहे. आज मातानि भेटा तेहे.
दरसन दीटां जनुनीतांणां, अडसठ तीरथ कीधां घांणां." क.

३७. a. कुयरि. अ., a-d......संचरि. करि झवार घेर घेर फरि.
मंत्री मात अनि वली माय. पूछि जिडु नि चालो जाअ." क.

३८. " जिडु नि पांमो, पाछो वलो. कलाहल सवणे सांभलो.
वाजंत्र-सबद नि वली नाद. रांणीये आसीस नव पुछी काज." क.

३९. " भांणे अस्त्री, रुप राचा तांणु. न गणु बांमण नि षांपांणु.
सोवंनरेषाअि कीधो संणगार. कुअर करवा आवसि झवार." क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयु रा-अंगणि राजकुंआर; आगलि ऊभी करि सणिगार.
कहि कवि : कामिनि-उपम तेह, नारो नवयौवन नवनेह. ४०

लीलावि रूपि रूअडी; मस्तकि मुकुट मनोहर जडी.
जडया जडाव, सुंदर शिषा; नाग निगोदर अंगि विहिरषा. ४१
वाट साट सरि वरि राषडी, कर विसहर, मस्तकि मणिजडी;
काजलरेह नयण नरमरि ४२
कीउ कुंकुम कोदंड प्रमाण; अधचंद्र सरि संध्यु वाण.
भूगण-गति गाढा कसकसि; सरपति वेडु; कोकी हसि. ४३
नेउर-नादि हंस गमगमि; तन उंतंग, नेत्र जिम नमि.
जसी अशोक-काब कोमलि, दीजि गांठो देहर जिम वलि. ४४
सपतलु चोरु कुंचको कसि; अधुररंग रसु-डसणे डसि.
सोहलंकि किसोदर झोण; पूठि हाउरि हीसि वोणि. ४५
सिरि सींदूर सोवर्ण सिंगार; करि कोमल कमल-आकारि.
हावभाव प्रेमि परठवि, मानव-अही-अमर भोलवि. ४६

---

४० " गयो आंगांणे राजकुमार. आगल ऊभी करी सणगार.
किहि कवीता कांमनी उपमा एहे, नारी नवजोबांना छि देहे. " क.

४१. " सोवंनरेषा रूपे रूडी. मस्तक मांनोहर सोये राषडी.
जडाव जडाव सिधुर सबा. कर मनोहर सोअि बेरषा. " क.
c. जडया विरागर शिषा (?) अ.

४२ मी कडी कमां नथी.

४३. " कंकम केसर कोट प्रमांण. अधुरचंद्र सर सांधु वांण.
भोरंग वेणी मांहां फसमसि सुरपत विणी वेधां हसी. " क.

४४. " निणवांण सुण गुण-ग्राम, सुणतां नेत्र हसि जंम ठांम. " क.
(कमां उत्तरार्ध नथी.)

४५. ' पिरांण चीर, कंचुवो कसि. अधुर-रंग डंसाणसु डसि.
सीहीलंकी अनोपंम पुठ. राजकुअरी गुण चोसठरूप. " क.

४६. " सर सिधुर सोए सांणगर. कंठ एकावलनो हार.
हावभाव पेमां पाठवे. मांनव केरु मंन भोलवे. " क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटिमेषला कंदर्प्प-अवतार, जस्यु इंद्र अश्वनीकुमार.
वस्यु विभ्रम स्त्रीमंडप हेठि; ऊभी रही; न षंचि द्रेठि. ४७

चाली आव्यु राजकुंयार, माता भणी नि कीधु जुहार.
सगपण लजा लोपी हीइ, लीलावती आसीस नवि दीइ. ४८
कसन त्रटकि; तन बल करि, नयण मयण मदलोचन तरि.
वंछि विरहणि भोगविलास; चलीउं चीत; मेहली नीसास. ४९
कुंअर भणिः "कुण कारण रीस ? माइ, न दीधी अम आसीस !
छोरू होइ कछोरू कोइ, माइ-बाप सांहसेवु सोइ." ५०
भणि हंस : "हूं साचुं कहुं; राज-मान मुषि विगति नवि लहुं.
मइ दोटाविउ जीह्न गयु; हूं चाहवा अहां आवीउ." ५१

---

४७ मी पहेलां ब., "पूतली लषो चीत्रांमइ" एम पूर्वनी अमां न होय तेवी कडीनुं चोथुं चरण आपे छे. कमां ए पदवाळी कडी ४७ मी पहेलां वधारानी छेः-" दीठो कंठमेषला कंद्रपनीधांन, कंदली सरषा तिना जंग. हंस, रही तिणे ठांम, करी पुतली जम चित्रांम."

४७. a. रूपि कंदर्पतणउ. ब., राजकुअरो ते कंद्रप. क. b. जसु इद्र अस्वनी-कूमार. ब., जेसो हूयो अस्वनीकुमार. क. c. वसू विभ्रम मंडप-हेठि. ब., वीषंम अखी वीमांसि पुठ. क. d. उभी रही नरषि सरूप. क.

४८. a. °कुआर. ब., चाली आवो राजकुमार. क. b. °णी तेणि करिउ ब., °भांणी तिनि कीधो झवार. क. c. शगपण लाज न लोपी हैईइ. ब., सषपांण लीजि तेहे लोपीये. क. d. लीलाइ नवि आसीस दीइ. ब., सोवंनरेषाअि यासीस नव दीये. क.

४९. a. कशण त्रहूकि, स्तन...ब., कसांण कसि नि त्रण...क. b. मद भंभेली लो.° ब., निणवांण लोचंन फेरवे. क. c. वांछइ वीरह भोग विशाल. ब., वांछि त्रहणी भोगवीलास. क. d. चलिउ चित मेहेलि नी-शास. ब., चंचल थही मेले नीसवास. क.

५०. ब मां लीटीओ ऊ० पा० छे. a. कुअर. ब., a-b कमां नथी. b. मात...मुझ. ब., c. ...कोय...होय. ब.,...तो...होय. क. d. माय बाप सांहासिहिवु सोय. ब., कंम सासो सोय. क.

५१. a. कहु. अ., साचू कहु. ब., भांणे हंस, तु सांभल कहू. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राणी वचन सुणिउं जव एह, सोइ दडु देखाडि तेह :
"हंस, कहिउं करि जे मझ गमि, बहू जीड्र आपुं रतनमि." ५२
हीयडि हंस विमासण करि : 'माता धर्म-लोप ज करि.
होइ जानु जे मीठुं घणुं, कुण षाइ आमिष आपणुं ?' ५३
भणि कुंअर : "कामी हुइ अंधः तू लजा नवि देषि बंधु.
पिता पुत्र [बि] एक जि होइ; मा मंत्रेई विगति न होइ." ५४
राणी भणि : "सहू साचुं एह, बिहू जण नसि एक ज देह.
मा-बेटा-ससरा नि वहू, स्यूं नातरुं? विमासणि बहू. ५५
नातरां कहि नरेसर तणां, न गणि क्षिमावंत षूपणां.
आपणि आणि पेला तणी, अनि पेलानि दि आपणी." ५६
लीलावती भणि : "सुणि सोइ; कामवती स्त्री त्याजि न होइ.
एक कुलि जेठ-देउरनो रीति; गरूआ गुणि न अंतर चीत. ५७

---

b. लहु. अ., रा लगूनमांहि वगति...ब., राजतांणी गत हू नव लहू. क. c. मि डोटाव्यु जिड्र. ब., ५२ c-dथी ५३ c-d सुधीनी कडीओ कमां नथी. d. जोवा काजि इहां. ब.

५२. a. सुणिउ. अ., सूणिउ...तेय. ब. b. सोय जिड्र देषाडिउ लेय. ब. c...कहिकर मुझ...ब. d. वहू रतन आपु. अ, वि...आपू...ब.

५३. a. ततष्यण हंस विमासि मर्म. ब. b. माय लोपवा करि छि धर्म्म. ब. c. हुइ जांघ जु मीठी घणूं. ब., d. कोए न प्रासि पिंडीतणू. ब.

५४. a. कुअर कहि.ब. b. सगुं सणीजु न गणि बंध. ब. c....पूत्र...होय ब. d. ब. मां आखुं चरण : "मंत्रेई वगति नवि कोय."

५५. a...सूणि हंसा जेह. ब., रांणीं भांणे, सरव राचु एहे. क. b. बि नर. ब., बेहे नरनारनी एक ज देहे. क. मायबेटानि ससरा वहू. ब., माहा-बेटानी सरसी व्रेहे. क. d. सू नातरू, विमासु बहू. ब., एहे नातरु कोअ नव किहि. क.

५६. a. नातरा...तणा. अ. नातरां चाहि नीरस...ब., सुहू नात्रु राजातणुं.क. b. बिमावंत षूपणां. ब., नां गणु षांपण निहि षांपणु. क. c. आपण-पा आणइ. ब., आपडि ओला पेला तांणु. क. d. अनि...दीइ...ब., पेला-नि दीजि आंपाणु. क.

५७. a....कहि, सांभलि सोय. ब., लील्यावेती किहि, सांभल सोअ. क. (कमां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुणि–न हंस, महाभारत–भेउ : अंबा वदि वीतूं गांगेउ.
अप[छ]र–अवगुण अरजुन गयु, नर वैराटइ वृंदल थयु." ५८
भणइ हंस : "नर साहस षरा, कोधी अर्जन सिला–अपछरा.
जु गांगेउ न मेलिउं माण, अंबा चूकी पिहिलूं दाण." ५९
"हंस, घणूं म बोलसि वली; ताहरि रूपि विरह–व्याकुली.
हूं पटराणी, विस–न राजि. राय मरावीसि ताहरि काजि." ६०
तेणि वचनि कुंयर कोपीउ; सोजि अवगण करि जीड्र लीउ.
चालु जसि, कुपीता तेउ; चीतइ : 'कुमर मरावुं बेउ.' ६१

आ पूर्वे **सुवर्णरेषा** नाम आव्युं छे; अहीं प्रथमवार **लीलावती** नाम आवे छे.) b. त्याज्य न होय. **ब**. कांहांमावंती–मांन पुरांण होय. **क**. c. एकीजि कुल देउ°. **ब**,, एक कुल जादव अलवट रीत. **क**. d. गिरूआ आंणे अंतर चित. **ब**., गुणगरुवाथी माहारी प्रीत. **क**.

५८. a. सूणिन...एह. **ब**., आ कडी **क**मां नथी. b....वचने जीत्यु गांगेय.**ब**. c....वचने अर्जन...**ब**. d...विराटि व्रंदल...**ब**.

५९. a. सूणि न हंस सा° (?) **ब**.. सांभल हंस वात कहू हू षरी. **क**. b. सली. **ब**., कीधुं हरांण सर अरजंन सरी. **क**. c. °वि मेहेल्यां बांण, गओ गंगिव तेहे भेली मरांण. **क**. d....पिहिला चूकी प्रांण. **ब**., अंबो सषो चूको प्रांण. **क**.

६०. a. °णू मरम बोलेस...**ब**., °णु मांहां बोलेस...**क**. b. ताहारि रूपइ हू आकली. **ब**., ताहारि रूपे छु आकुली. **क**. c–d पहेलां **ब**मांः
"दस अंगली मुहि ऊठवि; दिन वचन वली मूषी उचरि.
विनति करि षोला पाथरि, जलपाषि जलचर सू करि ?
नयणे नीर खंडि धार : तम पाषि कूण करसि सार ?
मनगमतू सूष दिउ मूहनि; जे मागि ते आपू तनि."
c. विसारु राज्य. **ब**., वेसारु राज. **क**. d....मरावू ताहरइ...**ब**., राजा मरावु ताहारि काज. **क**.

६१, a. भणि वचन कूअर...**ब**., तिमि वचने कुअर कोहोपीयो. **क**. b. सोझ अवगुणी दड्ड करि...**ब**.,अवगुणं दड्डवो जुटी लीयो. **क**. c. वल्यु हंस जव जिड्र लेय. **ब**., चालो मेहेली माता तेहे. **क**. d. कौपी द्रष्टि पटरांणी तेह. **ब**., चितवु, कुअर मरावु वेहे **क**.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारि वरती फाडि चीर; वलूरि निषइ सयल शरीर;
कीउं रूसणउं; रचीउ दाउ; तेतलि तिहां पधारया राइ. ६२
राजा पूछो महिली पासि : "देवि न देषुं आज आवासि."
दासो भणि : "उ, राणी रडि. रीसाणी राणी उरडि." ६३

गयु राजा ततषिण सांचरी; बोलि नहीं, तिहां बांहि धरी.
"म म आभडसिउ," इम ऊचरि; "ससरा तमे, हंस-नातरइ." ६४
राय भणि : "गंगाजल पूत; जीभइ पाप म बांधि बहूत.
"पर-नारी[ह] सहोदर एय; सिउं वरद बोलावउ बेउ ?" ६५
"वाते साषि तन मम दोइ, लंपट पहिला मइला होइ.

मइ अवगुणा तु फाडुं चीर; नषे वलूरी सयल शरीर." ६६

---

६२. a. वक्री नारि ते...ब. राणी अवगुणीए फाडां...क. b. नषे वलूरिउ शकल शरीर. ब. वलुरु सघलु शरीर. क. c. करिउ रूशणू, करि उपाय ब., करी रूसांणो रचीओ दाय. क. d. तेटलि...राय. ब., एटले तांहा पधारा राय. क.

६३. a. मिली. ब., राजा पुछे सुण मेहेली पास. क. b. दीसि नहि कां देवि आवास. ब., नारी नव देषु अवास. क. c. जिम भणि उछि उरडि. अ. ओ जइ पोडां छि ओरडि. क. d. उ दीसि पेलइ उरडि. ब., रीसावां राणी अिम रडि. क.

६४. a. ततष्यण. ब., ततषण गआ राजा संचरी क. b.बोलाइ नहि तव बांहि धरइ. ब., नत्र बोले, नांहां चाले घडी. क. c. °डसु इम उचरि. ब., मांहां आभडसो अिम ओचरे. क. d. तम्यो शशरा थाउ हंस...ब., तंमेहे तो ससरानि नातरे. क.

६५. a. °णइ....पुत्र ब., राजा भांणे गंग्याजल पुत्र. क. b. बांधेस. ब., जीभे पाप कंम बांधि सुत्र.क. c. °ना शहोदर वेह. ब., परनारी सायोद्र छि एहे. क. d. सूध वंस ऊपना तेह. ब., एवु वचंन नांहां बोलेस तेहे. क.

६६. a. °षि तम मन दीइ अ., आष शाष स्वांमी तू जोय. ब., एह वातनो साषी देहे. क. b.माय लंपट कूडा होय. ब., एवा लंपट कोही न॰ किहिं.क c. मि अवगुणिउ तु तांणिउ चीर. ब., तोहो मिहि अवगुणीयि फाडा चीर.क. d. ...'रिउ शकल...ब., वलुरु सघलु सरीर. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते देषी रा विलषु थयु, जिम घृत वैस्वानर पोषीउ.
मंत्रि मनकेसर कहिउ हकारि: "अपराधी कुंअर बेउ मारि." ६७

---

६७. a. राय व्यप्रधर. **ब**, तिणे वचने राजा कोपियो. **क.** b.जांणे वैस्वांनर घ्रित होमयु. **ब.**, जंम वीस्वाधारा गरथ होमीयो. **क.** c–d. "राय भणि, सेवक हकारि; ए नर नश्चि अपूटि मारि." **ब.**,

६७ c–d ने बदले **क**मां नीचेनी वधारानी कडीओ मळे छेः—

"तेहेडा तलार नि नव लगी वार. दीधी सीषांमांण, सांमी सार.
सात वार पुछु तलार. हवे मांहां पुछेस बीजीवार.
हंस वछ बेहे कुअर जाल, जइ नगर निवेसि सुलीये घाल.
वचार मंन तलारि करो, करंम–वसेकि मारो राजा फरो.
बावंनवीर तो जोहो सुद लिहि, ततषण चौटि चालो तिहि.
हंस वछ बेहे रांमति रांमे, लाक्षणी घोहोडी साटवे.
घोडी आटवतांहां कीधी वात, अछब कुअरनि घाली ग्राथ.
केसर जत्र ते सँणगार. तव बेहे बांधा राजकुमार.
चोटि चालो मारांणकाज. जुरि लोक ते वरांण अढार.
जुरि भ्रांमांण सउद्र घांणु, जुरि लोक ते नगर ज तांणु.
एक अटारी बेठा जोअ, एक धवल घिहिर बेठा रोय.
हिहिकार थओ तिणीवार; सौ दष यांणे मंन यपार.
हंस वछ बिहि सुलीये लीध, ततषांण रायि सीषांमांण दीध.
सात त्रस दंन वही गआ. छाजावतीथी मनकेसर आवीया.
पिहिला नगरना पुछा लोक; सउ रूओ, मंनि सोहो छि सोक ?
नां जांणीये कसो छि भाय. आज कुअर मरावे राअ.
नां जांणीए कसी छि वात. बेहेटा उपर कोपो तात.
रथ वाली मंनकेसर जाअ. कुअरां तांणे जइ लाग्यो पाय.
हू जेही आवु राजा लगि; तुह्न तलार मांहां मारेस तांहां लगि.
सात पोल बंधावी राय; नां मांनि किहिनो उपाय.
उभो रहो रथ राषी षांमे, जइ पोलीआ राअ वीनवे.
पोलीयो तां तस लाग्यो पाय; मुज आसीस नव दीधी छि राय.
जोहो यावतो मेलेस कोअ, तो घांणे घाली पीलेस तोय.
सोनैया बह्नू तंनि दीया. फरो पोलीआ दालीद्र ज गया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्री भणि : 'स्वामि, काइ मानि : अस्त्री अनरथ-मूल-निधान.
पहवी वात अनाहत करि, निसि कुमर अघूटि मरि. ६८

जे लोभि कुडी विनती करि, पडे नरक रहूरहू संचरि.
गयो पोलीयो राजा भांणी. माग पोलीआ व-ांमांणी.
साचु पुछु तो तेणे ठाय, किहि तो षडक घडावु राअ.
मंत्री रासो सांभल मांन, छोरु द्रुष्ट करी सांमांन.
हंस वछ बिहि पुन-प्रसीध. तव्र पोहोलीआनी उपनी बुध.
भांणे पोलीयो मांहां मारेस राय; थाहिस झोटंग ताहारा घर माअ.
धंननी यारत जेहे नर मरि, थाअ प्रेत नि पीडा करि.
थयो सांसतो वात सांभरी, ताहारि पोलीये विनती करी.
जि परष डंड डालवो, तेहे मंनकेसर आंही आवीयो.
भली बीक माहारा मंनमांहां हती, अरे पोलीआ कुडी वेनती.
मंनकेसर महीअर आवषि, वाजंत्र सवद वाजां वागसि.
ततषांण राय विमासी हैए, वीप्रीत वात मंत्रनि पुछीए.
अिनि बीजो मांहां मुकेस कोअ. एक प्रधांन पाठवे सोअ.
मांणमांणकनी वेहे वांयो भरी, गआ प्रधांन पोलि संचरी.
मेहेली रतंन निहि लाग्यो पाअ; कुसलवारतया पुछी राअ.
छाजावती नगरी नवरंग, ब्रांमांण एक वसि सीरंग.
धंनलषमीनो नां लाभे पार; नथी पुत्र आंहांणे संसार.
नोल पाले थया षट मास. तेहे ब्रांमांणनी पोहोती आस.
पुंन कतां पापषिहि थयो; अस्त्रीमति बालक जंनमयो.
छ मासनोह्यो जारि कुअर थयो, काल सरप हेठो आवीयो.
नोले लेइ भोरंग मारीओ. अस्त्रीमति याण प्रीछो कीयो.
नोहोल तांणी तांहां हत्या लीध, वीप्र सर कलंक ज दीध.
वली वात तु सांभल राअ. वात अचंबि दीठी आज.
जेहेनि काजि प्रदेस गया हंस वछ बेहे सुलीए दीया.
हंस वछ विहि अंनमत थआ, जिहिंड्ड मसि अतीओरी गया.
वलगां वस्त्र नि फाडां चीर, वलुष सगलु सरीर.
सतवचंन तु मांने सही, कुअर रापवा सरषा नही.

६८. a. भणइ प्रधांन, स्वांमी कांइ उपमांन. ब., भांणे प्रधांन, राजाजी मांन. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामि, काइ दूबलउ कानि ? पछि उरता करसि निदान;
नारिवचन मनि वसीउ रोस, लोक प्रधानह देसि दोस. ६९

जनम-लगि कृत करम-वसेस, पनर वरस रहीया परदेश,
गुणप्रधान कंदर्प अभिनवा, पछि कुमर मारी रोयवा. ७०

हंसाउली कुअरि वरि जेउ, शुद्ध वंश ऊपना वेउ;
श्रवण नयणि नवि देषि साषि; भरी लोह दिन केता राषि. ७१

इस्या बोल स्त्रीना सांभल्या," भणि प्रधान : "कुंयर [वि] मल्या.
कर नवि चूकइ एहनी वाट; आज कालि तम पहिरा पाट." ७२

---

b. °निदान. ब., ६८ b–c–d अने ६९ a कमां नथी; कमां ६८ c–d अने ६९ a–b ६९ c–d पछी छे. c. °हूत करइ. ब., d. ए नर नसि अघूटइ मरइ. ब.

६९. a. अस्त्री अनरथ मूल नीदान ब., b. पछी उरतु करसु राजान ब., पछी योरतो करसो नीदांन. क. ६९ c–d अने ७०मीने बदले कमां:—
" भांणे राजा, प्रधान एवीधार, रांणी ये अनरथ मुल संसार. "
d. प्रधांन. ब.

७०. a. सूभ लगनि हूत करम निवेस. ब., b. वसीया. ब. c. गुणनीधांन कंदरप. ब. d. मंत्रेई काढचा मारवा. ब.

७१ मी कडी बमां नथी. कमां नीचे मुजब:—

" हंसावली वर वरीओ जेहे, सुद वंसमांहां उपना तेहे.
सोवंन नेत्र कसी छि साष. सोडां भरी दंन केहेता राष."

७२मी क मां ७३मी पछी (प्रक्षिप्त अर्ध पछी) नीचे मुजब छे:—
"एवा बोल रांणीअि सांभला, अही प्रधांन कुअरनि मल्या.
राजा तु तो सांभल वात, आजकाल तो प्रधांन पाट."
a–b बमां लखवी रही गई छे. बमां c–d नीचे मुजब: —

" ए चूकइ छइ एनी वाट, आजकालिमांहि पडसि पाट."
बमां ७३मी पहेलां १ वधारानी:—

" मंत्री तणां वचन अवगुणि, श्रीमली मनकेश हणि.
स्वामी आ कशां विनवी होय ? वी–शरीर वलो उशोय (?)"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थयु उफराठउ बुधिनिधान; "ए नही नर-नष," भणि प्रधान.
"पुरुष प्रेमरसि नष सोहामणा; नीरस नसि ए स्त्री तणा." ७३
राणी भणि : " मर्म घण कह्यां; वडी वार-लगि सासह्या.
स्वामि-वचन अवगणना करि, ए बिहू सरसु मंत्री मरि." ७४

तव मनकेसर लागु पाय : "तम आइस अमे करसुं, माइ.
तमे आरोगु सरसा स्वामि; करी काज आवुं ईणि ठामि." ७५
राणी भणइ: "अलीक अल राज; विलंब न कीजि आपणि काज़ि.
साचा विण न जसुं जाणि; बेहू नयण आणे अहिनाण." ७६

---

७३. a....°टउ वहु वूधिनीधांन. ब., भाणे प्रधांन राजाजी जोअ., क. b.पुरूषनष न हइ, भणइ... ब., अवला नष सवला कंम होय. क. c. पुरुष-नष हुइ प्रेम शोहांमणा. ब., अस्त्रीनि वचने चडे छि करोध. क. d. ए नष नशि अस्त्रीतणा. ब., पेरि पेरिना वीधा प्रतीबोल. क. अने कमां "प्रथम नष एहे सोहामणा, ए नष नीसि नारी तणां" ए अर्ध तेनी वच्चे.

७४. a....भणइ मरम घण कहिया. ब , b....°गि बोल...ब. c. राय...°गुण जे....ब., d. बिहू जण पहिलु मनकेशर मरइ. ब. कमां:—

'रांणी भांणे घांणा बोल ज कहा, वडी वार मिहि सांषी रहा.
मारा स्वामीनु बोलुय वरथा करि, बेहेटा पेलो तु तां मरि."

७५. a. मंनकेसर बोलो सीर नांम. क. b कमां नथी. बमां आ कडी अने तेनी पूर्वे नीचे मुजब:—

"दीगविजि साधी आवीआ, तेतलइ कुअर मारवा काढीया.
तिणि कुअर मारत राषीआ......................
राजा प्रधांन एहवू गमि, अपरीछत वात ते कहि,
अणप्रीछिउ नवि कीजि कांम, देसवटेसे जासि माम.
अम्हो आरोगू शरसा स्वांमि, करो कांम आवीश इणि ठांमि."

७५ c-d कमां नथी.

७६. a....°णि, अलीअल ए राज. ब., रांणी भांणे अलीअल छि राज. क. b.विणसि काज ब., वीलंभ न कीजे वांणसि काज.क. c.शाचा विण नवि जमसू जांणि. ब., वांगसि काज मारु नीरवांण.क. d.बइनां लोचन आंणि इधांण. ब , जांण वे मारी लावु एधांण. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेई बीडुं चालिउ तेणिवार; कुंअरनि कहु प्रधान विचार.
आप्यां बार रतन अस्व बेउ, प्रधान प्रछन चालाव्या बेउ. ७७
संबल छागल फोफल पान लरस्यु बुलावा गयु प्रधान;
तुरी-प्राणि मृगलोचन लेई राणी राउ जमाड्या बेउ. ७८
राणि भणि : "ति लोचन लीया तीणी वेला काइ बोलीया?"
"बोल्या बे : 'अमे हुआ अजाण;' भणिउं: 'कर नवि चूकइ प्राण.'"
"जउ मुषि झाषिउं इस्युं सरूप, काई विणास्यु कंद्रपरूप?
मनकेसर, तूं आवत लेई हूं धवलग्रह राषत बेउ." ८०

निवट बोल राणी-मनि भया, तेतलि कुंअर वेगला गया.
ऊचा पर्वत, विसमा घाट, नइ नीझरण, वन माहे वाट. ८१

---

७७. a....जिङ्ग....ठारि. ब., लेइ आसीस चालो तिणीवार. क. b. कहि .. वीचार. ब., कुयरतणि जइ लाग्यो पाय. क. c. बार रतन **अस्व आप्या** बेह. ब., बिहि तीरी दोआ.क. d. प्रस्न गुपत चलाव्या तेह.ब. छांना कुयर चलावीया. क.

७८. a. शबल छागलनइ...ब., सवला...नि...क. b. शरसु वधावि परधान. ब., वोलावा साथि प्रधांन. क. c-d पहेलां बमां वधारेः—

"इम सीषामण दीधी सार हीत भणि आपिउ श्रीकार.
दोहोले वेलाए आधार. करम तणउ छि वडु विचार.
इम सीषामण दीधी घणी. चाल्या पुर पिठांण-ज-धणी."

c. करी प्रणांम...लेय. ब., मरघ माहारीनि दोहो लोचंन लीया. क. d. रायरांणी जुहारचां वेय. ब., राजरांणीनि जइ भेटीया क.

७९. a...तइ...लीआं. ब., रांणी भांणे, जव लोचंन लीआ. क. b. तणी वेला ते कांइ वोलीआ. ब., तारि कुअर कांही वोलीया. क. c.वोल्या अह्मे... ब, बहू वाति एणे सायु तांण. क. d. कहिउ करत, नवि चूकत प्रांण. ब., मारु कहू करोत तो नव चुकोत प्राण. क.

८०. a. जु मुष भाषिउ असू स्वरूप. ब., रांणीए मुष हसावु रूप क. b. कांइ विणासू कंदरप-रूप. ब., तिहि मरावा वेहे भुप. क. c. मनकेशर आवंतु लेय. ब., c-d कमां नथी. d. प्रस्न ग्युपत वलाव्या वेय. ब.

८१. a. नीघट...°णी कह्या. ब., नीकट वोल नाहारीये कहा. क. b. तंटलि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राति दिवस तुरी संचरि; वाघ सिंघ सिवा फेकरि.
अनेक महाव्रुष गहिर गंभीर; भूला वेउ नि नाठुं नीर. ८२
भणि हंस : "वीनवूं, वछराज, त्रस लागी नि थाकु आज."
अति ऊसनु रही सवि संधि; पुढिउ वडतलइ घोडु बंधि. ८३
त्रस्यु हंस निद्रा–वसि थाइ; वछराज जल लेवा जाइ.
भाइकाजि भमि वन घणि, जलचर–साद सरोवरि सुणि. ८४
ततषिणि तिणि सरिवरि वीर दीठउं नयणे निर्मल नीर.
चक्रवाक सारस स्वर करि; मगर मछ बग थारटि धरि. ८५

कुअर ब., एटले कुयर. क. c. उचा परवत. ब. युचा प्रवत ने वी°. क.
d. निहि निझरण माहा द्रढ वाट. ब., नदी नीर निझरांणे वाट. क.

८२. a. राति देवस ते वाटइ वहि. ब., रात दीवस अती रांण संचरि. क.
b. वरण वीसांमा घोडे रहि. ब., वाघ-संघ सुयर फेरवि. क.
c–d. पहेलां बमां:—

"भूष तरस नर तावड सहि; एके एकनू दूष मनि दहि.
वाघ संघ पार नवि लहि, मनस पत्र को शधि नवि कहि.
अस्वपूठि हंस वछ सांचरि, वाघ संघ बूबूआरव करि."

c. अनेक वृष्य तांहां गि° ब., तिणि वाटे व्रष गंभीर. क. d. वि भूला, परवारिउ नीर. ब., भुला पडा नि षुटां नीर. क.

८३. a. विनवि वछ° ब., हंस वीर आनि वछ° क. b. त्रश...नइ थाका...ब., त्राषा लागी नि थाक्या याज. क. c. इति. अ. अति उशनु रहिउ सरव साधि. ब., अति आसंन नि सव साधीर. क. d. °तलि घोडा बांधि. ब., पोहोडो वडथड छोडी वीर. क.

८४. a सूतु हंस नीद्रावश थयु. ब., पोहोडो हंस नीद्रावस थयो. क. b. गयु. ब.,...°राजा...गयां. क. c...भमिउ...घणू. ब., भाई कारांण वंन भांमसु घांणु. क. d. करवि सबद सरोवर सूणिउ. ब., सावज सार सरोवर तांणु. क.

८५. a. ततष्यण गयु शरोवर–तीर. ब., ततषांण गओ वीसांसि बीर. क.
b. नायणे निहालि नीरमल नीर ब, दीठु निणे ते नरमल नीर. क.
c. सर अ., शारस. ब. चक्रावो करि क. d. °मछथी धीर नवि डरि ब., °मछ सरोवर तरि. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध फूल फल वृष आचरिउं; रूप पंचविध कमले करिउं.
गुरुड गरूउ पंषि विश्राम, स्वर्ण सरोवरइ भणी नाम. ८६
वीर विमासी जलतट गयु, छागल वीसारी आवीउ.
कमलपत्र जल डुंडुउ लिउ; 'लुडुडउ पाई पछि हूं पीउं.' ८७
उदक लेई आविउ जेतलि, सरपि हंस डसिउ तेतलि;
निद्रा माहि विषम विष दहिउं; करी आहार ऊरारि रहु. ८८
जेतलि संचलि कुंयरइ करिउ, भूअ भुयंगम उरि ऊतरिउ.
दीठउ नयणि, पडिउ उरि झाल, गयु वडथुडि, बलि पइठउ काल.८९
वछराज जोवानि [जाय], गया प्राण पहिठाण[ह] राय.
भणि हंस[नि] : "हूया अणाह." जल लाधी[नि] मेहिलि धाह. ९०

---

८६. a. सोहइ माहा सरसां कमल. ब., वीवध फल वछ एम तरि. क. b.रूपइ पंचवधि हंस धवल. ब., रूप पंच कांमल बेरवे. क. c. गिरुआ गुरूड. ब., गरूडा गरूड पंषी वसरांम. क. d. श्रवण सरोवर सूणीइ नांम. ब., पंपा सरोवर तेनु नम. क (°र **तेनु नम**थी प्रतिनुं मूळ पानुं तूटतां नवा हाथे उमेरेलुं एक पानुं छे, जे कडीना **पते जादव वइस**° सुधी छे, ज्यांथी आगळ पाछी असल प्रति चाले छे.)

८७. a. जलवटि थयु. ब., वीमंसी जल लेवा गओ. क. b. °ल लेवा वीसरी गयु. ब., छगल वीसारीने आवीओ. क. c. दूदू कीउ. ब., मेली पातर ने दूदो कीओ क. d. हंसनि पाई पछि हू पीउ. ब., भाई कारंण ज़ल तंम लीओ. क.

८८. a. आव्यु जेतलइ. ब., जल लई आवो जेटले. क. b. डंस अ., तेटलि ब., सरपे हंस डसो तेटले क. c–d पहेलां बमां बे चरण वधु छेः—" चंदन-गंधि आव्यु धसी, हेडि वइठउ मस्तकि डसी."
c. नीद्रामांहि विषधर थयु. ब., नीदरामं वष वापी गओ. क.
d. आहारउ मांडी उभु रहिउ. ब., करी ओरतो उभो रहे. क.

८९. a. जेतलइ कुअर संतल करी. ब., रदे चटको कुअरने भरो. क. b. तव भोयंग हेटउ ऊतरी. ब. भोरंग सुइमां उतरी गओ.क. c देषी वसीहर पिठी झाल. ब., डीठो णे पडी झल. क. d. वडलाथडथी ऊठिउ काल. ब., गओ वडथड, बेठो काल. क.

९०. a....राज जूइ जु नाडि.ब. ...राजा जव जोवा जाअ. क. b.°ण,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[राग] गूड देशाष

"पहिलां परदेसी हूया, नवि सरजिउ सुष राज;"
वाहइ धरी विठउ करइ. वनि वलपइ वछराज. ९१
"बंधवो, बोलि हो, दिउ हूं–कारडु, हंस;
जोड्डयडु वनि विघटीउं; जूयली यादववंश. बंधव० ९२
वरि मंत्रेई–मति भली; मरण न मूकत साथ;
हीयडं हंस न मेलवि; देवी बाउलि बाथ. बंधव० ९३
अनिगणीयानि गारुडो, दूष न दाषि डंस;
सधि होसि हंसाउली; हीउं हणेसि; हंस. बंधव० ९४
अरि अंगमि जमलु रहिउ, वहिली वेला, बंध;
से सरणि बाधंतडि, कुण उडेसि कंध ?" बंधव० ९५

मुझ पइठी धाडि ब., गआ परंण परपेढंण राअ. क. c. भणि वछ हू हूउ अणाहि. ब., बंधवा आपंणे हीहीवाआ. क. d...नाषी नइ मेहेली धाय. ब., नंषी नीरने जोवा जाअ. क.

९१. राग देसाष. ब., कडवा: ढाल फरो. क. a. पिहिल नइ परदेसी हूआ रे. ब., भाइ आपण पेला वद्धव परदेस गआ रे. क. b. नवि सरज्यां सूषनां राज. ब., नव सरजु आपणाने राज रे. क. c. वांहि धरी बिठउ करि रे. ब, भाइने बमडली साइ बेठो कीओ रे. क. d....वलवलि वछराज, वांधव वोल दिउ रे. ब., वनमं वलवले वछराज रे, भाइआ क.

९२. a बमां उपरनी कडीमां छे, ज्यारे आ ध्रुवनी कडी ज कमां नथी. b.दिउनि. ब. c–d "गिरि डूद्रू वन षंडीउ, जूअली यादववंस.' क.

९३. a. ँईई मति भोलव्यां रे. ब., पणी वेरणा मतरी माआ भली रे. क. b. वन मरण न मेहेलि साथ. ब., जेणीए मरण मेलु साथ. क. ब नी कडी अहीं पूरी थतां त्यां ध्रुवनुं चरण 'बांधव बोल दिउरे" छे, ते प्रमाणे हवे पछीनी कडीओमां पण समझवुं. c-d पहेलां बमां उपरनो मेळ मेळववा बे चरण वधु छेः— ' उर आंगमी उचु करि रे. सधि होसि हसाउली मात." c. हैड्ड हणेसि ते वली रे. ब., हंस हवे मने नही मले रे क., d. दीधी वाउल बाथ. ब., बवल देइसु हो बथ. क.

९४–९५ बमां नथी. ९४ c मात्र ९३ c–d पहेलाना वधाराना बीजा चरण तरीके छे. कमां :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भणि "असाईत" लंका हवि लषमण लागु भ्रामु,
तिम वछराज मनि झूरवि; सकति-भेद श्रीराम. बंधव० ९६

वस्तु

कुंअर चिंति, कुंअर चिंति, मनह मझारि :
" हवि हूं हूउ एकलु;" हीइ सबुधि विचारि.
आंहां अछि अवर न कोइ, रानि रोयंता जेवारि.
"जिहां जल तिहां तीरथ भणि; शास्त्र सोइ विचार.
जई सरोवर बंधवा करुं सं-परि-संस्कार." ९७

" माडीजाआ बोल हो रे, हुंकारो दोने मनं हंस.
नावा-गुणीआ नव गारुडी रे; दुष नव दीज हो हंस.
सुद लसे हंसावली रे. हइडलु हणसे हो मात रे,
अगडले उभी रेस रे, केसे वेलो आव मुज वध.
करी आकरू (?) वधव तणी रे. डागक देइसु हो हंस.
हगोर वंनमं वछराजा रूए रे. सके तने भेठिआ सीरंम.
भाई आपणी जोडडली नव षडीए रे, नव मलीए ते जादववइस.
............ही वीसरो रे. गुण नव लाभे रे मांनि हंस.
क्रीआ करु वंधव तणी रे, दाग कांइ देइसु रे तांनि हंस."

a. वच्चे ९६मी कडी आप्या वाद कमां:—

" माहाडीजाया वोल दोहो रे, हूकारो दोहो रे मांनि हंस.
जोहोडली नव पंडीए रे, नव मलीए ते जादववंस."

९६. a. °त केतलां कह्यू ब., भांणे असाइत एटलु रे. क. b. लक्षण लघूवि भ्रमं. ब., लक्षमंण लाइला श्रीरांम. क. c. वछराज वन वलवलि रे. ब., वंन मांहां वछराजा रुयि रे क. d. शक्तिभेद श्रीरांम. ब., सक्रिय तांनि भेटीया श्रीरांम रे. क.

९७. वस्तू. अ., आ आखो छंद कमां नथी. a. चिंति. ब., b. नीज मन माहि. ब., c-d. " हवि हूइ हां एकलु, हैआ मांहि ते बुधि विचारि." e-f. " इहां मझ को नहि, रायनि रोअतां को न वारि." g-h. " एम मनि धीरति करी, शास्त्री वीचारी सोय." i-j. जैई शरोवरि शब वांधीउ, सीपरि करसू सोय."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[चउपई]

एक अस्व बंधव बांधीउ; सुवर्ण सरोवरि रडतु गयु.
वाजित्र श्रवण सुण्या माहि गजर, सात गाऊ हुइ नीडु नगर. ९८
ततषिण कुमर विमासि हीइ: "ईणि अवसरि चंदन जोईइ.
नगरि अरथ वेचुं आपणु, चंदनकाठ लेई आवुं घणु. ९९
[शब] मेहलुं किम सूनुं सोइ? इहां उपद्रव साविजनु होइ."
छइ वटवृष सरोवर-पालि; सब सीची बांधिउं वड-डालि. १००
कीउ सनान वृष ऊतरिउ, एक आसण एक हाथि लीउं;
दसि जाणीनि पुहुतु जाम, कातीनगर तेहनुं नाम. १०१
जेतलि कुंयर काती गयु, तसि गरुड सरोवरि आवीउ.
पंषि-वाइ कंपि वृष-डालि. जई बिठउ सरोवर-पालि. १०२

---

९८. चुपै. ब., राग धंनासी. क. a–b ब्रमां ऊ॰ पा॰. a. अस्वपूठि अश-वारज थयु. ब., पछि एक आसंन वंधव बांधीओ. क. b. सूभट श्रवण शरोवरि गयु. ब., सुभट नगरनि पासि गओ. क. c वाजित्र वाजि श्रवणे गंजार. ब,. वाजंत्र-सबद ते सवांणे सुणी. क. d...गाउ छि नेडू...ब., तांहांथी नगरी. क.

९९. a. तव कु[अ]र विमासि हैइ. ब., वछराजा वीमांसि हैए. क. b. इणि. ब., आंहांणे अवसर चंदांन चाइए. क. c. नगर वस्तू वेचू आपणू. ब., नगर ध्रव हू षरचु घांणो. क. d. लावू घणू. ब., चंदांन काछ लावु तेटलो. क.

१००. a. शव किम मेहेलू सूनू सोय. ब., संभ सुनु मुकु कंम सोअ. क. b.°द्रव्य सावीजनु होय. ब., एहे उपर कोअ सावज होअ. क. c. मोटू व्रक्ष शरो...ब., वड वषि एक सरोवर पाल क. d शव षांची नइ बांधिउ डालि. ब., संभ सिची बांधु वडला-डाल. क.

१०१. a. विष ऊतरिउं. अ., करी स्नांन व्रक्षथी ऊतरि. ब. कमां १०१ अने १०२ a–b नथी. b. एक पहल्यांणि, एकि करि धरिउ. ब. c. दश जांणीनइ...जांम. ब. d. पूछिउ...°रनू नांम. ब.

१०२. a. कुअर कांती. ब. b. °ड पंषि आवीउ. ब. c. पंषवाय कंपावइ डाल. ब., पंषीवायि कंपी वडडाल. क. d. जई बईठउ शरो°...ब., तेहे जइ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंष-वाइ लागु जेतलि, विष ऊतरीउं वीर तेतलि.
जोव्यु हंस निहालि नयणि : 'किहि बांधि वृष-डालि गयणि ?' १०३
छोडयां बंध; ऊतरीउ वीर; कीउं सनान सर; पीधुं नीर.
हती त्रषा ते त्रपतु थयु; करी आत्मा अमृत सीचीउ. १०४

चिहूं षंडे छि बुधि जूजूई, बिसइ अठोत्तर बीजी हूई.
सरव जन-मन "असाईत"लहइ; कथा षिणिअंतरि तु कविता कहि. १०५

विहिठो वडला-डाल. क.

१०३ a-b पहेलां कमां:—

" देषी रूप नि पंषी हसो. राजकुयरो कोअ स्रपि डसो. "

a. °वाय. ब., पंषी पांष लागी जेटले. क. b. व्यष ऊतरि कुअरनइ ते° ब., वीरनि वष उतरु तेटले. क. c. जीविउ...नीहालइ...ब., ततषांण कुअर नहाले नियेण. क. परंतु आ पूर्वे कमां वे चरण वधारे:—

" वष घुटीनिं आंमरत सिचीओ, हंस राजा जीवतो उठीओ. "

d. कुणि वांध्यु वृष्य...ब., किणे बांधो वडला केरी गिण. क.

१०४ a-b पहेलां कमां वे चरण वधारे:—

" हवे मारा पुननी वात, थयो जीवतो राजकुमार. "

a. छोडी ब., उतरीओ. क. b. करिउ स्नांनि, पीधू नीर. ब., कीधां अस्नांन नि प्रामु नीर. क. c. हूती त्रीषा नि त्रिपतु थयु. ब., हूती त्रषा नि त्रपतो थयो. क. d. करि आत्मा अमित होमीउ. ब., करि क्रीआ आत्मा पोषीयो. क.

१०५. a. चिहू षंडे छि मति ब., चार षंडनी बुध जुजवी. क. b. एटलि द्वितीय समाप्त हूई. ब., एटले कथा संमापत हवी. क. c. अशाईत लहि. ब., लेहे. क. d. तु कवि कथा क्षणंतर कहि. ब., कथा एक षिणु एकमां किहि. क.

सरवाळो:—अ १०३, ब. २२५ (बंने खंडनो मळी), क १२४.

पुष्पिका:—

अ. इति हंसाउली त्रिणि षंड संपूर्ण हवा ॥ ३ ॥
ब. ॥ श्री ॥ ईति हंसाउली द्वतीय षंड संपूर्णः ॥ श्री २ ॥
क. ॥ षड ॥ २ ॥ सांमापत छि ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय खंड

[चउपई]

चाल्यउ कुंयर चित्त विमासि : 'किहि भाई भूलु वनवासि ?'
सरोवर तणी पालि ऊतरि, सरला साद सहोदर करि. १
देषि गिर-तरूअर शत-साष, तिणि दिसि वन जोयण लाष;
वृक्षसं वात करि, दिह दमि, 'भाई भाई' करतु भमि. २
हंसराज वनि 'भाइ' भणि. चडसुं नगरि काजि तेह तणिः
डालि बांधिउ किम विसरी ? चंदन-काजि चिहु दिसि फरि. ३

---

१. a. चालिउ कुअर वात **ब.**, चालो कुअर मंन वीमांसि. **क.** b. किहां भूलु भाई वनवास. **ब.**, कांहां भाइ भुलो वंन वसि. **क.** c. शरो...उतरि. **ब.**, °नी...उतरि. **क.** d. शरला साद सोहावा करइ. **ब.** °द कि नि रूअ. **क.**

२. a. गिरवर तरुअरना तीहा साष. **ब.**, देषि गुरूवर सत साष. **क.** b. दशि दसि तरूअर तिहां लाष. **ब.**, तिहिणी दिसि एक जोजंन लाष. **क.** c. वृष्यसू...देह...**ब.**, वषि सु वात कि, दे दंमी. **क.** d. °तु ते वनि भमि. **ब.**, भाइ कारांण वंन भुला भांमी. **क.**

३. a. राजा. **ब.**, 'बछराजा भाई,' मंन भांणे. **क.** b. चढि शाषा एक गिरि-विरि तणइ. **ब.**, वांणसु काज ते नग्रज तांणे. **क.** c. गलि...वीशरि. **ब.**, डाले बांधो कंम वीसरि. **क.** d. °जि ते चुहुटि **ब.**, चांदांन कारांण चौटि फरि. **क.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंयरि वषारि दीधी द्रेठि, विठउ दीठउ स्रमण सेठि.
तेणि ततक्षणि बोलावीउ : "जोणि तम काज, वस्त ते लीउ." ४
वछराज वषारि गयु, तव सेठ साहमु ऊठीउ.
मेहली चाउर दीद्धउ मान, मोनी करि करडेवा कानि. ५
सेठि भणि : "देषुं एकला; घोडा बि तम तेजी भला.
सरसु [आ] पलाणु तोषार, नवि देषुं आसणि असवार." ६
तेणे वचनि प्राणि गल चडि, करि वात नि आसू पडि :
"सेठ, बोल अम हीयडि वस्यु; बीजु बंधवा सापि डसिउ. ७
ते वनि मि मेहलउ भाई. लेइ चंदन चालिसु तिणि ठाइ.
देई दाघ आवुं जेतलि, तम थापणि आपुं तेतलि." ८

---

४. a. कुअर...द्रष्टि. ब., कुयर वषारे दीधी द्रष्ट. क. b. दीठु विठु...सेठ. ब., विहिठो दीठो सोवंन शेठ. क. c. तिणि ते कुअर हकारीउ. ब., तव शेठि बोलावीओ. क. d. जांणिउ काज वस्तू सोज लीउ. ब., तंम जोइये ते आंहीथी लोयो. क.

५. a. °राजा...गयो. क. b. तत्र ते...सांहांमु उठीउ. ब., तव सेठि बोलावीयो. क. c....चाउलि दीधां...ब., मिहिली आसंन नि दीधां. क. d. मिनी करि करडवा कांन. ब., मिहिनी करि छि कडवा कांन क.

६. a. सेठ भणि, सू ए...ब., भांणे सेठ, देषु...क. b....बि अछि अति भला. ब.,...वेहे दीसि छि भला. क. c. शरश पहल्यांणिउ. ब., सर मोहोर डील गांम अत सार. ब. d. नवि दीसि एहनु. ब., नव देषु बीजो अस...क.

७. a. तिणि वचने पांणी गलगलि. ब., तिहिने वचने प्रगल भड करि. क. b....नइ आंसू ढलि. ब, वात करि नि क्षांषे आंसु...क. c सेठ भणि, अह्म शरसु वसु. ब., सेठ बोलो ते माहारि हैडे वसो. क. d....बांधव सर्पइ डसि. ब., नांनेरो भाइ माहारो सरपि डसो. क.

८. a. ते वन विषि मेहेलिउ भाय. ब., तेहे वंन मांहां मेहेलो छि भाअ. क. b....जाइस तेणि ठाय. ब., चंदांन लेइ जावु तेणे ठाय. क. c. आवूं. ब., डाघ देही आवु जेटले. क. d. मझ थांपिणि रापु तेतलि. ब., आ थांपण राषो तेटले. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवहारीया वीर वीसख़ु; दीठुं रतन; सेठि मनि हस्यु :
" बार पदक छोडुं [तत]कालि; घोडा लेई बंधावुं वालि. " ९

विहू जणे चालि जेतलुं, तोलाव्युं चंदन तेतलुं.
ते द्रव्य आप्यु तेणि वार; वहित्रा-सरि दीधु भार. १०
कुमरपूठि वहित्रा थउ, सात गाऊ सोवन-गिरि गयु.
जई जोऊं सरोवर-पालि, नही शब ते वडनी डालि. ११
कुंयर चरण विमासि हीइ : 'इहा उपद्रव साविजनु होइ.
जे पुण आव्यु कोई इणि ठाइ, कुणि छोडिउ, पग जोइसु जाइ.' १२
कुंयर चरण चाहि सर-तीर, बंधव-पग उलषीउ वीर.
मनि आस्चर्य; दह दसि जोइ साद करइ; सरलइ सर रोइ. १३

---

९. a. °हारीउ. ब., पूर्वार्ध-उत्तरार्ध कमां ऊ० पा०. विहिवारीआनि मंन वीर वसो. क. b. दीठां रतन सेठ, नि हसिउ. ब., दीठां रतंन नि मंन मांहां हसो. क. c. बार रतन सूप्यां सूकाल. ब., बार रतंन आंहीथी लेइसु काल. क. d. विहू घोडा बांध्या चुहुवाड. ब., घोहोडा बेहे वंधा वार. क.

१०. a. विहू...जेतलु. ब., विहू जांणा चाला जेटले. क. b. ते लीधु... तेतलु. ब., तोली चंदांन आपु तेटले. क. c...आपिउ तेणी वारि. ब., c कमां नथी. d. वहीतरा-शरि. ब. वइतरां-सर भारज दीयो. क. अने कमां पछी एक चरण-" पाछो कुयर वडे यावीओ."

११. a. कुअर-पुठि वैहीतरा थया. ब., वइतरा. क. b. गाउ सात श्रवण-सर गया. ब., सात गाउ सोन-गर गआ. क. c. उभा वली सरो.° ब., जइ जोयु सरोवर-पाल. क d. शब न देषि तेणी डालि. ब., संभ नां दीठु वडला-डाल. क.

१२. a. हैइ वछ विमासि सोय. ब.,—आ कडी कमां नथी. b. इहां ऊपद्रव शाविजनु होय. ब. c-d. " पणि कोएक आव्यु इणि ठामि, कणि छोडिउ, कणि लोई जाय." ब.

१३. a. कुअर चाहीइ सर-तीर. ब., कुअर नेणे जुअि ते सीर. क. b.... °गलां नां ओलषि वीर. क. c. मन सधि दह दसि जोय. ब , मंन वीमांसि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राइ हंस वनि अंतर घणइ; पण नवि लाभि, साद नवि सुणि.
वहीत्रा–सिरि चंदन लीउ; पाछउ कुंयर काती गयु. १४
ते चंदन सुपिउं ते धणी; अचरिज वात कही आपणी :
"आपु थापणि जे तुह्म हाथि; हवि चालसुं अवर कहि साथि." १५

आघा पाछा पगलां भरि; थापणि मोसुं करवा करि.
दोठां बार रतन बे तुरी; लोभि सेठि तणी बुद्धि फरी. १६
धन भणीइ अनरथनूं मूल; धन अदेषु माथा–शूल;
धन––कारणि एक कूडा करि; धन–वदि सगासहोदर मरि; १७
कुणबा–रोस धनकारणि पडि; धन–कारणि एक वाहणि चडि;
धन–कारणि हुइ कृपण कठोर; धन–कारिणइ एक पइसइ चोर; १८

अनि दोहो दसि जुअ. क. d. करि साद सरला सर रोय. ब., सरला साद करीनि रुअि. क.

१४. a. गयु हंस अंतर वनि घणि. ब. गयो हंस वंन अंतर घांणो. क. b. पग न लाधि, साद नवि सूणि. ब., पग नव ओलषि, साद नव सुणे. क. c. वहीतरा–शरि चंदन लेय. ब., वइतरां–सर भारज दीयो. क. d. पाछु वली नगर आवेय. ब., पाछो कुयर नग्र आवीयो. क.

१५. a. चंदन लेई सूपिउ धणी. ब., ते चंदांन लेई सुपु धणी. क. b. अचिरीज. ब., अचरत वात सुणो अंम तांणी. क. c....थांपिणि ..तूम...ब., आपी जे थांपांण तंम हाथ. क. d. चालसू. ब. अमे जासु यवरांनि साथ क.

१६. a. °लां भरइ. ब, पूर्वार्ध–उत्तरार्ध ब—कमां ऊ० पा०. आघां पाछां पगलां ...क. b. थांपिणि...फरि. ब., थांपांण मोसो...क. c. दीठां...बि... ब., °न नि वेहेतोरी. क. d....सेठ...मति...ब., सेठ तांणी मत लोभे फरी क.

१७. a. धंन भांगे यंनरथनु मुल. क. b....उलषि...शूल. ब., धंन देषी मांथे आवि सुल. क. c. धंन कारांण एक कुडां करि. क. d. धनथी शगा शहोदर...ब., धंन कारांण सगा–सोदर...क.

१८. a. कटंव–रेस...ब., धंन–कारांण एक दोहो वंधव वढे. क. क.मां चरण ऊ० पा० छे. b. वांहण चढि. ब., धंन कारांण एक वांहांणज चढे. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन-कारणि एक नीद्र न करि- धन-कारणि राजा रणि मरि;
धन-कारणि रानि एक रलि; धन-वदि हाथे वूदावलि; (?) १९
धन-कारणि एक पाडि वाट; मारि अबला बंभण भाट;
धन सुकृतार्थ न, जे नरक थवि, वेचि पुण्य अनि भोगवि. २०
लोभि अर्थह ऊपरि द्रेठि; करि सकूड तव सूमण सेठि.
भणि : " चडउ अस्व पूठि पल्हाण, बार रतन तम आपुं आणि."२१
कुंयर तुरी छोडेवा गयु, एक चडु एक वागि लीउ.
अश्व ऊपरि जव दोठउ सेठि, बूब पडावि सूमण सेठि. २२
धाया लोक; न लाभि पार. तेतलि आव्यु नगर-तलार.
सेठि कुमर देषाडीउ; 'असाईत' भणी : बांधीउ. २३

---

c. °णि एक करि कठोर. ब., धन-कारांण कमां सामान्य छे., होअ कठण कठोर. क. d. ल्सइ प्रथवी पिसि...ब., घेहेर विसि. क.

१९. a...निद्र नवि ब., निद्रा नव. क. b. धन-लोभी एक राजा मरि. ब., रांण चढे. क. c. °णि एकज रलि. ब, एक राहानि. क. d. धन-कारणि एक वुधां वलि. ब., हाथि वुदां बलि. क.

२०. a. पाहाडि...क. b. ब्राह्मण अवला. ब., यवला, भ्रांमांण. क. c-d कमां नथी. c-d. "धन-कारणि एक नरनि स्तवि; विचि पून्य लेई भोगवइ." ब.

२१. a....अरथ...थई द्रष्टि. ब., लोभागर हैयु करि द्रीष्ट. क. b. करि कूड ...सेठ. ब., करि कुडां एवां सोवंन सेठ. क. c. भणि अस्व पुठि पहलांणि. ब., भांणे सेठ, लोहो अस्व पलांण. क. d. °न जिम आपू...ब., बाहार रतंन लो, आपु आंण. क.

२२. a. कुअर अस्व. ब.-क., छोडवा गयो. क. b. एक पहलांणि एक करि धरिउ. ब., एक चडो, एक करमां लीओ. क. c...उपरि...दीधी द्रष्टि. ब., घोहोडा उपर दीटी दोट. क. d....पडावइ...सेठ. ब., बुमज पाडि सोवंन सेठ. क.

२३. a. न लागी वार. ब., लाभे. क. b. तेटलि. ब, ततपण आवो नग्रतलार. क. c. कुअर ते. ब., c-d ने बदले कमां २६मी कडी पाठभेदथी छे; c-d नथी ज. d. अस्व हरीनि पाश पाडीउ. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरसु सेठि रा-लगुन गयु; चोर धरी राइ आगलि लीउ.
भणि सभा : "सेठि, लागि षोडि; चोर नही ए; मेलु छोडि'. २४
सेठि [भणि]: "राजन, अवधारि; सहू ए डाहं सभा मझारि.
मेल्यु चोर षाधि वार्लास, कइ मारि कि घर बालसि." २५
वाध्यु कुंअर षिमा मनि धरि, तव ते वीर विमासण करि :
'पाछिलां करम अछि आधार, अहां भोगवं तु पामुं पार.' २६
राजा भणि : सेठि, मनि धरु; विवहारीआ कहि ते करु."
तलारि चोर चलाव्यु जसि, सेरीइ श्रावक मिलीया तिसि. २७
आपणपा माहि मचकारि [द्रेठि]: "महेसरी भलु छि सेठि.
धोति कषाइ पहिरिणि, सरि सनान, सहू तापस भणि." २८
एक भणि : "मिथ्याती तजु; आठ कर्म काई ऊपारजु."
जोउ तलार तणी मनहोर: "आइ उपाइ मेलावु चोर." २९

---

२४. a. सूमण सेठ. ब., सेठ तलार तव सरसो थया. क. b. वीरधीर राय. ब., चोर करी चोटि लेइ गया. क. c....सूभा, शहू लागइ ..ब., सभा सहू किहि छि कर जोड. क. d....नहि...मेहेलु. ब., नोहोय चोर, अिनि मेलां छोड. क.

२५. a. राजा अवधारइ. ब., भांणि सेठ राजा एवीधार. क. b. शहू डाहू छि शभा...ब. सहू डायु तारी सभां मोजार. क. c. मेहेलिउ.. लागसि. ब., मिहिलो चोर कांही षंग...क. d. मुझ मारि कइ. ब., किहि मारसि कि बालि जसि. क.

२६. a. वांधिउ कुअर... धरइ. ब, बांधो कुअर वीमांसांण करि. क. कमां आ कडी २४ मी पहेलां छे. b.विमाशाण करइ. ब., हंसराजा दुष कंम वीसरि. क c. छइ करम ते पछि उधारि. ब., एसां करंम जे छि उदास. क. d. इहां भोगवू तु जांउ पारि. ब., भोगवीये आंणे संसार. क.

२७. a. धरउ. ब., राजा भांणे, प्रधांनजी, सुणो. क. b. °रीउ...तिम करउ. ब., विहिवारीओ किहि ते करो. क. c. तलार. ब., अत्र (?) चोर चलावो क. d. मारगि...मलीआ...ब., सेरीअ सहू जोवा मलसि. क.

२८. a. आप आप मचकारि द्रष्टि. ब., अहींथी दोढ कडी कमां नथी. b. श्रेष्ठ. ब. c. धोतीआं कषायां पिहिरणि. ब. d. करि स्नांन. ब.

२९. a. मिथ्यात्वी. ब. b...करम ऊपराजन करउ. ब. c. जु तलार तल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छक तलारनि लागि कानि: "राउत," भणि: "अमारुं मानि.
चालि चउहटि काजि अमारि;" गया तलारना तोडा बारि. ३०

हूकाहूंकि सांभली अति घणी; नरवि नारि तलारह तणी.
दीठउ रूपि राजकुंआर; घरि तेडी पूछिउ भरतार. ३१
तिणि नारि निवेदिउं सहू; स्त्री गिरुइ बोलि वुधि बहू :
"कूडु दोस चडावि कोइ; बालक मारि हत्या होइ." ३२
तेह नरनारि ईणि परि भणि : "आगि अपति नही आपणि.
मरण तणु भइ टालीइ; आपण धरमपूत्र पालीइ." ३३
लोक तलारि हाक्यु बहू; तेह दुह दसि नासी ग्यु सहू.
तेणि गोत्रज पूजी तेह तणी; कुंयर वधाव्यु बेटा भणी. ३४

मांनइ होर. ब., जोयु तलार तांणी मत होर. क. d. आय उपाय मेहेलावु ...ब., उपा करी मुकावु क.

३०. a. °नइ लागइ कांनइ. ब., लागो कांन. क. b. कहिउ अह्मारु. ब., रावत कहू आंमारु मांन. क. c...चुहुटि जै कीजि...ब., चोहोटि चालो मारांण काज. क. d. टोडा. ब., गओ तलार तेहे टोडां वार. क.

३१. a. हाकाहाकि हुइ अति...ब., हाकोहाक ते सवणे सुणी. क. b तलारां तणी. ब.,...नार तलारज तांणी. क. c. °कुआरा. ब.. रूपि दीठो राज-कुमार. क. d. °उ तलार. ब., घिहिर तेडी पुछु भरथार. क.

३२. a. तेणीइ नारि नर प्रतिबोध्यु. ब., तेहे न्यारी अिणी पिरि भांणे. क. b. श्री ग्यरुई बुधि जांणउ सहू. ब., पीउ घिहिर पुत्र नथी आपांणे. क. c. सोय. ब., कुडां दोस चडावो कोअ. क. d. बालक-हत्या माहारइ होय. ब., होय. क.

३३. a. ते...इणि...ब, तिहि नरनारी एणी पिहिर भांणे. क. b. आगइ अपत्य नहि...ब., आगि पुत्र नथी आपांणो क. c. °णउ जु भय. ब., मरांण तांणो अिनि भि टालीए. क. d. आपांण पुत्र करी पालीए. क.

३४. a. हाक्या. ब., लोक भलाते हूक्या...क; b. ते दहदश नासी गया शहू. ब., दोहो देसि नाहू...क. c. तिणि...आपणी. ब., पुजी गोत्र तलारज तांणी. क. d. कुअर. ब., कुयर वध्यावो वेटा भांणी. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुइ तलार-घरि उछव बहू, ग्या चर, सेठि जणाव्यु सहू.

तसि हंस वनि रषि भेटीउ; तेणि उपदेस सहोदर दीउ. ३५
कहु महामुनि न्यानप्रमाणि : "नयर काती न[र गयु] सुजाण.
अवधि छ मास त्रिणि दिन जसि, हुसि भेटि बेहू बंधव तसि." ३६

इसि उपदेस तीणि रषि दीउ; कुंअर काती तव आवीउ.
'जाणुं देषुं आगमि आज; देषूं कमि वीर वछराज ?' ३७
सधि पूछंउतु चउहटि गयु, कबाडी केल्हण भेटीउः
"सुधि सासतां हुइसि जि भणि, तां तमे आवु अम्ह तणइ." ३८
कुंअर पूछि जाति-प्रचार; सो भणि : "राजपुत्र परमार."
आव्यु अवर कबाडी लेउ, वहु रुवो कुवरतण एय. (?) ३९

---

३५. a. हूयां तलार-घिहिर मंगल...क. b. गया...जणाव्यू...ब, घिहिवर सेठ जणांवे...क. c. तिणि समइ हंस भेटीउ. ब., तिहिणि समि हंस रूषी भेटीया. क. d. तिणि. ब-क., दीया. क.

३६. a. कहि मांहामुनि ज्ञांन-प्रमांण. ब., कहू मुषथी नम्र-भ्रमांण. क. b. नगर कांती नश्चि जांणि. ब., कांती नगरी आवो राजंन. क. c. दिन त्रण हसि. ब., c-d अने ३७ a-b कमां नथी. d. भेटि हसि दो वांधव...ब.

३७. a. असु...तणउ रुषि...ब. b. कांतीपुर कुअर आवीउ. ब. c. जांणिउ जोउ आगमिच आज. ब., जोयु जोयु आगंम आग. d. किम. ब., कंम भेठसि वीर...क.

३८. a...पूछंतु चुहुटि गयु. ब., सीध पुछतो चोहोटि गयो. क. b. चेहेलण. ब., केलांण कबाडी भेटीओ. क. c. सधि सांसता हुइ तम भणि. ब., सीध सांसतो होसे अंम भांणे. क. d. तिहां घरि आवु तमे आपणउ. ब., तांहां लगि घिहिर रोहो आपांणे. क.

३९. a. वर्णविचार. ब., पुछि कुअरनी जातवचार. क. b. ते कहि. ब, सु भांणीअि यांमे पुत्र-प्रीवार. क. c...कुअर...लेय. ब., आवो कुअर कबाडी लेहे. क. d. डहु रुवे चुविण जु जेह (?) ब., भावि भगत करि छि तेहे. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांच पूत्र, वहूअर ते तणी; "अछि कलत्र मझ; हूं घर-धणी.
जा सुधि लुहु, रहु ता तमे. सरव जन भक्ति करेसूं अमे." ४०
वे जण घरि पुहुता तेणीवार; मात भणीनि कीउ जुहार.
"रहू आनंदि;" दि आसीस; "धन धन आज अमारु दीस." ४१
हंस कुंअर घरि छि तेहतणिः नवूं नवनिधि आवि आंगणि.
करि कटंब कलपवृष-सेव; सवि पारिषि, जम थाइ देव. ४२

---

४०. a. धणी. अ.,...पुत्र...तेह. ब., पंच पुत्र केलांणना धणी. क. b. °त्र, हू छू. . ब., असुर कुल भगत करि छि घणी. क. c. जिहां लगि शधि लहु, तिहां रहु तमे. ब., जांहां लगि सीध लोहो तांमो. क. d. ...भगति करसू अह्मे. ब., असुर-कुल भगत करीसु यांमो. ब.

४१. a. विहू...घर...तिणी...ब., वहू जांणा पोहोता घरबार. क. b. माय भणी तिणि करिउ...ब., माता भांणी तिनि कीधो झवार. क. c. सहू आंणंदिउ. ब., सहू आंनंद नि. क. d. धिन धिन. ब., धंन धंन रे आंमारुउ...क.

४२. a. °र रहि घरि...ब., हंस कुयर छि आंम तांणि. क. b. नित नवनधि आवइ आंगणि. ब, नवनीध यावि आंगांणि ब. c. करइ...वरष्यनी से[व]. ब., °म...व्रष...क. d. सहू सवारथनि ध्याइ देव. ब., सहू भांणे आंमारा देव क. कमां ४३मी पहेलां नीचेनो वधारो प्राप्त थाय छे—जे अमां चोथा खंडमां २ थी ६३ मी कडी तरीके छे, ज्यारे बमां चालु चोथा खंडनी ७१मी पछी छे; जुओ त्यां त्यांः—

"गओ यपुत्रीओ, पाट नही कोय. तव राजा बुध वीमांसी जोय.
ग्नांनवती छि नीसि भांणी; पुरी कलस आपो हाथणी.
प्रधांन ल्हरसो सहू को थायि; हस्ती पुठि चालो जायि.
वाजि पंच सबद नीसांन; जोहोवा यावा हंस राजंन.
राजपुत्र योलषो सही. कुयर भांणे ए चोली गेही.
गुण-बुध-पुरांण छि हंसराज. ढोली कलस नि आपु राज.
विठो पाट राजरीध घंणी, पंच पुत्र केलांणना धांणी.
हंस करि कांतीनु राज. मोहो न मेले वीर वछराज.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असि अवसरि वाहण पूरिणी स्रमण वस्त चडावी घणी.
पुष्पदंत कुंयर सज हूउ. परहुणि पूत्र चडिउ नाषूउ. ४३

हूई वेला गिहिगहीया सहू; हरषि हकारिउ; होसि लाभ [बहू].
हलहल करी पंथ जव करि, परहुण पणि आघूं नवि सांचरि. ४४

तव सेठि जोसी पूछीउः "जोतिष जोई आयस दीउ;
कुण इणि (परि) परहुणि पीडा करि;
कुवण उपाइ कुशलि जल तरि?" ४५

जोसी भणि : "जे थापणि हरि, तेहतणां वाहण इम करि.
तेहूं प्रतीकार तु जाणोइ, बत्रीस लक्षण नर आणीइ." ४६

भणी नाषूउ : "भरीइ सेसि, पाठवीइ परहुण परदेसि."
"तीणि पुरुषि चडी नवि तरि, तु वली जोसी घडी नवि धरइ." ४७

---

४३. a...शरि...पूरणी. ब., तिणे सांमे वांण पुराणी. क. b. चलावी. ब. सोवंन...चलावि घांणी. क. c. पुसपदंत कुअर शज...ब,. पुस्वदत... क.—थाय. c-d पहेलां कमांः—

"घोहोडा वेचावा प्रदेस मोजार. रतंन लेइ राषो भंडार."

d. प्रवण पुत्र परठिउ नांषूउ. ब., वांहाण नंषावा लेइ जाय. क.

४४. a. °या जन्न. अ., °यू. ब., हइ वेला नि नांगयां जाज. क. b. लाभ हसि बहू. ब., °रि होसिलाभ. क. c. धुरि लगि बिसि हरिरि (?) अ. भरो संमुद्र गली रव करि. क. d. प्रवहण ब. कवण उपाइ कुशलि जल तरिइः अ. पवंन आघो नव सांचरे. क.

४५. a. जोसी श्रेष्ठ ब.,...तेडीया. क. b. जोइ जोस नि आदेस ज दीउ. ब., जोस जोइ आसीस ज दीआ. क. c. कुण आंणि वांहांणइ पीडा करइ. ब., कांमांण कारांण जल वांहांण नव तरि क. d. कीहि उपाय कुशलि तरइ. ब., कांमांण कारांण पंवंन पीडा करि. क.

४६. a. थांपिणि. ब.,...भांणे जे थांपांण हांणे. क. b. तेहनां वांहण इमज करइ. ब., तिहिनां वांहांण जलवट क्यमां तरि. क. c. तिणि प्रकारइ जांणीइ. ब., तेहे प्रती शरे एटलु जांणीजि क. d. बतरीस लष्यणउ पुरूष आणीइ. ब., बत्रीस-लषांणो कुयर यांणीयि. क.

४७. a. भणि. ब., वांहांण भरी नांषो सेस. क. b. तु पाठ°...प्रवहण...ब., पाठवो परुणो प्रदेस. क. c. तिणि पुरुषि चडि...ब., वली जोसी यिणी परि भांणे. क. d. तु जोसी षडी नवि धरि. ब., तिणि पुरसे नीसि तरे. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठि सुणी थापणिनी रीति; तीणि संकेति चमकीउ चीति.
हीइ विमासि; धूणि सीस : " थापणि-धणी लक्षण बत्रीस. ४८
ते वाधि छि अनरथ-मूल; थाहरइ विसाम माथा-सूल.
आगि दीधा उषध आगि; तलार-बुधि-बलि आणिसु मागि." ४९
लेई भेटि फल-फोफल-पान गयु रा-लगुनि, तत्र लाधुं मान.
लागउ चरणि, रहिउ सिरि नामि : "हविह्र आयस मागुं, स्वामि." ५०
नवि बोलि ते गाढि सादि : "दाडा किम षाजि गज वादि ?
अमे वाणिया उधारु राइ; श्री-गरणा-सुपुं नवि थाइ. ५१
वचन तमारुं जे अवगणि : चोर-चरड बुद्धि बेटा भणि;
परधन हरीनि घर भरिउं; नगर तलार माथइ करुं. ५२
तमे वीनव्या ए जाणसि, मुझ मारि कि षेटि आणसि.
उलग मासि वाहण परठवु; चोर काटेवा बुधि आठवु." ५३

---

४८. a. थांपिणिनी. ब., थांपांणनी. क. b. तिणि...°किउ चिंत. ब., तिणि वचंने चमक्यु सीस. क. c. हैइ विमासी. ब., हैडि वीमांसि यांनि सीधां सीस (?). क. d. थांपिणि....लख्यण धणी छि. क.

४९. a. ते वधि अनरथनू मूल. ब., कमां आ कडी नथी. b. थाहर...माथि. ब., c. दाधु...अंगि. ब., d....वुध्य...मांणस मगि. ब.

५०. a पहेलां कमां एक चरणः—" मुजनि माहारि एहे नीधांन." a. लेइ भेटीयि फो°. क. b. °न, वाधिउं वांन. ब., गआ राय तव दीधां मांन क. c. लाउ...सर नांमि. ब., उभो रहो सीस नांमी तांहां. क. d. हवइ आयश हु मागू स्वांमि. ब., एकने बदले बे चरण कमां:—

" लगि चरांण करि प्रणांम. एक विनती सांभलो स्वांम."

५१. a. बोलाइ गाढि. ब , एमां बोलो ते घाडे साद. क. b. डांडां षाइ कुंजर वाडि. ब., एवु करि ते भाइनि काज. क. c·d कमां नथी; ब मां :—

" अह्मे वांणीआं, सूणि, माहाराय. सी गरणा सू वईर न थाइ."

५२. a. तमारां. ब., वचंन राजानां अवगुणे. क. b. मुषि बेटा. ब., चोर चोटि ते बेटा. क. c....हरी हरी घर भरि. ब , प्र-धांन केरि घर ते तां भडो. क. d....तलारि माथि करिउ. ब., नग्र तलारनि मांथि करो. क.

५३ मी कमां नथी. b. विनव्या जु. ब. b. का रिकि (?) षेटि अ., षेस. ब.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत्र तलार प्रति राजा भणि : " बेहु श्रवणि सुणु तम तणि.
पुष्पदंतनि पुरहुणि-आथि; मोकलि सोइ सषाइत साथि. " ५४
सोजि मोकल्यु सूणीनि दूउ: पुर-पहिठाण-धणी नाषूउ.
परहुण पग देइ बोलि मरम : " थापण-हंसि होयो धरम. " ५५
वछराज ईणि परि उचरइ; प्रवहण पुणि ततक्षिण तरि.
सेठि सीषामण देईने वलिः " तिम करयो जिम घंघल टलि." ५६

प्रवहण पवन-वेगि संचरि; दिन दिन नीरनि वेरि तरि.
जेहना मन मनोरथ कर्‍या, सनकावतीइ जई ऊतर्‍या. ५७
भेटिउ राइ आणंदिउ बहू; मिली विवहारीए वणजु सहू.
पुष्फदंत पिहिली वुद्धि करी, तेजी बेहू ते जे तुरी, ५८

---

c–d बमां ऊ० पा०. c. प्रवहण पाठवि. ब. d......कडावा वुध्य आठवि. ब.

५४. a. भांणो. क. b...°ण सूणि...तणइ ब., वेटो एक सुपो तंम तांणे. क. c. परवहण. ब., c-d क मां नथी. d. ते मोकलु सषाईति. ब.

५५. a. सुत मोकलावा शज तां हूउ. ब., वछ तेडो सुणो ते दुर. क. b. परवहंण–ठामि धणी...ब., ते तेडी आंणी नांषो उर. क. c. परवहण... देई पग बोलो मरांम. क. c. थांपिणी हंस होयो तम धर्म ब., थांपांण हंस हजो ते धरांम. क.

५६. a....इणीं...°रि. ब., °जा ते अिम ओचरे. क. b. पुनइ परवहण वेगि तरि. ब., ततषण वाहांण वेगि संचरे. क. c. सिठ...देई वलि. ब., सेठ सीषांमण देइनि वले. क. d. धांधल. ब., तंम करजो जे षिषि टले. क.

५७. a. परवण. ब., वीप्र वांहांण वे° ब. b. दीन दीन नीरमल नीर उतरइ. ब., दंन दंन नीर ते नवला करि. ब. c. जिहि मंन मांहां मनोरथ करि. क. d. शनकावतीइ जै...ब., जइ सनकावती नग्री उतरि. क.

५८. a...राजा, मांन दि वहू. ब., भेटा राय रांणी तांहां वहू. क. b. लिउ धवलहर वि°...ब., तेहे वोरिनि वांणजि सहू. क. c. पु:प्पदंतनि परवहण वुधि. ब., पुस्वदत पिहिली वुध करी. क. d. अरथि लीधि शघली शंधि. ब., गरथि वेचाया लीधा वे तोरी. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मइलि मंत्रि कूंअर कर कीउ, पहिरि उढण कंबल दीउ.
तुरी चारि ते आठवि, नितु नितु घोडा चारे सवे. ५९
कुंअर अश्व चारिवा जाइ; पूठि चडी बइसि तीणि ठाइ.
अति पागति-मति लाषि तुरी; धीरवीर मटि सरमि छुरी. (?)६०
जाणि घण घोडाना मरम; छत्रीसि दंडायुध-शरम.
जं बुचकारी लाषि तुरी, देषि गुषि चडी कुंअरी. ६१
बेटी तणी सनकभ्रमराइ, चित्रलेहा नामि बोलाइ.
रूपि रूअडी अपछर जसी; देषी वीर वात मन वसी. ६२
कुंअरी वाराइत पाठवइ : " जाणी आवे लक्षण सवे. "
जिहां कुंयर, तुरी निराइ, ते दासी ते थानकि जाइ. ६३

---

५९. a. माल कुअर करि लीइ. ब., विहिवारीए मंत्र भंन कीयो. क. b. उठणि पिहिरणि...दीइ. ब., ओडांण पिरांण धावलो दीयो. क. c. आपि छोरू वतू पाठवि. ब., आपा तोरी वंन पाठवि. क, d. न्यत न्यत...चारइ सवि. ब., नीत घोहोडा चारांण संचरि. क.

६०. a. कुअर अस्व छोडेवा जाय. ब.. चारवा जाअ. क. b. चडि पुठि षेडि तिणि ठाय. क., चारां पुठि षेडे राअ. ब. c....पाग नंषावइ तुरी. ब., नेगत-पंगत नांषि तोरी. क. b. °र ते सरमइ छूरी. ब., वीरवछ ते फेरवे परी. क.

६१. a. जांणइ ते घोडा घण मरम. ब., जांणे घांणु घोडाना मरांम. क. b. डंडायूध-सरम. ब., छत्रोसा उहूदना (?) जांणे सरांम. क. c. जिहिजिह कुअरी नाषि तूरी. ब.. जेहे जोइ करी नांषि तोरी. क. d. दीठउ राषि गुषि कुअरी. ब., दीठी गोषथी राज...क.

६२. a. वेटी पीता शनकब्रह्मराय. ब., वेटी सनकभ्रंम राजा तांणी. क. b. चीत्रलेषा नांमि कहाय. ब., नाम ते धांणी. क. c. रूपि रंभ अपछरा जिसी. ब., रूप रंभा अवछरा जेसी. क. d. मनि ब., मंन. क.

६३. a. कुअरि वीरवित पाठवि. ब., तेहे वात राजा विनवे. क. b. जोइं आवेला लष्यण सवि. ब., जोइ आवि लषिण अस्व. क. c...कुअर नरवाहन राय. ब., d. ततष्यण पुहुती तेणी ठाय ब. c-d ने बदले तेम ज ६४ मी अने ६५ a-d ने बदले कमां:—

" आवो जांहां वछराजा रिहि. बत्रीस लषिणो कुअरनि किहि. "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीठउ कुंअर अश्व आवरिउ : 'करि कंद्रप इ इंद्र अवतरिउ !
सूर्य सामी छाय सीस; अवला रोम; लक्षण बत्रीस.' ६४
राजकुंअर मनि जाणु सही; आवी वात कुंयरि प्रति कही.
"सुणि चित्रलेषा," बोलु मर्म; "ए वर पामु तु मोटउं कर्म." ६५

श्रवणि सुणा गुण दीठा नयणि; लागु वेध विरह मन मयणि.
गई मा-मंदिरि सरसी सही; वात-विवाह जणणि प्रति कही. ६६
तव राजा राणी वीनव्यु; जोसी तेडी लगन परठवु.
अनेक रा नुत्राव्या सोइ; सयंवरा तणी सजाई होइ. ६७
सेन सभट सरि छत्रड माल, आव्या भड भूपति भूपाल.
उछव-कलिरव-पार को लहि ? मिला लोक मंडपि गहिगहि. ६८
आठमि इसि लग[न], रविवार; राजकुंअरि कीधु सणिगार:
कि रतिपति किं लषमी लली, कइ कुयरि परठी पूतली ! ६९

---

६४. a....कुअर आव...ब. b. करि अभिनवु अनंग अव...ब. c. सूरज सांहांमी छाया...ब. d. अवल...लष्यण...ब.

६५. a. राजकुअर न जांणिउ...ब. b. वात वाराचत जणणी प्रति...ब. c. सूणि चित्रलेहा बोलू धर्म. ब., सुण चीत्रलेषा बोलु मरांम.क. d.... पामू तु मोटू करम. ब.,...पांमि तो मोटां करांम. क.

६६ मी कडी बमां नथी; कमां:—
" सवांणे सुणो गुण दीठो निणि, व्रेहे लागो वीध्यात्या वीण.
गइ मंदरमां साथि सही. वात वीहीवानी जइ मानि कही. "

६७. a...रांणी प्रति विनव्यु ब., तेहे रांणीअि राजा विनवो. क. b. लगन पाठविउ. ब. लगंन पाठवो. क. c....राय नुहुतराव्या सवे. ब.,...राजा नुतरीआ सोअ. क. d...°वर...शजाई हवे. ब., सीवरा तांणी सगाइ होअ. क.

६८. a...सूभट...ह्ममाल. ब.,...सुभटसर छत्रमाल. क. b. आवि. ब., आव्या सरवे भुपत भुपाल क. c...कलीरव-पार नवि लहि. ब. c–d कमां नथी. d. भली...गिहिगिहि. ब.

६९. a. आंगि उलट लगन विचारि. ब., आगि मलानो नां जांणु पार. क. d. शणगार. ब.. °रीअ कीधो संणगार. क. c. लष्यमी. ब., आनंद ओछव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करइ-कामनी विचित्र वरमाल; रूप देषि रंजइ भूपाल.
जोवा आव्या उछव अपार, पुष्फदंत सरिसु परिवार. ७०
हस्तिराज मंडपि संचरि; कुमरी निरंद-निरीषण करि.
जे जे मेहलि अंतरि राउ, ते आपणि ऊतारि जाइ. ७१
रा बुल्या; गज चाली गयु; पुष्फदंत हीयडि हरषीउ :
'आपण माहि पारसी करइ; डाही स्त्री टीटा नवि वरि;' ७२
गजगति चालि भल भेदि; वर लगि आव्यु वडइ विछेदि.
न्यानवंत छि निसि सहिउ; पट हस्ती पग षंची रहिउ. ७३
कुंयरि सषी प्रति पूछइ भेउ : "मझ वर नर नवि देषुं तेउ.
मइ उलषीया ही-होर; ए सवि [छइ] चुहटाना चोर." ७४

यती परीवार ब., d. कि कुअरि कठपूतली. ब., मला लोक मंडप भुपाल. क.

७०. a. करि...वचीत्र...ब., करि कांमनी वचीत्र विचार. क. b. रंज्या. ब., रीझा भुपाल...क. c...आव्यु वछकुमार ब., सरसो आवो छांनो अपार. क. d. पुःप्पदंत सिरसु परीवार. ब., पुस्वदंत सरसो परीवार. क.

७१. a. हंसराज मंडप सांचरि. ब., वछराजा मंडप. क. b. कुअंरी नंदनरीष्यण करइ. ब., राजकुअरी तेनु नीरषांण करि. क. c. जे जे अंतर मेहेल्या राय. ब., जे मेले ते बोलि राय. क d. ते ते आपणि उतारि जाय ब., ते आप आपणे उतारि थाअ. क.

७२. a. राजा वाली गज चालीउ. ब., राजा वोलावी वीर नरषीओ. क. b.पुःप्पदंत हैडि. ब., पुस्वदंत हैडि हरषीओ. क. c. आपण पा मांहि... करि. ब., एक एक मांहां...करि. क. d. टिटा. ब., डाइ कुअरी नीहाली वरि. क.

७३. a. गज ते चालि वडि वछेद. ब., गजगत चाले ते वली भेद. क. b. °गि नर वेद. ब., वर आवि ते चढे वसिक. क. c. नसि गन्यांनवंत छि रदि. ब., ग्नांनवंती ते नीसि सही. क. d. रहि. ब., पग अस्त्रीनो षांची रही. क.

७४. a. कुअरी शषी प्रति पूछेय. ब., कुयरी सषीनि जांणवि भेद. क. b. मुझ वर ते नवि देषू सोय. ब., देव वर देषी ते वेद. क. c. मि उलष्या हैआना होर. ब., मिहि ओलषो हैडानो होर. क. d...सघला. चुहुटा...ब., ए तो सही चौटानो चोर. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति मनषोभ कुंयरि तेह तणि, छइ कंबल पहिरि-उढणिः
वछराज लाजि गलग्रहिउ, पाछउ प्रसन्न एकलु रहिउ. ७५
वछराज जव दीठउ नयणि, गज ऊतरी हंस-गय-गमणि.
पुरह पहिठाण तणा भूपाल परठी कुंअरि कंठि वरमाल. ७६
कुंकुम चंदन चरचु जमलि [द्रो अष्यत मेहेल्या स्त्री-कमलि.]
इस्यु बोल बोल्यु तीणि ठाईः " जनमि जनमि तमारा पाइ. " ७७
राज माहि सहू झांखु थयंः " ईणी बेटीइ अणजाणिउं कीउं.
वरिउ सु वर अणवरि न होइ; वेगि करी परणावु सोइ. " ७८
बापि अवगन्या कीउ वीवाह; राजकुंअरि परण्यु नरनाह.
पुष्पदंत प्रति राजा भणि : " कवण पुरुष ए छइ तम तणि ? " ७९

---

७५. a. मनछोभू कुअरी तेह तणइ. ब., मंन वीमांसि तेहे आपांणे. क. b. अछि...पिहिरणि...ब., छि ए धाबल ओढांण पिहिरांणे. क. c. वछराज राजा संग्रहिउ. ब., वछराजा ते लाजि ग्रहो. क. d. पाछु प्रछन. ब, प्रीछो नही ते पाछल रह्यो. क.

७६. a. जु. ब., वछराजानु दीठु वेण. क. b. गजथी...हंसगतिगमणि. ब., गजथकी उतरी म्रघानेण. क. c. पर पइठांण तणउ...ब., प्र पेठांण तांणो भुपाल. क. d. कुअरी कंठि ठवी...ब., आरोपी तिनि वर...क.

७७. a. चरच्यां ब., लीटी कमां ऊ० पा०. कंकमचंदांन चंद्रावली. क. b.अक्षत लेइ सरवे टोले मली. क. c. अशा बोल बोल्यां तेणि ठाय. ब., एसो बोल बोली तिणे ठाय. क. d. जीवत मरण तमारा पाय. ब., मरांण-सरांण हू तोरि पाय. क. आ पछी कमां वधारेः—

" वछराजा रांणी पांमीओ, हंस भाइ ते हइडे रह्यो. "

७८. a. झांषू थयूं. ब., राजा राजमां झांषो थयो. क. b. इणी कुमरीइ अणप्रीछिउ करिउ. ब., आंणप्रीछो कुअरीए कीओ. क. c. वर वरिउ अणवरिउ न होय. ब, वरी तेहे आंणवरी नां होअ. क. d. वेग...सोय. ब., वगि करी परणावो सोय. क.

७९. a. बापि वारू करिउ वीवाह. ब., वाहापे कुअरीनो करो वीहीवाअ. क. b. राजकुअरि परणाव्यु राय. ब., राजकुअरी ते पांमी नाअ. क. c. पुःप्पदंत ब., पुस्वदत...मांणे. क. d....पुरूष अछि. ब., एहे कुण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भणि सेठि : "उत्तम नवि थाइः पाणी पीई घर पूछि, राइ.
घोडा चारि ए अम तणि; जाति अनामिक सहूको भणि." ८०
"धिग धिग मूर्ष," राजा भणी; " आप वटाल्युं ईणि पापिणीइ.
कूड करीनि काढु बाहि. आवि रषे रा-लगुन माहि!" ८१
वली विमासी राजा कहि : "आगि उदरनी सवि दोह दहि.
ए जीवती मूई मनि धरो, नगर-छेह घर आपु करो." ८२
जेतलि राजा मुषि ऊचरिउ, तेउ बोल जणि ततक्षिण करिउ.
छानु धान पान पहिरणुं; नाम न लि कोइ तेह तणूं. ८३

उत्तम नरनारी मनि धरि; दिन दिन भगति भलेरी करि.
लोक-वोक-मुषि मोटां बहू; लापा लवी रहेसि सहू. ८४

कहीअि घिहिर तांमु तांणे. क.

८० मी बमां नथी; कमांः—
" सेठ भांणे उतंम नही थाय. पांणी पीही घर कंम पुछाय.
घोडा-चारांण छि मुज ताणि. जात नीच एम सहयि भाणे."

८१. a. धीकधीक राज इम भणी. ब., फट रे मुरष, राजाअि भांणि. क. b.वटालिउ इणी पापिणी. ब., आप वटालु रे पापांणी. क. c....करी कढावि राय. ब., कुअरीनि काढो घरबार. क. d. रषे आवि. ब., रषे आवि अहीओरी मोजार. क.

८२. a. वात विमासी. ब., वात वीमांसी. क. b. शविकि दहि. ब., आगि ओदरनी सहूनि दहि. क. c–d पहेलां कमां ८३ c–d. c. एह वात राजा मनि...ब., मुइ जीवती मांइां जोसो मंन धरी. क. d. आपिउ. ब., नगर वारि आपो घर करी. क.

८३. a. उचरि. ब., जे जे राजा मुषथी ओचरि. क. b. ते सेवक ततष्यण करि. ब., तेहे बोल सहू साचा करि. क. c. छांनू...पिहिरणू. ब., बहू नीधांन पिरि पेषणु. क. d....ली कोए...ब., नांम नां लेसो कुयरी तांणु क.

८४. a. उतम. ब., उतंम वर नार मंन धरी. क. b. करइ. ब., दंन दंन भगत करि छि घांणी. क. c. मोटां होय. ब , लोक-मुकतां. ब. d. लंपढ वीनवि रिहिसि सोय. ब., लांफु लवीनि रिसि सहू. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा प्रछन तेडाव्या माल: "तम करयो जिम टलि साल.
मर्दन-मसि टालयो संधि; लेउ लाषयो करीनि कंधि." ८५
कहि-न नामु; कवि सर्व नसुणिः चमरु भमरु गजु गुडस्स भणि.
बलवंत माल च्यारि चालीया; मर्दन-मसि तेणि मंदिर गया. ८६
कुमरी कूड जणाव्युं कंत; बइठउ पाटि पोति पहिरंतु.
कुंयर विद्या विषम निबंधु, चिहूं माल टाल्या कर-कंध. ८७
अबला मुष, अवला कर कीया, जेठी वली पाछा आवीया.
राजसभा-मनि अचिरज वसि; बोलावतां बिरद सहू हसि. ८८
गया प्रधान, मान मागीया; कुयर करसूं सवला कीया.
बइठा जेठी पाछा पाय. पुनरपि राजा रचि उपाय. ८९

---

८५. a. रांइ प्रस्न. ब., राजायि छांना तेडा मंल. क. b. ए जमाई मुझ जीवत-साल. ब., ये जमांइनु टालो साल. क. c. मरदन-मसि टालेयो... ब., मंजंन-मसि उतारो कंध. क. d. लेई नाषज्यो. ब., लेइ नांषोजो करीनि संध. क.

८६. a. कहि नांम, वात सरव सूणु. ब., कहू नाम त मंलां तांणु. क. b. भमरडु रूडी परि भमु. ब., जांमर भंमर गुड गंज तांणु. क. c.... च्यारि माल आवीआ. ब ,...मल चाली आवीआ. क. d. मरदन-मसि घरि आवी रहिया. ब., मंजंन-मिसि अतीओरी गआ. क.

८७. a....कंथ (?) जणाव्यू कंत. ब., कुअरी कुडां जांणवि कंथ. क. b....पांहि धोति पिहिरंति. ब., बिठो पाट पोतीयु पडछंद. क. c. कुअर ...ते बुध्य. ब., वछराजा वीषंम छि बंध. क. d. बि मालना कर टाल्या कंध. ब., मलां तांणु उतारु कंध. क.

८८. a. कीआ. ब., सवला मुष ते यवला कीआ. क. b. आवीआ. ब., जेठी ते पाछा आवीआ. क. c. °सूभा मांहि अचरीत विसि. ब., राजा नि मंन यारूज वसो. क. d. सूणी वात नई सहुको हसि. ब., बोलो नही पांण मंन मांहां हसो. क.

८९. a. परधांन...मागीआ. ब., गआ...मागीआ. क. b. कुअरि कर मुष... कीआ. ब., यवला मुष ते सवला कीआ. क. c. बिठा...जाय ब., पछि जेठी त पाछा जाआ. क. d...राय रचिउ...ब., वली राजायि रचो उपाअ. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तव पांडव प्रति बोलइ राइ. "पंचकल्याण तुरी लेइ जाइ.
मृगया-मसि करयो असवार, जस्यउ जमाई लाधइ पार. ९०
उच्चैश्रवा अमर तोषार, स्वापद गध ते तिहि अवतार,
क्रमि गरभवास तेणि लाधु, कोइ न चडि, छि इस्यउ अगाध." ९१
सनकभ्रम राजा बुधि करी : "उपवाद होसि एह तुरी.
अश्व ऊडेसि प्राण प्रचंड, ए धरि पडसि; होसि शतषंड." ९२

सवि साहणी सबल सज थया; सकल संधि-बंध लेई गया.
कामिनि-वचनि कंत धडहडि; कसी पलाण अश्व ऊपरि चडइ. ९३
तेतलि पंच सबद-सर सुणिउ; धूजी धर; हयवर हणिहणिउ.
मति-पागगति राजा लगि गयु; हणिउ साट, तव अश्व ऊडोउ. ९४

---

९०. a. तव पुनरपि (?) प्रति. अ., बोलि राय. ब., तव प्रधांन प्रति बोला राअ. क. b. लेई जाय. ब., पंचकलांणी तोरी लेइ जाअ. क. c. मंगल मसि करज्यो. ब., म्रघ-मसि करो...क. d. जिम जमाई लाभि पार. ब., जंम तंम यिनो. क.

९१. a. साचु अस्व अमर...ब., युचा अस्व तेजी...क. b. तेहनु अव... ब., साटक हणे (?) षेत्र अव...क. c. करम गरभवसि तेहनु लाधि. ब., करमि ते अवतार ज लीयो. क. d. तेहनि कांधि चढि कुण साधि. ब., तिणि यसवार किहिणि नव कीयो. क.

९२. a. शनकभ्रमरांइ. ब., रायि बुध ज. क. b. ए उपवाद टालेसि तूरी. ब., एहे यसवार होसि तुरी. क. c. उडसि. ब., अस्व उडसि ते प्रछंद. क. d. पुनरपि पडतु होसि खंड. ब., एहे पडतो थासि सत षंड. क.

९३. a. सरवस मांणस सबल सज हूउ. ब., सजंन जे करी सुध लोहो. क. b. अस्व छोडीनि लेई गयु. ब., सकल वाडव सुध लेवा गयो. क. c. कांमिनी-वचने कुअर धड...ब., कांमनी देषी कुअर धडहडो. क. d. करि पहलांण अस्व उपरि चढि. ब., कसी पलांण नि उपर चडो. क.

९४. a. जेटलि पंच शवद जब सूणिउ. ब., एटलि पंच सवद ते सुणो. क. b. धरा धूजी,...हणि...ब., धरती ध्रुजि, हि हि हांणो. क. c. पग पागडि राजा जव चढिउ. ब., गत पंग राजा लगि गओ. क. d...साटि. गयण उडी गओ. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतरिक्षि अवघडु तोषार, नवि सलकि आसण असवार.
सरव जनि भणि : 'देवता कोइ; नसि ए नर मनुष्य न होइ.' ९५
नरषि नगर-लोक घण तुरी; चडी गुषि रा-अंतेउरी.
घोडु वाय-वेगि गम करि. कुंयर भमता पंषी धरि. ९६
विपरीत वात हीइ न समाइ. पाछउ वलयउ विमासि राइ.
जव नरवर धवलहर गयु, वछ[राज] मंदिर आवीउ. ९७
राउ-प्रधान विमासइ इस्युं: 'हवि मुख दार्षीजइ कस्युं ?
ए वर वर वरीउ सुजाणि; आपण वरास्या वचन-विनाण.' ९८
बेटी प्रति कहाव्युं राइ : "अम अणूरूं लागि, माइ.
अवसि उत्तम तूं-भरतार. नाम-ठाम-कुल कहे विचार." ९९
राजा-आइस आवी सही; कुमरी कंत-चरण लेई रही :
"एकु देह आपण, धर्मनाइ ! प्राणनाथ ! अंतर करि काइ ? १००

---

९५. a. °रीष अस्व तोषार. ब., अत्रीक उडो तेजी...क. b. नवि शलकि आशन अशवार. ब., नव सलकि उपर असवार. क. c. होय. ब.,... भांणि एहे देवता कोअ. क. d. ए नर अवर न घटि कोय. ब., वेगत कीरीअिनि पुछो सोअ. क.

९६. a....लोकना तुरी. ब., नरषि लोक मुनीष ते षरी. क. b. घोडु पवन-वेग गति करी. ब., (जुओ. c) नरषि गोषथी राजकुयारी. क. c. सहू लोक जोतां सम धरि. ब., घोहोडो पवंन-वेगि संचरि. क. d. कुअर भमंतां. ब., तंम मंन वीमांसांण करि. क.

९७. a. व्यपरीत वात हैइ न समाय. ब., a–b कमां नथी. b....वली... राय. ब., c. तु राजा धवलग्रह...ब., जव राजा धवलघिहिर गयो. क. d. मंदीरइ. ब., तव कुअरीनि मंदर आवीयो. क.

९८. a. राय प्रधांन विमासि असू. ब., राजा प्रधांन वीमांसि येणे. क. b. एह मुष दाषीजि कसू. ब., b–c कमां नथी. c. एवड्ड तु कुमरी सूजांण. ब., d....विणासू...प्रमांण. ब., आपांण भुला वचंन प्रमाणे. क.

९९. a. कहावि राय. ब., बेटीनि किहि, बोलावो, राय. क d. अलूणू. ब., आमां यलुणु क. c. उतम दीसि छि तूझ भरथार ब., उतंम वरीओ तिहि भरथार. क. d. कहु. ब., पुछो वचार क.

१००. a. तु राजा आयस आविउ. ब., राजानी एवी आगना लेइही. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वली वली हूं, वीर, वीनवूं, जे पुण जीभि लापी लवुं.
प्री-सरसी प्रेमी जूजूई; किहा हूं, इसी[अ] भगती हई ? १०१
नाथ, न बोलि वात विरामि, जे पुण मनि म[न] वुंचउ, स्वामि.
मनवा, कुण गोप सवि तुझ ? पंथी प्रीय प्रकास-न गूझ. १०२
जनमि-मरण हूं सरसी साथि, माहरा प्राण, नाथ, अछि तुह्महाथि.
आवी माइ-बाप सहू तजी. नवि बोलु, स्युं अंतर तू हजी ?" १०३
कुंअर भणि : "कस्युं बोलीइ ? दुःखि डंक जिम पूरउ हीइ.
हूहे प्रेमि दहिउ दव-रीति; ताहारा बोल ते चउहटि चीति." १०४

गाथा

"स्वामी, तुज्झ म अवगणि, वंधी वंधेण प्रेमपासेण."
प्रीऊ पूछीउ पयासि, सुणि [?सुणेवि) संकेत साव सारीछा. १०५

---

b. कुअरी चरणे लागी रही. ब., कंथनि चरांणि लागी जैही क. c. एक... धरमनाह. ब., एक देही धरम ते नाहे. क. d. करइ कांइ. ब., प्रांणानाथ अंतर लोकाए. क.

१०१. a. वर विनवू. ब , वली वली तंमनि विनवु. क. b. जे पणि जीभि लापू लवूं. ब,, जे परणु जीभे फुलवु. क. c. प्रीऊशरसी प्रेम...ब., पीउ सरसी प्रीत ज नही क. d. हू कांअसी अभगती हूई ब., हू कांइ अस्त्री अभागणी. हूइ. क.

१०२. a...बोलु...विरांम. ब., कंथ नां वोले वात वीरांम. क. b. जे परणिउ मनवंछित स्वांमि. ब., जे परांणे मन न वसी स्वांम. क. c. मन-नागणसू गोपवी मूझ. ब., १०२ c-d अने १०३ a-d कमां नथी. d. पंथी, हवि प्रकाश-न...ब.

१०३ मी कडी बमां नथी. a-b कमां—

"माता मारी ते बापे तजी. मुज सरसो अंतर लो हजी."

१०४. a. कुअर कहि, कसू...ब., कुअर भांणे, हांमि सु बोलीये. क. b. दूषडंक अह्म पूरउ हैइ. ब., दुष घांणु छि रे मुज हैये. क. c. आपण बेहू उपनी प्रीति. ब., ओदर भरवु दंन नि रात. क. d. ते विसि चिति. ब , तांहां राजा बोला नि आवा पास क.

१०५ आ गाथा ब--क मां नथी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चउपई

भणि नारि : " पूछउं कर जोडि. आगि हुइ अजाणि खोडि.
कुहु कुल-नाम-ठाम-दसि-देस; मात-पिता कुण नगर-निवेसु?" १०६
" पुर पइठाण अमारु ठाउ. पिता अमारु नरवाहन राइ.
मात अमारी हंसाउली. अमे बि पुत्र-युगल जूअली" १०७

चिहूं षंडे बुद्धि जूजूई, एतलि त्रिहूं समापति हूई.
सर्वजनमति "असाईत" कहि : कथा षिणंतर तु [कवि] कहि. १०८

---

१०६. a. पूछु. ब., भांणि नारी पुछु कर जोड. क. b. षोडि. ब. आगि हूआं कुण जांणे षोड. क. c. कहीइ...ठांम कुण [दे]स. ब., कहु नांम ठांम मारो देस क. d. कुण माता-पिता नरेस. ब., मातपत्या कहु नरेस. क.

१०७. a...पिठांण...ठाय. ब., परपेठांण आंमारो ठाय. क. b. पितानांम नर-वाहनराय. ब., अंम पत्या नरवाहंनराअ. क. c. माता अह्मारी. ब., मांता मारी हंसावली. क. d. अह्मे बि पुत्र जनम्या...ब., बिहि पुत्र जिडु ए जंनमा वली. क.

१०८. a. चिहु षंडे छि मति...ब., चार षंडनी बुध जुजवी. क. b...त्रतीय समा-पत...ब., एटले कथा सांमापत हवी. क. c. सरव जनमन **असाईत** लहि ब., सरव जंनम **असाइत** लेहे. क. d. तु कवी कथा ष्यणंतर कहि. ब., कथा एक क्षणु एकमां किहि. क.

पण आ छेल्ली कडी पहेलां **क**मां नीचेनो विशेष छे:—
" बापि मोकलीआ परदेस, पंडीति भांणावी वीदा वसिक.
मात्या मंत्रीयि मरावीया, प्रधांन छांना चलावीआ.
वंन वेगि वेगला गआ, तांहां करंम-भोग आंमारा थआ. "

सरवाळो अ: १०६ (?१०८); **ब**: ३३६ (त्रणे खंडनो मळी); **क**:१०३

पुष्पिका:—

अ. इति चतुर्थ षंड समाप्त ॥

ब. ईति हंसाउली त्रतीय षंढ संपूरणं ॥ ३ ॥

क. (कांइ नथी).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ खंड

[चउपई]

" लहुडु हंस; वडु वछराज; विविध देसनु पाम्युं राज.
बिहू बंधव देसुटउ हूउ; लुहुडु हंस सर्पडसि मूउ. १
ते मि वृक्षि-डालि बांधीउ; चंदन-काजि काती गयु.
लेई काठ आविउ जेतलि, कर्म-विसि जीवी गयु तेतलि. २

[दूहा]

तव लग्गइ अमे थ्या जूजूआ, यूअली यादववंश.
हवइ इणीपरि हीयडु [द]हि, गयु भोलावी हंस. ३

बनो आरंभः—श्री ॥
कनो ,, : हवि चोथा षंडनी कथा ॥ षंड ॥ ३ ॥

१. लुहुडु. ब., लोडो...वडो...क. b.... नू पांम्या. ब., ववीध देसना पांम्या राज. क. c. बइ बंधव देसुटु...ब. बिहि बंधव देसारांण हुआ. क. d.लुहुडु सरप डसिउ वनि मूउ. ब., लोहोडेरो भाइ मारो सरपडस मुआ. क.

२. ब-कमां ऊ० पा० a. ते वनमां डालि बांधी[उ] ब., तेहे भाइ डाल बांधीओ. क. b. हू कांती. ब., चंदांन-कारांण चोटि गओ क. c. लेई चंदन आवू. ब., लेइ चंदांन आवो जेटलि. क. d. जीव्यु बांधव गयु ब., करमि हंस जीव्यो तेटलि. क.

३. अमां मथाळे गाथा; बमां दूहा; कमां तो २जी कडी तरीके छंदो-निर्देश विना ज चालु चोपाइमां. a....लगि थया. ब., दोहो जंनममरांण लगि नही. क. b, जूअली ...वंस ब., घोहोडां कलांणी हैहे दही. क. c. हे कल्याण ही अ., हइडू. ब.,जुजुआ मला जादववंस. क. d. भोलवी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[चउपई]

तव हूं काती नगरि गयु; सेठि थापणि मोसु कीयु.
वाहण साथि कढाव्यु करि[अ]: इहा आविउ तु ति वर वरिउ." ४
नाम-ठाम कुण जाणि ठाउ, तेतलि तिहि पधारिउ राइ.
सरसु परथु[वि ते]नि परधान कुंअर मनाव्युं; मागिउं मान. ५
राउ भणि : 'सीषवीइ. सेठि; क्रोध लोभ मि ति मिली द्रेठि.'
कुंअर भणि : 'षमा परमाथि; भलि आव्या अमारि साथि.' ६

दूहा

अवगुणि अवगुण, गुणिहि गुण, ए लोका-विवहार.
अवगुणि गुण, "असाईत" भणि : तेह नर वडु विचार. ७

चउपई

राइ पहिराव्या; हरष मनि बहू; जं जोईइ तं पूरि सहू.
कुंअर क्रमगति भणि सचीत; पुष्पदंत-सूं आणि प्रीति. ८

ब., हतो ते वली भलो हंस. क.

४. a. सविहु नगर काती गयु. ब., नवी नगर कांती आवीओ, क. b. थापिणि...कीउ. ब., सेठ थापण मोसो कीओ. क. c. काढिउ वडु करी. ब., वाहांण साथि कढावीओ. क. d. इहां आव्यु तु तूह ज वरी. ब., आंही यावो तो ते तां वरो. क.

५, बमां आ कडी नथी. कमां:—

" जांहांणु नांमठांम कल ठाअ, येटले तांहां पधारा राय.
सहू परवार आंनि प्रधांन, कुयर मंनावीनि मागि मांन. "

६. a. श्रेष्ट. ब., राजा भांणि, सीषवीआ सेठ. क. b. लोभइ क्रोध मनति द्रष्टि. ब., लोभ हूओ नि मरडी भ्रष्ट. क. c. क्षिमा. ब,. कुअर भांणे, मांहां करसो वात क. d. भाई भणीति आव्या साथि. ब., भाइ भांणीनि आंमे थावा साथ. क.

७. आ दूहो कमां नथी. ब. मां नीचे मुजब छे:—

अवगुणी जे नर करि, असाईत, वडु विचार;
अवगुण केडि गुण करि, ए उतम आचार. "

८. a. राय-परीवार तव हरषिउ सहु. ब., राजा परीवारे आनंद बहु. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिणि क्रमि वछराज पंति गरिउ, तेणि क्रमि हंसराज आदरिउ,
जे घरि हतु कबाडी तगि, तेहनी बात सुणु हवि [घणि]. ९
हतु नगरि तेणि श्रीभद्रराउ; मृत हूउ ते करमि-पसाइ.
गयु अपुत्रीउ; पाटि न कोइ; तव प्रधान बुधि कीधी सोइ. १०
ज्ञानवंत जे नलि गणो, पूर्ण कलस आपु हाथिणी.
सर्व लक्षण-गुण-जाणा जेण, हंसराज-सिरि ढाल्यु तेणि. १२
बइठउ पाटि; राज-ऋधि घणी; केलणना पांच पुत्र ते धणो.
करि कांती नगरोनुं राज; हंस न मेलि मुकि वछराज. १३
मेलापक-अवधि सांसती; किहां कांती, किहां सनकावती.
हंसराज वछ सागर-अंतरि, अन्योअनि बेहूनि दुष धरि. १४
सनकावतीइ सीधां काज; पुष्पदंत वीनव्यु वछराज;
"[इहां] रहि परदेशी थाईइ; हवि आपणि देसि जाईइ." १५

हूउ मंत्र सहू सामहिउं. वछराज कामिनि-प्रति कहिऊं.
वाजि वत्रि पडि पूतली, राजकुंयरि तव धरणी ढली. १६

---

b. जिहां जूइ तिहां षरु अति बहू. ब., जे जोए ते पुरि सहु. क.
c. कुअर करम जोई नि रीती. ब., कुयर भांणि, जुओ करांमनी गत. क.
d. पुःपदंत हवि आंणि प्रीति. ब., पुस्वदत मांडीनि प्रीत. क.

९. बमां ९ थी १३ सुधीनी पांच कड़ी चालु ७१मी पछी आवे छे. कमां पण अहीं ते नथी; परन्तु आ पूर्वे त्रीजा खंडमां ४२मी पहेलां वधारानी पांच कडी जे तेमां छे, ते ज पाठभेदथी आनी आ छे.

१४. a. मेहेल्या पुःस्प आगलि सासती ब., पुस्वदत आवि सांमती. क. b.कांहां क. c. हंस-वछ ब. c-d कमां नथी. d. अन्योअन्य बिहू दूष धरइ.ब.

१५. a. सीधू. ब. b. पुःस्पदंत विनव्यु...ब. a-b."पुस्वदत विनवि वछराज, करु विनती सांभलो आज." क. c.इहां आव्या परदेसी छईइ.ब., आंही रहा परदेसी कावीये. क. d.आपण पाछा वलीनि जईइ. ब., आवो तो आपांणि नग्र ज जैये. क.

१६. a...सहूइ गिहिगहियू. ब., येवु मंत्र रायि सांभलु. क. b. कहियू. ब., वछराजा रांणीनि कहू. क. c. वाजित्र वाजि पढि पूतली. ब., वाज वज्र नि पडी पुतली क. d...कुअरि...धरणि...ब., कुयरी ते धरांणी ढली.क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करि वाराइत अनेक उपाइ; वाला–वीजणे वीजि वाइ.
बालिउं चेत तव ऊभी थई; माइ–बाप मोकलावा गई. १७
राणी–सुं [तव] रोइ राइ. सहू चाली आव्युं तेणि ठाइ,
सनकभ्रमराइ सुप्यु देस : "बइसइ पाटि जिम भरीइ सेस." १८
कुंयर भणि : "अवधारु राइ, राजऋधि छि तम पसाइ.
दहि दुष, तीणि नवी रहुं, जे पुण हंसराज–सुधि लहुं. १९
सुधि जाणी आवुं जेतलि, तुम कुंयरि राषु तेतलि."
कुंयरि भणि : 'कुण राषण आहि ? पूठि झंपावुं सागर माहि." २०

मोकलाव्यु सनकावती–धणी; हूइ साहमणी कुंयरी तणी.
दंतस–मेडी रतन–आथि; एक वाराइत सुंदरि साथि. २१

---

१७. a. करी वाय तव अनेक उपाय. ब., करे दासी अनेक उपाअ क. b.वाला तणे विजणे वाय. ब., करे कांमनी विजंण वाय.क. c वलिउ... बिठी थाय. ब , चेत वलु नि बिठी थइ.क. d.माय बाप मोकलावा जाय. ब., माए बाप मोकलीआं जइ. क.

१८. a. रांणी मंत्र सरीसु राय, ब., रांणी रोति सहू रोवाअ क. बमां १८ b–c–d अने १९ a नथी. b सहू चाली आवु तिणि ठाय. क. c–d. "सनकल राजायि सुपो देस, बिसो पाट, भरावु सेस." क.

१९. a. कुअर भांणे, येवीधार राय. क. b. अछि राज तूम्ह तणि प्रसाद. ब., राजरीध छि तंम पोसाअ. क. c. हईइ दूष तिणि नवि रहू. ब., आंणे देस तो हू नव रहू. क. d.पाछउ वलू तु हंस–सधि लहू. ब., जांयु तो हंसनी सुध ज लेहू. क.

२०. a. सधि...आवूं...ब., सुध लेइ आवु जेटले क. b. तम कुमरी. ब., तंम कुअरी राषो तेटले. क. c. भणि अबला, हू आवीस नाह. ब., कुअरी किहिणे राषी नव जाय. क. d. बमां "हूं झंपावीस शागर माहि" आ चरण पहेलां बे चरण वधु छेः—

"त्रिहिदू[ष] हैडि न समाय मूझ मूकी जासू भरथार."

d. कमांः–"पुठेल जंपावे पांणी माय."

२१. a. मोकलावा शनकापुरधणी. ब., मोकलावी संनकावतीधांणी. क. b. करि सजाइ कुअरी...ब., हू जै सीषांमांण कुअरी तांणी. क.—बमां आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करीय भेटि सागर सिरि नामि : " कुशलि ऊतारे सरिसा सामि."
जलि मेहलु एकाउल हार; प्रवहणि चडी, सरिसु भरतार. २२
हकारिउ जलि सागरि तरि; वाउ–वेगि वाहण संचरि.
दिवस बिच्यारि हूआ जेतलि, तेह आंतरद्व तड तेतलि, २३
प्रवहण भीतरि मेडी–दंत; रमि सारि बइठा एकंति.
हेरि सेठि जिहां जालीउं, पाछइ आवी पीटि हैउं. २४
कही वात सेवक हकारि : " त्रिभूवनि अवर इसी नही नार.
साथि आज्ञ्या अमे बे जणा; दीजि दोस करम आपणा." २५
तव बोल्या सेवक सिर नामि : " मनि वैराग्य म धरस्यु, सामि
नर नाषसिउं नीर लेई घणि; एउ कलत्र होसि तमतणि." २६

चरण पछी:—' रतन जडीत शघलु शणगार. कंकण कुंडल नवसर हार."
c. दीधी सीषांमण नरनाथ. ब., आपी रीध रतंन ते होय. क. d...वारा॰
यत मोकली...ब , एक दासी मोकली ते स थ. क.

२२. a. कुमरी शमूद्र पूजि सर...ब., करी भेठि सागर सीर नांय. क.
b. कूसलि ऊतारे मुझ स्वांमि. ब., कुसल उतारे अस्त्रीनि स्वांम. क. c. जल
मेहेलिउ. ब., सागर चडावो एकावलनो हार क. d. प्रवहण चडी सरसी
भरथार. ब. कमां नीचेनां त्रण चरण d सहित छे:—
" कुसल उतारे अस्त्री भरथार, जल मेलो एकावल हार;
प्रहूणी चडी, सरसो भरथार."

२३. a. हकारयां बांहण संचरि. ब., वांहांण हकारि सागर तरि. क. b. पवन
–वेगि पंथ–जल तरि. ब., पवंन पंच वेगि संचरि. क. c. देवस बि चार
थुल्या...ब., दीवस बि–चार हूआ जेटले. क. d. भरसमूद्र गयां तेतलि.
ब., संध सागर आवो तेटले. क.

२४. a. वांहण भीतरि कुमरी रमंति ब., प्रहूणी भीत्र मेडी–दंत. क. b. सार पासे
वि कांमिनी कंत. ब., रांमि पासा कांमनी नि कंथ. क. c. हरे सेठ जांहां
जांषीयु. क. d......वलीनइ कूटि हैऊ. ब., पाछल रहीनि पट भालीयु. क.

२५. a. किहि सेवक, सेठ अवीधार. क. b. °न मांहि नथी एहवीं नारि. ब.
त्रीभोवंन मांहां नथी येवी नारि. क. c. अह्मे बेहू जणा. ब., साथि आग्ना
बहू जणा. क. d. करंमदोस दीजि आपणा क.

२६. a...बोल्या...सर. ब., बोला...सर नांम. क. b. मन वीषवाद म धरसु;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीधू कूड रयणि तीणि ठाइ. एक भणि : "जल माणस जाइ."
वाणी [तव] वछराजि सुणी, आव्यु अचरिज जोवा भणी. २७
टोलि थई रह्या सवि बूड; कुंअर न जाणि : करसि कूड.
कुतिग जोवा राय्रि चडु, जल नाषिउ तव सागरि पडु. २८
[विद्यामंत्र तणउ ते सार; पडतु वछ भणि श्रीकार.
पडतु ग्रहिउ माहा ते मछ, जीवतु तडि मूकिउ वछ.] २९
राजकुंअरि पडिउ–सद सुणी, ऊठी बिहू करि हीअडुं हणी.
'प्रीऊ पापीए समुद्रि नाषीउ; विषम दाह अम दैवि दीउ.' ३०

राग वइराडी

सुंदरि [सर]सी सांचरी, जोइ जलमाहि कंत.
रुदन करि; नयणां भरि; "प्रीऊ, प्रीऊ" भणंति. ३१

स्वामि. ब., मंन विराग मांहां आंणसो स्वांम. क. c. ए नर नांषेसू ते [जल] घणि. ब., नर नांषसु नीर अती घांणे. क. d. कुमरी कलत्र. ब., ए अत्री होसि तांमां तांणे. क.

२७. a. इ°, रहिया तेणि ठाय. ब., कीधु कुड ते रिणी माय. क. b. जाय. ब.,...भांणे, जल मांणसु जाय. क. c. वछराज ते अचरीज सूणी. ब., वांणी वछराजायि सुणी क. d. कुहुतिक.ब., आवो कौतक जोवा भांणी. क.

२८. a. टोले रहिया सवे ते भिछ. ब., टोले मली रहा सरवि बुड. क. b.करि कलगली, मरडि मूछ. ब., कुअर नां जांणि तिनु कुड. क. c.ऊतावलु थयु जोवा चढिउ. ब., कौतक जोवा आवो भांणे. क. d. ढोली नाषि सा° ब., नांषो नीर ते जल यती घांणे. क.

२९. आ कडी अमां नथी; होवानो संभव छे, केमके आ पछी क्यांय पण वछ केवी रीते कांठे आव्यो ते आवतुं नथी. कमां नीचे मुजबः—

"वेदो मंत्र तणयु ते सार, पडतो वछ भांणे सीकार.
पडतो ग्रहो माहा ते मछ, जीवतो तिडि मुकीयो वछ."

३०. a...कुमरी पडछंदा सूणी. ब.,...कुअरी पडछंदा...क. b...कर हैडू... ब., उठी वेहू कर हैडु. क c. पापीइ कंथ समूद्र नांखीउ. ब., पापीयि कंथ संसुद्र नांषीयो. क. d. विषम दोस तां दैवि...ब., वीषम दोस तांहां दैवि दीओ. क.

३१. विराडी. ब., वेराडो.क. a.संचरि रे. ब., सुंदरी सरसी संचरि रे. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ककलि कामिनि; बाला वरहि विरामि:
'जलनिधि जीव तूं जालवे; तूं शरणागति स्वामि. ३२
अमर असुर अही आवरीया अंतरि उदक मझारि;
उदधि पणि अमतणउ प्राणनाथ ऊगारि." ३३
बे अबला ऊअरि आठवि; विघटइ विलंब संघात;
कंठि-तटि फाली परठवी, करवा झंपापात. ३४

---

b. कंतो. अ. जल मांहि जूइ रे कंथ. ब., जल मांही जोइ रे कंथ. क. c. रुदन...रे. ब., रदांन करि नि नार निणां भरि रे. क. d. प्रीऊं प्रीऊं भणंतो. अ.,...प्रेम भणंति ब., पीउ पीउ प्रेम भणंत. क.

३२. a. कांमिनी रे. ब., कर ले कांमनी रे. क. b. विहिणी करि विलाप. ब., विहूणी करि रे वलाप. क. c. जल विण जिम माछिली रे. ब., जल वना जांम मांछली रे. क. d. लागू पूरव भव पाप; कर लि० ब., लागु पुरव भवनु पाप कर ले. आंचली क.

३३ मी पहेलां ब-क एक कडी वधारे आपे छे:—

" एकलडी अतिदूष धरइ रे, पीऊडा लिउ मुझ साथि.
जोवानि जाइसू सी परि रे, आ उदक मेहेलिउ तूम हाथि. कर लि०" ब
" एकलडी अतीदुख धरि रे. पीउडा लोओ मुज साथ.
जोवानि जांयु सी पिरि रे, आ उदक मेहेलीयु तांमु हाथ. कर ले०" क

३३. a. अवर पुरूष मि परीहरया रे. ब., अवर पुरष मीही परीहरा रे. क. b. अंतर. ब., अंतर उदक मोजार. क. c. जीवत सील न षंडीइ रे. ब;-(षंडीए रे) क.

३४. a. बोलि अबला दूष भरी रे. ब., बोले अबला दुख भरी रे. क. b. घडीय विलंब संघाति. ब., घडीयि वलंभ संघात. क. c. कंटि-लंकी भाली भणि रे. ब., कंठी लंकी भाली भांणि रे. क. d. करि-न झंपापात. ब., करनि झंपापात क. ए पछी एक कडी ब-कमां वधारानी छे:—

" भणि असाइतः जल बोलीउ रे: शमूद्र स्यरसु स्वांमि.
तुडश (?) सरणागति स्वामि, सरण-सरण मुझनि दीउ रे.
मलसि तोरउ स्वांमि. कर लि० "ब
" भांणे असाइतः जल बोलीयो रे: समुद्र सरसो स्वांम.
सरांण सरांण मुजनि दीयो; मलसे रिहि तोरो स्वांम. कर ले० "क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भणि "असाईत": जल बोलिउं: "जे अम आपु हारि,"
"रहि, रहि," रतनागर कहि: "तारिसि तू-भरतारि." ३५

चुपई

रतनागर पुनरपि बोलीउ: "तूं-भरतार काती गयु.
हुसि भेटि; म धरेसि दुष-दाह." सुणी सबद गई मेडीमाहि ३६
आवी पुष्पदंत-दृष्टि ई: 'कुंयरि कलत्र अमारी हूई.
नवि जाणीइ कस्यु विचार, समुद्र झंपाव्यु तूं-भरतार, ३७
तेहनुं दुःख म धरस्यु कस्यूं; जं जोई ते अमे पूरिस्युं.
रूपि रूअडु नि धनवंत, एहवु लाभि करमि कंत. ३८
पीहर तु मेहल्युं पर-तीरि; ए मुग चडसि एणि नीरि.
विलंब न कीजइ वेलातणु; ईणि विहिरि हवि हा ज भणु'. ३९

---

३५. a. बोलीउ रे. ब., भांणे असाइतः जल बोलीयो रे. क. b पडती हती जिवार. ब., पडती हूती जेहे वार. क. c. रिहि रिहि...भणि रे. ब., रेहे रेहे, रतनांगर भांणे रे क. d. मलसि तूझ भरथार, करलि० ब.,- (तुझ) क. आ पछी एक कडी ब-कमां वधारेः—

"अदत अह्मारु इणी परि रे, पीउ परदेस देषाडि.
शागर समरथ विनव्यु रे, मुझ स्वांमी जीवतु देषाडि. कर लि०" ब
"एहे दत आंमारु एणी पेरि रे, पीउ परदेस देषाड.
सागर समरथ वेनवो रे, मुज स्वामी जीवतो देषाड, कर ले०" क

३६. चुपै. ब., चोपाइ. क. a. पूनरपि. ब., रतंनागर एणी पिरि बोलीओ.क. b. तूझ भरथार कांतीइ...ब., तुज भरथार कांती गओ. क. c. होसि भेट दूष म धरेस लगार. क. d. वेडी अ., सूणी शबद. ब.,...गइ मेहेडी माय. क. ३७ थी ३९ ए त्रण कडी कमां नथी; ब मां ३७ a-b ने बदले चार चरण छेः—

"पायक पुःष्पदंत प्रति कहिः कुमरी कलग तूमारी हूइ.
आवी पुःस्पदंत विष्टईः विरूइ वात अनाहत हूइ."

c. न जांणीइ किसि विचार. ब. d. जल झंपाव्यू सागर मांहि. ब.

३८. "तेहनू दूष" ए शब्दो आपी ब प्रति एक पाना माटे तूटे छे, ते फरी ५१ c-d थी चालु थाय छे.

३९मी कडी कमां नथी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धि कुंयरि बोली सोइ : 'हवि दुष कीधइ कुण गुण होइ ?
दिन केतला सांसता रहु, कारण अछि, सेठनि कहु. ४०
मइ सांभली शास्त्रनी भास : वरस नही तु रहि छ मास.
विणु उजम्पा नारि नर वरि, थाइ प्रेत तिहां पीडा करइ." ४१
पाछु गयु विष्टई वीनवि : "कही वात स्त्री ज्ञाही सवे.
हुसि प्रेत कुंअरि-भरतार, तीणि मरम तम किहि विचार." ४२
मानी वात सेठि; भु धरि; वाइ-वेगि वाहण संचरि.

सागरि हार तुरंतु कीउ, तेतलि कुंयर कांती गयु. ४३
अति ऊसनु, नही उरि आहि. वछराज गयु वाडीमाहि.
वृष-छाइह निसि रयणी, पुढ्या छाया आंबाभणी. ४४
कुंअर पुढ्या तणा प्रभावि, फूल्यां फल वृक्ष नवभावि.
लोक आर्यना मारगि वहि, पडोसी मालणि घरि कहि. ४५
वात विचित्र अपूरव भई; मालणि मनरंगि जोवा गई.
वृष नवपलव दीठा सवि. 'कोई कारण' ते स्त्री आठवि. ४६

---

४०. "बुध कुअरी तांहां बोले सोअ, हांमि दुष कीधि सु होय.
हंस केटला सांसता रोहो. कारांण कुअरी (?) प्रति कोहो." क.

४१. "एम सांभलीए सास्त्र-अभयास; वरसे नही, पण रहीये छ मास.
वर उजवे नरनार वरि, थाअ परेत नि पीडा करि." क.

४२. "पाछा वली सेठ वेनती करि, वात रांणी डाइ वेनवे.
किहिसि प्रीति कुअरी भरथार, सांमुद्र उतरीनि पेले पार." क.

४३. "मांनो बोल, सेठ मन धरो, वीप्र वांहांण वेगि संचरो.
सागर स्वामीयि रूडो कीओ, तेहे कुअर कांती आवीयो." क.

४४. "अती उसंन, निहि वली साय गओ वछराज वाडीमाय.
वछतांणो ते कोही नही धांणी; पोहोडो छांयेडे आंबा तणी." क.

४५. "कुअर पोहोडो ते प्रमांण, कलकले बहू वछ एधांण.
लोक बहू ते मारग विहि, जइनि मालांण प्रति किहि." क.

४६. "वीप्रीत वात अपुरव थइ, मालांण रंगि जोवा गइ.
वछ नीसपलव दीठां सवे; कांक कारांण, सही देवता येहे." क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिहुं दिसि चाहि उदम थोउ; दीठउ नर छाया पुढीउः
"पायपदम कुंकुमवानि; नसि ए नर नहीं [कोइ] समानि." ४७
ते त्री बोलावि तेणि वारि. जागिउ कुंयर; कीउ जुहार.
दि आसीस नि पूछि वात : "तमे एकला कि छि तम साथ?" ४८
कुंअर भणि : "उधारु माइ, अछुं एकला करम-पसाय.
मनि संतोष हूउ एतलि; तूं माता मि भेटी भलि." ४९
दुषीइ दीठइ दुष सांभरि; मालणि लोचन पाणी भरि :
"अम ग्यां पांचइ पुत्र-भरतार; नव को पाणी पायणहार. ५०
वछ, रहि रहि;" रामणि भणि, "धरम-पूत्र तुं अमतणि."
तेह स्त्री तणु बोल मानीउ; कुंअर मालणि-मंदिर गयु. ५१
नितु दि पुत्र प्रति बहूमान; अनि दिइ [फल] फोफल पान.
कुंअर गुंथि बहू बुधि फूल, नितु आवि ते त्रिगणूं मूल. ५२
दहि हंस आगइ उरिथीउ; अनि वली नारी-विरह वाधीउ.
मनि झूरि मालणि-घरि रहि; कहिनि पूछि नइ कहिनि कहि ? ५३

---

४७. "चोहो दसि जोयु नि उजंम थओ; दीठो छांयिडे नर पोडीयो.
पाये पदंम नि ककंमां-वांन; नीसि नर कोय नीही ए सांमांन." **क.**

४८. "मालांण बोलावि तिणीवार; उठो कुयर नि करो जवार.
दिहि आसीस नि पुछि वातः तांमे येकला किहिनि साथ." **क.**

४९. "कुअर भांणि येवीधारो माय; छु एकलो करंम-पोसाय.
तु माता मली जेटले, मंन संतोक वालो तेटले." **क.**

५०. "दुषीआ दीठि दुष सांभरे, मालांण आंषे यांसु पडे.
गआ पांच पुत्र भरथार; नथी कोय पांणी पांनार." **क.**

५१. a-b. "वछ रोहो, ते मालांण भांणि; धरंम-पुत्र रोहो घिहिर आपाणि." **क.** c. × × ग्रू (?) तणउ बोल सांसहिउ. **ब.**, मालांण तांणो बोल सांभलो. **क.** d. वछराज तिणि मंदीर... **ब.**, ततषांण तिनि मंदर गओ. **क.**

५२. a. नितू दि माय ज्यात्रानि मांन. **ब.**, नीतनीत दिहि पुत्रनि मांन. **क.** b. अंनउदक नि फो° **ब-क.** c. कुअर गूथि वहूविध... **ब.**, कुअर गुथी बांधि फुल. **क.** d. तिणि आवि बिमणू मूल. **ब.**, नीत नीत आवि तिनां मुल. **क.**

५३. a. आगि हंस-मन दहिउ. **ब.**, आगि हंसि दुष बहू दीओ. **क.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोडा दिनमाहि श्रवणे सुणी, आव्या वाहण वधामणी.
प्रवहण मंदिरमाहि नांगरिउं; सहूइ तहि आवी ऊतरिउं. ५४
राजकुंअरि धुरि डहिली ठवी, भीतरि दंत तणी मांडवी.
आवइ विवध वधावा वहू; पुष्फदंत प्रति भेटि सहू. ५५
लोकमाहि वाणी विस्तरी : पुष्फदंत परणिउ कुंयरी.
सुणी वात मालणि गहिगही; घरि आवी कुंयर प्रति कही. ५६
अिम भणि; विगति नवि करी : "नित आपु एह घरि पातरी.
फूल विवेकी आपु बहू, भेटं पुष्फदंतनी वहू." ५७
आगि जाणइ कुंअर सुजाण चित्रलेहाना देह-प्रमाण.
कंकण केवि कुसुम करठाणु, हीइ हार निज नाभि-प्रमाण. ५८

---

b. नारी तणउ विरह व्यापीउ. ब., वली नारे विहिर भे दीयो. क.
c–d बमां नथी; कमां–" मंन जुरि मालांण घिहिर रेहे, केनि पुछि, केनि केहे."

५४. a....देवस...सूणी. ब., थोडे दाढे सवणे...क. b. आवी वांहणनी... ब-(वांहांणनी वधांमांणी) क. c....समूद्र...नांगरयां. ब., वीप्र वांहांण संमुद्र नांगलु. क. d. बमां आ चरण नथी. "सहू आवी तीरे उतरुं."क.

५५मी वमां नथी; कमांः—

" राजकुअरी धरांणी ढली; भींत्र दंत तांणी मांडवी.
आवे ते वधांमाणीया बहू, पुस्वदंतनि भेठे सहू."

५६. a. सूभट लोकमांहि विस्तरया. ब., वांणी यिम वस्तरी. क. b. पुःप-दंत...कुअरी. ब., पुस्वदत परांणी यावो कुवरी. क. c. सूणी वात गह-गही. ब., सुणी वात मालांण घिहिर गइ. क. d. " घरि आवी कुअरनि कहिउ; (अने वधारानुं १ चरणः—) मालणि तणू मन गिहिगहियू. " ब., आवी वात कुअरनि कइ. क.

५७. a. इम भणि वगति ज करी. ब., ये तो वीगत करी यंम भांणी. क. b. नव आपू जइनि पातरी. व. नीत यापो ये घिहिर पात्री. क. c....ववेकि. ब., फुल ववेक तांहां आपो वहू. क. d. भेट्ट पुःप°.. ब., भेटो पुस्व°...क.

५८. a....जांणि कूअर सूजांण. ब.,...जांणु कुअर सुजांण. क. b. चीत्र-लेहानि. ब., चीत्रलेखा नांम प्रमांण. क. c. कंकण कंचूतक बांण. ब., कंकम केतकी केसर ठांण. क. d. हैइ...नीज. ब., हैये हार ते नांम-प्रमांण. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरणमेषल कुसुम-कुली; कीलो पंचवर्ण कांचली.
फडसं केतकि काजलक्रम (?), लषी कुशल सहीत मर्म. ५९
छाबभरी कुसुम करि लीउ; पहिलु पुष्फदंत भेटीउ.
सो भणि : "गुडर-उलग जाइ, राजकुंअरि तम दीइ पसाइ." ६०
गई गुडर मालणि उलसी; दीठी देवि अपछर जसी.
उलग दृष्टि कीधी जसि, राजकुंयरि चित चमकी तसि. ६१
पान-फूल तजि लगि ताजि; अवर न आवि कुंअरि-काजि.
जउ लष्युं [दीठुं] कंतनुं नाम, करी भेटि नि करी प्रणाम. ६२
जे जे बोल निरषि ज्ञानि, सवि आभरण अंगनि मानि.
उरि उडवी कुसुम-कुंचकी, दीठुं [लषिउं] फडस केतकी : ६३

---

५९. a. चरणु चरण कुसुम मेषली. ब., कंठमेषला कुसंमनी कली. क. b. पंचवरण कीधी जूअली. ब., पंचवरणी गुथी कांचली. क. c. फलस केतकी काजल-मरम. ब., लषु संकेप ते काजु करम. क. d. लषिउ कुसम सासत-मरम. ब., लषु कहू सती रती मरंम. क.

६०. a. डालू फूल भरिउ करि कीइ. ब., छाव भरी कुसंम क लेहे. क. b. पिहिलू पुःपदंत भेटीइ. ब., पुस्वदतने भेटो लेहे. क. c. मालणि प्रति श्रेष्ट इम भणि. ब., कुयर भांणे, गुजर लगि जाय. क. d. कुमरी पुःप करू भेटणि. ब., राजकुअरी देसे पोसाय. क.

६१. a. गइ मालणि मंदिरि उलसी. ब., गइ गुजर मालांण. क. b. दीठी रंभा अप°...ब, दीठी नार ते अवछरा...क., c. जव ते भेटिज कीधी जसि ब., यं लंग द्रठ दीधी तेतसी. क. d. कुमरी काजि न आवि कसि. ब., राजकुयरी ते चंत ओलसी. क.

६२. a....फूल नि फोफल त्याजि. ब., पांन फोफल लवंग ते ताय. क. b. अवर कसू न आवि काजि. ब., यवर नर आवि ते काय. क. c-d पहेलां वमांः—

"मालणि पुःप ऊछेली धरि, कुअरी नयण नरीष्यण करि."

c. जव उलषिउ धणीनू नांम. ब., जव लषु दीठु कंथनु नांम. क. d. लेइ भेटिनि कीधा....ब., लीधो भेट नि करी प्रणांम." क.

६३. a. जे जूइ फूल नि पांन. ब., जे जोये ते नरषे नांम. क. b. सरव आभ्रण ते देहनि मानि. ब., पुस्व आभरांण ते यंग समांन. क. c. उर ऊठवी कुसम कूचकी. ब., उर योठांण कुसंम कंचुकी. क. d. दीठू लषिउ फलस....ब., लषु दीठु पत्र केतकी. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'म धरेसि दुष,' यादवरा भणि; 'अछि कुसल मालणि-घरितणि.
नंद-नारि ऊषाणु मिल्यु; अम तम समुद्र सहीआरउ टलिउ.' ६४
जेतलि जोउं जिह्वा भणिउं, बेहू करि कामनि हीयडुं हणूं.
मर्म-वचनि उरि वरि आकुली; कल लागी; कामनि धर टली. ६५
धूजि मालणि, मनि लछमछिः 'कहिसिः डोसो डाकिणि अछि'.
बे आस्वास्त्रि सुंदरि साइ; वालिउं चेत करीनि वाइ. ६६
राजकुंयरि मालणि प्रति भणि : "कवणि कुसुम गुंथ्या तमतणि ?"
मालणि विनय वीनवि घणइ : "गुंथ्या पुप्फ पूत्र अमतणि. ६७
कुंयरि भणि : "ति पाडयं षात्र. जूठूं म कहेसि तूं तिल मात्र."
मालणि बोल बोहती कहिउं : "धान-वडि छि आवी रहिउ." ६८

---

६४. a. लषिउ मंदीर पुःप यादव भणि. ब., दुष मां आंणेस वछ यिम भांणि. क.
b. अछू कूशल घरि मालणि तणि. ब, छु मालांण घिहिर सलषु तांणि क.
c. नंदाराय-उषाणउ मलिउ. ब., नणंद-नार ओलषाणज मलु. क.
d ...तूम समूद्र...ब., अंम तंम सैआरू टलु. क.

६५. a....जोई जिहवा भणि. ब., जेटले मालांण जाव्या भांणि. क.
b. बिहू कर कांमिनी हैडु हणि. ब., वेहू कर करी हैडु हांणि. क.
c. मरम वचने कुअरि आ°...ब., मरंमवचंने त्रेहे याकुली. क. d. मूरछा कांमिनी धरणि ढली. ब., कर ली कांमनी धरांणी ढली. क.

६६. a. लडथडि. ब., ध्रुजि मालांण मंन लछपछि. क. b. हसि. ब., किसि, मालांण डाक्यंण हसि. क. c-d बदले बमांः—

" लागू पेला भवनूं पाप, रूइ कूअरी करि संताप.
कसू भूत कि लागू माय, वालिउ चेत करी उपाय. "

c-d. " बहू वीमांसि ते मंन माय, वालु चेत नि नांषी व्याय." क.

६७. a. राजकूमरी. ब, ते रांणी मालांण प्रति भांणि. क. b. कवण कूसम गूथ्या तूम....ब, किहिनि गुथां कुसंम तंमां तांणि. क. c. बि कर जोडी बोलि वात. ब., मालांण तेनि बीती भांणि. क. d. पूत्र माहारि गूथ्या मात. ब., कुंसम गुथां पुत्र मुज तांणि. क.

६८. a. कुमरी भणि : तिणि पाडिउ षात्र. ब., कुयरी भांणि, तेणे पाडां षात्र. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रीऊ जाणि अबला मनमाहि; लषी वीनती बलती पानि :
"मालणि, म डरेसि हस्या माहरा; बीडुं आपे पूत्र ताहरा." ६९
मनि गहिगही मानि तेहतणि; गई मालणि मंदिर आपणि.
सकल स्वरूप कुंअरि पूछीउं; तव स-लषिउं ते बीडुं दीउं. ७०
पत्र लषिउं दीठउं तेणि ठामि : "सील अषंडित छुं हूं स्वामि.
अम्ह अरि मर्म प्रीय पाठवे, अवर पुरुष मझ बंधव सवे." ७१
इसि अपूरव वाहणतणा, जाणि लोक मल्या तटि घणा.
हंसराज कांती[इ] ठाउ; तिहां डांगरु बजावि राइ; ७२

---

b. जूठू म बोलेस तिल...ब., जुठु मांहां बोलेस तल येक मात्र. क.
c-d पहेलां बमां:—
"अम घरि लषिमी लीधी घणी. साचू कहि, संभलावेस घरधणी."
c. मालणि बीहती मन तव कहिउ. ब., मालांण तिनि बीती कयो. क.
d....वडि घरि आवी...ब., धंन वाडीमां आवी रयो. क.

६९. a. पीउ जांणिउ अवलानि मांन. ब., पीउनु तो जांणु येधांण. क. b.... विनती...पांन. ब.,...विनति चंपा पांन. क. c....बीहेस हशा....ब., मालांण, बोल मांने माहरो. क. d. बीडू ब., बीडु आले कुंयर ताहरो. क.

७०. a. मन गिहिगहि वचन तेह...ब., कमां a-b ऊ० पा०. मंन उलट ते यती घांणे. क. b. मंदीर मालणि....ब., गई मालांण मंदर आपणे. क. c. कूअर पूछीऊ. ब., सकल सरूप तिणि परीषीयु. क. d. तव ते सलषू बीडू दीउ. ब., तव सलषुथि बीडु दीयु. क.

७१. a....लषि दीठऊ तिणि...ब., पात्र लषु दीठु तिणि ठांम. क. b. हू छू. ब., करी विनती, सांभलो स्वांम. क. c. अशा मरम पीऊ आठवि. ब., मरंम वचंन पीउनि पाठवि, क. d....पुरुष मुझ बांधव सवि. ब., यवर पुरूष मुज बंधव स्वि. क.

७२ a पहेलां ब, उपर ९ थी १३ सुधीनी कडीनी जे पांच कडी; त्यां नथी आपवामां आवी ते अहीं नीचे मुजब आपे छे:—

"जिणि दिन वछराज चालीउ, तिणि दिन हंस प्रथवीपति हूउ.
तिहां हूतु श्रीप्रभ राय; पांमिउ मरण ते करमपसाय.
गयु अपूत्र, पतृ न होय. तव प्रधांन वुधि कीधी सोय.
पांच शवद वाजित्र सूणी, पूरव कलस ढालि हाथणी,
विठउ पाटि षांडानु धणी; केलि तणा पूत्र पांचि सूणी.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वनि वियोग हूउ तेहतणि; विकलु सदा सभा इम भणि :
'उच्चरि:' आपुं अर्द्धि राज, जे सुद्धि कहि वीर वछराज.' ७३
इसिउं वचन सागरि तटि भणिउं, सनकम्रम-धुअ श्रवणे सुणिउं:
'कहि सुधि [अनि] नथि धरु; छबसिउ सुंदरि जाइ डांगरु.' ७४
सिद्ध स्वरूप लाधुं जेतलि, ओकि राउति कहिउं तेतलि.
केलण-पूत्र पाचि आवीआ; सुधि पूछाणि द्वारांतरि गया. ७५
कुंयरि कहाविउं: "न सव झषी; मुझकारणि" आपु पालषी.
सहित कुटुंबमान हूं लहुं; वछराज-सुधि साची कहुं. ७६
आवी डाडी बइठी नारि. भणि महाजन सहू हकारि :
"टालाटोल कहि कहि हस्याः जुईइ जस्या दीसीइ तस्यां." ७७

करी नगर कातीनू राज; हंस न मेहेलि घडी वछराज.
सरव लष्यणगुण जांणि जिणइ, हंस गजसर टालि तिणि,
जे हूतु कवाडी तणइ, काती ते बइठउ वइसणि."

७२ a–b बमां ७३ a–b पछी छे. a. असि...वांहणनी वात. ब., आसा पुरव वांहांण ज तांणि, क. b. जोवा मलीआं मांणसि सात. ब., जोवा लोक मलु छि घांणि. क. c. ठाय. ब., तांहां पडो वजडावो राय. क.

७३. a. वन-वयोग...भणि. ब., वंनवजोग हूओ वड तले. क. b–c–d बमां नथी. b. सकल सगो भाइ एमज भांणे. क. c–d. अवीचल आलु यडधु राज, जेहे सुध किहिजे वीर वछराज" क.

७४. कमां आ कडी नथी. a. असू...सुणि. ब., b. सनक....धूय... सूणी. ब., c. बमां नथी. d. छबिउ डांगरु जईने भणी. ब.,

७५. a. वढउ छबिउ दासी जेतलि. ब., सीधसरूप जांणु जेटले. क. b बमां नथी; कमां: "येक रावत राषो तेटले." c. केलि तणा पुत्र पांचि ...ब., केलांणना पांच पुत्र आवीया. क. d. पूछि सधि द्वांरतरि रह्या. ब., सुध पुछता तीरि गया. क.

७६. a. कुमरी कहावि वलतू शषी. ब., कुयरी मुषथी यिम ज भंषी. क. b. लाधु. ., ते कारांण यांणी पालषी. क. c. कूटंब सहित....., कटंम सहीत वात ज लहू. क. d....सधि...कहू. ब., राजा सुध...कहू. क.

७७. a. आवी पालषी....ब., आवी संग्या, बेठी नार. क. b. महाराज. ब, भांणि माझन, संघलु हकार. क. c. °ली म करसु कस्या ब.,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोल्यु पुष्फदंत परि सुणीः "मइ परणी ए डाही भणी.
कहिसि सुधि सेठिनो वहू; पहिरामणी लहेसि सहू." ७८
पुष्फदंत कीधु शृंगार, सूमणा सेठि सहित परिवार
राज-काज श्रवणे सांभलियउं, व्यवहारीया महाजन मलिउं. ७९
सलूणु, वेलण, मिलीया हसी; जासड, पासड नि पद्मसी,
कडूउ, केलु नि कर्मसी, धाईउ, धीगु नि धर्मसी. ८०
वस्तु, वीरुम भणि म जेडि; प्रथमु, पूनु, पेथड तेडि.
वीरुउ, षेतल नि षीम, हादु, भाटु, भादु, भीम. ८१
भणि कवि : कहोइ केता नाम ? आपणमाहि बोलि सवि सामि.
सूमण सेठि मान जु हुसि, कुण बीजु को वली पहिरसि ? ८२

टालाटालो मां करसो कोय. क. d. जशां जोईइ देषीजि अस्यां. ब., जे जोये ते पुरि सोअ. क.

७८. a. बोलिउ पुःपदंत पर सूणी. ब., बीड़ु प्रहु, पुस्वदत ते सुण. क. b. ए परणी छि डाहापण भणी. ब., मुष डाइ कुअरीये भांणु. क. c. सधि किहिछि सेठनी [वहू] ब., सुध किहिसि सेठनी....क. d. पिहिरांमणी लेसि सहू. ब., पेरांमांणी पिरसि सहू. क.

७९. a. पुःपदत...शणगार. ब, पुस्वदत कीधो संणगार. क. d. सेठ तणउ. ब., सोवंन सेठ सरसो परीवार. क. –d पहेलां कमां:–

"राजो काजो नि करमसी, धरीयो धुधो नि धरमसी."

c. राजि–काजि....सांभलिउ. ब., राजो काजो सवणे सांभलो. क. d. विवहारीआ शहू...ब., तारि माझंन सवे टोले मलो. क.

८०. a. सोहोलु मोहोलु मलीआ सही. ब., सोलांण मोलांण मलीया सही. क. b. आसट पासट नि पुनसी. क. c. कडूउ करमण नि करमसी. ब., केलण कडवो नि करमसी. क. d. धांधु धीरउ नि धरमसी. ब., वेलो वाइयो नि धरमसी. क.

८१. a. वस्तु विरूउ भणि म जोडि. ब., वसोतो वीरो मां करसो केड. क. b. पदमु पेथु पाहालु तेडि. ब., परथंम पुनो पेथो तेड. क. c. विरूउ गिरूउ षेतु षेम. ब., वरूओ गरूओ षेतलीयो षिमो. क. d. हादु वीदु मांडण भिम. ब., हादो भादो हांसलीयो हिमो. क.

८२. a. कवि कहि, केता भणीइ [नांम]. ब., भांणे कवीजंननां लहु नांम. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फालु भणि : "हूई कीधुं धरिउं, तीणि काज अमारुं सरिउं.
न्याति ऊतारि हस्या तईं तमे, तीणि नातरि सगा छउं अमे." ८३
सहू सुषासणि पूठि थयुं; राइ-ठाणि चुकि सरि गयुं.
तव पोलीया सीषामण होइ: "पाषि हूआ न मेहलसि कोइ. ८४
परस्त्री नवि नरषि हंसराज; आडी परीआचि हूई ईणि काजि.
तीणी स्त्री इसा उरि परठि उपाय : "कुहु, माइ" सुधि पूछइ राइ. ८५
राजकुंयरि बोलि तीणि ठाय : "कुहु सकल सलहुं, यादवराय.
बावनवीर तणुं अहिठाण, तुम नयर पाटण पहिठाण. ८६

क.—कमां आ पहेलां: "गणपत गरूआ मलीया सही, देषो देवो नि देवजी." d. एकएक पांहि भणीइ नांम. ब., मांहोमांही करि सरव सांन.क. c....सेठ ज मांन ज हसि. ब., सोवंन सेठनि मांन ज हसि. क. d. शकटंवि समवडि बिससि. ब., कटंम सहीत पेरांमांणी थषि. क.

८३. आ कडी ज कमां नथी. a. सूमण सेठ भणि, भलू व.रू. ब., b. तइणि काज अमारु शरिउ ब. c–d. "नाति नाति उतर मही अह्मो. कटंवगत्य वेहेवाई तुह्मो." ब., पण आ c–d बमां ८३ a-d पछी छे.

८४. a. सहू सूषाशण केडि थयू. ब., रहो सपाइओ ते पुठे थयो. क. b. राय–अंगणि चुका सर गयु. ब,, राजा लगि ते चाली गयो. क. c. एकएक मांहि हूकि हसि. .ब, तव पोलीआनि सीषांमण होय. क. d. अम्यो परनाती आव्या तसि. ब., गआं पाषल मां मुकेस कोय. क. आ कडी पछी बमां १ वधारे:—
"चालिउ साजन सहू चडवडी गढभीतरि सहू रहिउ अडी.
कुमरीइ नव तेडया पोलीया. को एम मेहे...स मुझ विण कह्या."

८५. a. पर अस्त्री नव नरषे...क. b....परीअच कीधी आज. ब., प्रीयच नांषी ते पास. क. c. आशण बिसण मूक्या राय. ब., आसंन बिसण मुक्या राय. क. d. पूछि सधि, कहू तमे माय. ब., सुध कहो माता पुछि राय. क.

८६. a....कुअरि बोली तेणि....व., कुअरी बोली तेणे ठाये. क. b. सकल सधि सूणि....ब., कहु सुध साची वीर वछराये. क. c....तणू इहिठांण. ब.,...तांण यिधांण. क. d. तम नगर....पिहिठांण. ब., तंम नगर पाटांण प्रिठांण. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शालिवाहन यादवनु जाउ; पिता तम नरवाहनराय.
हंसाउली जाणि तम जेउ, जण्या जीडूइ बेटा बेउ. ८७

धुरि लगइ वात कहुं तम आज; लुहुडु हंस, वडु वछराज.
पनर वरस वाध्या परदेसे, तव पुहुता पाटण परवेस. ८८

राती स्त्री, कंदर्पि अभिनवा, मंत्रे[इ] कोधा मारवा.
सुत्र प्रधानि कीउ तुह्म काज; शंबल देई छंडाविउं राज. ८९

गया परदेस महावन वीर, अति ऊसना परिवारिउं नीर.
हंस ऊतरिउ निद्रा-वसि, पुढिउ वडतलि, सर्प डसइ, ९०
विहिलु वडउ धरिउ दुष घणूं; घोडि घातिउं तन [तम] तणुं.

सरोवर वड-डालि बांधीउ आपणि चंदन लेवा गयु. ९१
वार रतन अनि बे तुरी, सेठितणि घरि थापणि धरी.
लेई चंदन आव्यु सर-पालि, शब नवि देषि ते वड-डालि. ९२

---

८७. a. जाय. ब., सालीवाहंन जादवकल ठाअ. क. b. तम पीता. ब., तंम पत्या. क. c.... जनम्या तम्यो. ब., हंसावली जनुनीयि जणा. क. d. जणिउ जरंडूऊ बेटा बिह्रो. ब., जेडु मसि विहि एकठा मला. क.

८८. a. धरथी वात कहू. ब., धर लगि वातज कहू याज. क. b. लुढउ. ब., लोहोढो....वडो....क. c. परदेस. ब., पंदर....प्रदेस. क. d. तु पुहुता पिहिठांण प्रदेस. ब., पोहोता ते पाटांण प्रवेस. क.

८९. a. रायनी कंदर्प....ब., रूप कंद्रप ते अभीनवा. क. b. मंत्रेईइ काढिआ मारवा. ब., मंत्रीयि काढा मारवा. क. c. तव प्रधांन. सांसु तम काज. ब., तव प्रधांनि सीधां....क. d. सबल देई छंडाव्या....ब., सवली देइयि काढा वंनवास. क.

९०. a. माहां. ब., गआ प्रदेस उत्रा वीर. क. b. अती उसंनां षुटां नीर.क. c.... ऊतरी नीद्रावसि प्रसु. ब., हंस पोहोडो नीद्रावस थयो. क. d. °लि निद्रावसइ. अ., सर्पि डस्यु. ब., वडतले सरप-डस मुयो. क.

९१. a. पिहिलू वछ घणू दूष धरिउ. ब., पिहिलु वछराजायि दुष धरु. क. b. °उ कतन (?) तणुं. अ., घालिउ....तणू. ब., षोइए घालु तंन तांमु तांणु.क. c. शरोवर वड-डालि बांधीऊ. ब., तेहे वडला-डाल बांधीयो.क. d. आपि. ब., आपि चंदान...क.

९२. a. नि बि तूरी. ब., नि विहि तोरी. क. b. सेठ तांणि घिहिर थांपण...क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पग उलषु, हंस [तम] तणुं, एक अचरज, मनि दूष घणूं.
करया सार, तु अदृश्य थयउ, वीर [वछ] कांती आवीउ. ९३
सेठि थापणि मोसु कीउ; भणिउ चोर, तिहां बांधिउ धरिउ.
तलारि पूत्र भणी पालीउ, वली जाणीनि ऊदाली [ली]उ." ९४
इसउं वचन श्रवणे सांभलिउं, महाजन षणसिउं नि षलभलिउंः
आपणमाहि करि सचि सान, कि मारि कि वाढि कान. ९५
"ज्यारि पोलि दीधु हूउ, त्यारि अम मनि निश्चउ हूउ."
एक भणिः 'तूं थाउ अमर; दिउ लोच नि बांधउ चमर.' ९६
एक कहि आगलि पोलीयाः 'अमे परनाती जोवा गया.'
सइलषि सिवि पाछा वल्या; सिर ढांकि नि जाइ पुलिया. ९७

---

c. सरोवर. ब., लेइ चंदांन आवो सरोवर-पाल. क. d. शव न देषि वडनी...ब., संभ नांहां दीठु वडला-डाल. क.

९३. a. हंसनु. अ., उलषिउ...तूम. ब., पग नां ओलषि हंस तुम तांणु. क. b....आश्रज्य अनि...ब., मंन यांसु ज पांमि यती घांणु. क. c. करइ ...सव अदृरष्टि थयु. ब., करी सादनि याष्ट ज थयो. क. d. वीर न दीठउ पाछ[उ] आवीउ. ब., वछराजा पाछो आवीयो. क.

९४. a. सेठ थांपांण मोसो कीयो. क. b. चोर भणी नर बांहि धरिउ. ब., चोर करीनि वछ बांधीयो. क. c. पुत्र. ब., तलार पुत्र करी वालीयो.क. d. वली वांहण ऊ°...ब., वली वांणीयि उलाली लीयो. क. (कमां आ चरण a पछी छे.)

९५. a. असू...ब., यिसु...सवने सांभलु. क. b. तव माहाजन सरव षलभलिउ. ब., तव माझंन सरवि षलभलु. क. c. आपण पइ करि सहू सांन. ब.. मांहोमाही करि छि सांन. क. d. किहि मारसि कि वाहाडसि कांन. क.

९६. a. जिवारि पोलीआ दीधु...ब., जारि सहूये सांसी रहू. क. b. तिवारि अमनि नीसु हूउ. ब., ताहारि मंन नीसुल ज थयु. क. c. °णि, हवि समरउ देव. ब., एक भांणे जे थायोनि अंमर. क. d. जिम रहु जीवता तव-मेव. ब., लेइ वाल नि बांधो कंमर. क.

९७. a. पोलीआ. ब.,...किहि आगल पोलीयो. क. b....परदेसी...रहिया. ब,, एक प्रति...गयो. क. c. नासि षोसि एक पाछा...ब., सकल किहि,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भणि हंस : "माइ सर्व सुधि लुहु. वछराज [सधि] चेगि कहु.
स्रमण सेठि ऊदाली लीउ; मझ बंधव तेणि केथु कीउ." ९८

पुनरपि कुयरि कहु राइ-रेसि : "पाठवा परहुण परदेसि.
सनकावतीइ पुहुतु ठाइ; तम बंधव हूं परणी राइ." ९९

भणि हंस : "तूं अमची माइ;" परोयचि लांघी लागु पाय.
ऊभु रहिउ राउ पणमेवि : "वछराज-शुद्धि दाषु, देवि." १००

"सुणिनि, हंस; पूछिउं अम ताति; सेठि अनामिक [कहु] कुजाति.
साथी तणु बोल जव सुणु, सनकभ्रम राजा मनि थुणिउ. १०१

अमे वास्या अलगेरइ ठाइ; अनिक परीषा जोई राइ.
यादव जाति जणावि कामि, किमि न लागि सोनि सामि." १०२

एक पाछा वलो. क. d. सर ढांकी एक जाइ पल्या. ब., मांथु ढांकी जायि उत्यावलो. क.

९८. a....माय, सर्व सधि लहु. ब., भांणि हंस, मात्या सुध ज लोहो. क. b. °जा सुध साची कोहो. क. c. जव सू°...ब., सोवंन सेहिठि माहा दुष दीयो. क. d. मुझ बांधव ते केथु थयु. ब., मुज बंधव सु किहितो हूयो. क.

९९. a. नरपति, वात कहू लवलेस. ब, पुनरप वात कहू नरेस. क. b. पाठविउ प्रवहण परदेस. ब., पांठवीओ परुणो प्रदेस: क. c. °ती नगरी तेणि ठाय. ब., °ती नग्री ते मांहे. क. d. राय. ब., °वमांनि प्रणा तांहे. क.

१००. a. माहारी माय. ब., भांणि हंस, तु माहारी माय. क. b. परीछ घोडी. ब., नांषी प्रीछच नि लागो....क. c....रहियु पाय पणमेवइ. ब, उभो रहीनि प्रणमी येहे. क. d....सूधि...हेव. ब., °जा-सुध दाषवो तेहे. क.

१०१. a. सूणि हंस....तात. ब., सुणों हंस, कहू तुमुनि वात. क. b. कही छि. ब., सेठि कही तेहे नीच युच जात. क. c. सोए बिरद जव श्रवणे सूणिउ. ब., तिणि वचेने क्रोध धडहडो. क. d. शनकभ्रमराइ मन हरिउ. ब., संनकराजा नीचु जोइ रहो. क.

१०२. a. अम्यो वीसां अनेरि ठाय. ब., आंमो वासां यलगि ठाय. क. b. अनेक परीक्षा...राय. ब., अनेक प्रषा कीधी राय. क. c. यादव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहउ

भणि "असाईतः" "वविध वनि कोज[ई] वृष्य-वद्धंस,
छेदियउ भेदिउ दूहव्यउ, मधूरु वाजि वंश. ९०३

चउपई

इसि अम-तम बंधवउ दिसिउ. हवि प्रवहणि पाछा चालसिउं.
मझ ताति प्रीउ परठिउ राजि; सर्व ते मेल्युं ताहरि काजि. १०४
परहुणि चडिउ; तज्यु परिवार; मइ जल भेटि कोधु म[झ] हार.
जव सागर वचि वाहण गउं, पुष्फदंत मइलु मन कीउं. १०५
पुष्फदंत मुझ कारणि करी, पापीइ पापबुद्धि आचरी.
रयण-विभागि वचन-वसि वाहि, तम बंधव नाष्यु जलमाहि." १०६
इस्यु बोल श्रवणे सांभल्यु, मूरछिउ राउ धर-मंडलि पड्यु.
[कर दीधउ दीयरनी पूठिः "तम बंधव देषाडुं, ऊठि.] १०७

वंस जणाव्यू नांम. ब., जादवकुल जांणावु नांम. क. d. शनकम्रमराय लागू स्वांमि. ब., कहीयि नां लागि सोनि सांम. क.

१०३. कमां आ कडी ज नथी. दूहा. ब., a. विवहपरि. ब. b. कीजि त्रिष विद्वंस. ब. c–d. "छेदिउ भेदिउ दूहव्यु,...... ..वंस." ब.

१०४. चुपई. ब. a.वलतु वांहण पूरिउ जसि. ब., वलतु वांहांण ते पुरु जास.क. b. करि मंत्र सांमिहिणी तसि. ब., कीधो मंत्र तेरिणी अभास. क. c. अम ताति पीउ....राज. ब., अंम तात्यि पीउनि पाठवु राज. क. d. ते सवि मेहेलिउ तमारि काजि. ब., ते सरवे मुकी सीध्यां काज. क.

१०५. a. परवहण चढिउ लेइ परीवार. ब., प्रहुणो चडो बहू प्रीवार. क. b. मि कीधु जल भेटण हार. ब., मिहि चडावो येकावलनो हार. क. c. गयु वांहण सागर नांगरिउ. ब., सांमुद्र वचमां वाहांण ज गयो. क. d. पुपःदंत मन मिलू कीऊ. ब., तव सेठि मंन मिलो कीयो. क.

१०६. a. पुःपदंत मझ...ब., पुस्वदत मुज कारांग...क. b. °वुधि आदरी. ब., पावीयि पाप बुध आदरी. क. c. कर्मचांडाल हूंतु तेह मांहि. ब., रिणी–भाग–वचि ते माय. क. d....बांधव नांषिउ....ब., . नांषो जलमाय.क.

१०७. a. असू वचन...साभलिउ. ब., यिसो वोल सांणो सांभलो. क. b....कुअर धरणि ढलिउ ब., मोरछा कुअर धरांणी धरो. क. c. त्री कर दीधु,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सागर सामि सषाइत कीउ; जल तारी आहा आणीउ.
छि सलषू मालणि-घरि सोइ." भेटिउ हंस; उर टाढुं होइ. १०८
हंसराज ततषिण चालीउ; ऊठी मालणि-मंदिर गयु.
पूठि सहू पालु परिवार; भाई भेटियउ राजकुंयार. १०९

वस्तु

बेउ बंधव, बेउ बंधव मिल्या मनरंगि.
अति आणंदि उलस्या अंगोअंगि आलिंगन.
हरषि हरष्या-श्रव पडि बेउ बाहू बंधवनि.
ज्ञानी नर हंस प्रति रषि मुनि भाषिउं सोइ.
मास छ, दिन त्रिहूं अंतरि भेटया बंधव बेउ. ११०

(चुपई)

सहित सुषासण आव्या तुरी; गयु रा-लगुनि सहू संचरी.
भणि हंसः "अपराधी धरु; सेठि सकुटुंब सूली धरु.' १११

देउर ऊठि. ब.....दीधो दीयरनी पुठ. क. d. तूझ बांधव देषाड्ड द्रेठि. ब., तंम बंधव देषाडु, उठ. क.

१०८. a....स्वांमि सषाईत...ब.,...स्वांमीयि रूडो कीओ. क. b. इहां. ब., जल उत्री नि आंही आवीयो. क. c....शषू...सोय. ब., छि येहे सलषु मालांण-घिहिर सोय. क. d. मलि हंस, शर टाढऊ होय. ब.. भेटो हंस, उर टाढां होय. क.

१०९. a. वछराज (?) ऊठी चालीउ. ब., हंसराजा उठी चालीआ. क. b. ततष्यण....मंदीर...ब., ततषांण मालांण मंदर गयु. क. c....पालू परवरि. ब., पुठि सहू पालु प्रीवार. क. d. भाई भेटणि तिणि कारणि सरि. ब, भाइ भेटिआ राजकुमार. क.

११०. आ कडी कमां नथी. वस्तू. ब. a. बिहु बांधव, ब. c. उलसि.. ब. d. °गि दि आलिंघन. ब. e. आंषि हरष-आंसू पडि ब. f. नवि छोडि बेह वांह. ब. g-h बमां नथी. i-j. "मास छ दिन त्रणि, बांधव मल्या ते त्यांह." ब.

१११. a. पूति सूषाशण आव्यां तूरी. ब., पुठि संगयासंन आव्या तोरी. क. b. गयू रा-लगून सहू सांचरी. ब., गया राजा ते सहूयि ...क. c. धरउ. ब., भांणि हंस यपराधज कीओ. क. d. सेठ कूटंब सहू सूली भरु. ब., सोवंन सेठनि सुलीयि दीओ. क.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भणि वछ : "करमि दीजि दोस. पिता मात्रई म धरसि रोस.
लषिउ विधाता ते दिन तसिउ; ऊपरि त्रणा कहाडु कस्यु ?" ११२

पुनरपि वछराज इम भणि : "निहालि हरिचंद चरित तइ सुणि.
राम युधिष्ठिर चाल्या धर्म; हंसराज, नवि छूटा कर्म." ११३

ततषिण हंस विमासि हीइ : 'वीर-वचन केणी परि लोपीइ ?'
राजरीति चित चाहि रंग; मेहल्यु सेठि लेई सप्तांग. ११४

कीधु बहू आलोच आवासि; सुपिउ राज प्रधानह पासि.
सकल सेन सहित चालीया; पुर पइठाण नगर ते गया. ११५

---

११२. a. कहि....करम...ब., भांणि...करांम...क. b. मंत्रेइ म धरसु...ब., हंसराजा मांहां धरसो...क. c-d पहेलां बमां:—

"बापि मराव्या वेटा वेह, परधांनइ जीवाडिआ तेह."

c. लषु विधात्रा जे दिन दसु. ब., लघु वध्याताथि जे दंन तसो क.
d. त्रण ऊपरि कुहाडु कसु. ब., तरांणा उपर कोवाडो कसो. क.

११३ मी बदल बमां:—

"देव न छूटि कीधां कर्म. ते मे विमासी जूउ मर्म."

कमां:—"वछराजा अिणी पिरि भांणो, नल-हरीचंद्र चरीत्र ज सुणो.
रांम-जुजीष्टल वाहाला धरांम, तंम हंस वछ विहि छुटा करांम."

११४. a. ततष्यण....हैइ. ब., ततषांण हंस वीमांसि हैये. क. b. °न किम लो° ब., ते क्यंम लोपीये. क. c-d. "राजरीत चाला ते चंग, मेहेलु सरवि लेइ पतंग." क. "राजनीति चलावु धर्म; सेठ लेई मेहेलु सपतांग." ब.—पण बमां आ c-d पहेलां चार चरण वधु:—

"ए अपराधी नवि मारीइ जीव-जितन करी काज सारीइ.
जीव-दया मूल जांणउ धर्म. अनि वीउ दि वतू कर्म."

११५-११६ ए बे कडी पाठान्तरे कमां नीचे मुजबः—

"बहू आलोच कीओ यवास, सुपु राज प्रधांननि पास.
सबल सिन सहीयत चालीआ; पर पिठांण नग्र आवीया.
भेटा मात-तात परीवार, तरीया तोरांण बांधां बार.
बापि सेस भरी वछ [काज], हंस करि कातीनु राज."

—ए पछी एक वधारानी कडी:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेटया मात-तात परिवार; तलीया तोरण वनरवालि.
छाव सेसि भरी वछ-काजि; परठिउ हंस कातीनि राजि. ११६

"एक गायि एक नाटक करि, जेजे सबद एक ओचरि.
त्रंमक ढंमके ढोल नीसांण, चोहोदस फरि तिनी आंण."

—ज्यारे **ब**मां ए ११५-११६ने बदले नीचे मुजबनो विस्तार छे:—

"गजवल कटक न दीसि तसि; बेहू बांधव धीर छि असि.
हंस वछ तूझ मलवा काजि, कुसल षेम आव्या तेणि राज.
सामा लेइ आव्या परधांन, परीध्या सहित ते रायनि मांन.
'एक वचन जु मांगु तमे, नगरमांहि तु आवूं अमे.'
सूणि मनकेसर वात विचार, भोजन देई आपे सणगार.
शघलि रूड्र शत्रूकार; दानमां[न] हूइ विस्तार.
ते मांन-मुहुत नरनाह, अंतेउर हरषिउ मनमांहि.
जमणवार मांडी वछराज; सहू आविउ जमवानि काजि.
भोजन हूआं, आप्या शणगार; पाए लागीनि करि जूहार.
हंस कहि: वछ वात विमासि, माता नावी, पूछि दासि.
दासी कहि: 'सूणउ माहाराय, लांघण एक पडी तूम माय.
राजलोक जमवा तमतणि, सधि न जोई कुणइ इम भणि.
भूषी तावडी बिसी रहइ; तेहनी सिधि कोए नवि लहि.
जिणि दिन तूम देसुटु दीउ, लीलावतीइ राजा घरि लीउ.
हंसाउली दीधु उपमांन, ठांमि ठांमि भलु हूइ परधांन.
मनकेसर आपि कणि हतू, तम जननी लि निचू वतू.
सूत बि दूष तणउ हूइ ठांम, लाधू कागऊडामणि नाम.
वात सवे हूती ते सूणी. गइ पालछी तेडवा भणी.
हंसाउली पूछि सा भणी: 'हशा ठांमि तमारि घणी.
हू बेटू कर्म-गति आपणी; बेटा पाषि हू व्यामणी.
आई तमे बिसु पालषी; बेटा बेहू आव्या ते सूषी.'
पालछी आगलि पाली थई; हंस वछनि जोवा गई.
भेटी माता लोटि गणे; कुसलि कूटंब मलिउ दिन घणे.
पटकूल पिहिरावी माय. वहूअर आवी लागां पाय.
नरवाहन किहि: 'लीलांवती' तइ मूझ घरि उपमांनी सती.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राउ पहिठाण यादववंस, वर्णव्या वछराज नि हंस.
सकल-लोक राजा-रंजनी; कलयुग कथा उभय वावनी. ११७
दूहा गाहा वस्तु चउपई, सइ च्यारि चालीसी हूइ.
पद जूयली त्रिनि सुविशाल, तीणि ति मोहमति-मायाजाल. ११८
भणतां दोष दरिद्र तनि टलि; भणि "असाईत :" सफला फलि.
भणि, भणावि [नि] नित गुणि, नव निधि आवी [तेह] अंगणि. ११९
संवत १४ चउद्द चक्र मुनि शंष, वछ-हंसवर-चरित असंष.
बावन-वीर-कथा-रस लीउ, एह पवाडु "असाईत" कहिउ. १२०

४३८

सुत्त मराव्या कूड ज भणी; हवि किम छूटेस, रे पापिणी ?'
षांड्ग काढी ऊठिउ राय, तव वि बेटा लागा पाय.
हंस-वछ कहि : 'माहारी माय, को नवि छूटि करम-पसाय.'
अभिदांन देवराव्यू हंस; रंगि रहिया बे ज्यादववंस.
राय कहि : 'देस मझारि, नगर फेराबु; काढउ नारि.'
गोलाना घरनु केकांण, षडसल पूल करिउ पलांण.
ते ऊपरि लीलावि चढी; आगली वाजि त्रांबा-तडी.
अछि मस्तकि पाटी करी, ते ऊपरि ते चूनु धरी.
सिम लगि बुलावी लोक, तेहनु कोय न आंणइ शोक.
हरषिउ राजा सहित प्रधांन; हरषी हंसाउली; लाधू मांन.
त्रणसि साठी वधावि नारि. चांमर ढालि रांजकुमार.
तलीआं तोरण उछव अपार. वाजित्र वाजि वधावि सार.

११७. a. पुरपिठांण यादवनु वंस. **ब.**, परपिठांण जादवनो वंस. **क.** b. वरणवीआ वछ नइ...**ब.**, विहिनवीआ वछराजा हंस. **क.** c. °कसूणि र°...**ब**, d. कृतयूग . उभि...**ब.**, कलजग कथा ते वीरवावंनी. **क**

११८. a. वस्त चुपई. **ब.**, चोपाइ चारसि नि चालीस. **क.** c. सत चारी पासासी हूई. **ब.**, पद त्रणसि चालीस. **क.** c-d. "पद जूअली त्रण्यसि वीसाल, तेह मोहमन मायाजाल." **ब.** —**क**मां c-d नथी.

११९ मी **ब**मां नथी. **क**मां मात्र a-b छे:—

"सुणतां होयलां दुष ज टले, भांणि **असाइत :** यफलां फल फले."

१२० मीने स्थाने **ब-क** नीचेनी आगला त्रण खंडोने अंते आवती कडी आपे छे:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बः—"चिहू षंडे छि मति जूजूई, प्रसिधि पूनि **हंसाउली.**
सरव जन–मन **अशाईत** लहि, तु कवि कथा विणंतर कहि."
कः—"चार षंडनी बुध जुजवी, एटले कथा सांमापत हवी.
सरव-जनम **यशाइत** लेहे, कथा एक पणु येकमां किहि"
सरवाळोः—अ ११८ (? १२०); ब ४८६ (चारे खंडनो मळी);
क ११०.

पुष्पिकाः—

अः इति हंसाउली कथा समाप्त ॥ छ ॥ सं० १६७६ वर्षे कार्तिक वदि ९ शुक्रे बेरणाग्रामे ॥

बः अति हंसाउली चतूर्थ षंड संपूरण । संवत १७२० वर्षे मागसिर वदि २ रवौ लषीतं । छबीलादास नायक वाचनार्थः ॥ शुभं भवतू । कल्याणमस्तू

कः—चोपाइयो ॥ चारसि नि साठ ॥ षड चार सांमापत छि ॥ हंसावलीनी कथा संमपुरांण छि ॥ संमत १८४७ ॥ ना वरषे ॥ माहा सुद ॥ २ ॥ वार बुधे ॥ लषीतंग ॥ नायक ॥ नरभेरांम कुबेरदास वीठलदास नारांयिणदास कांनजी कसंनदास लीलजी वरजी ॥ चोपडी नरभेराम कुबेरदासनी ॥ वड-सरा ॥ जात ॥ तरगाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्टो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट १

*हंसाउली-पूर्वभव-चरित

मतिसुंदर

[सां. १६२१]

[चउपइ]

* * * *

[शी]लवंत न थयं जूउ, तेलक छोटउ कर्मि हूउ. २२
" सुख-संपदा पामीइ सार;" कहि मित्र : " कीधउ व्यापार.
भवसंचित जे हूतां पाप, तेह तणउ टालिउ संताप. २३
स-पुरिस राजा गुरु नि देव, फल नुहि [तो] तीरथ सेव.
आपणे भव समारयु आवतु; धर्म मित्र कीधउ जागतु." २४

वार्त्ता

केल्हण प्रति कूपु कहि छइ : " रे गहिला आवतु केणि दीठउ ? इहां देखीइ ते सत्य छि. संभलि :

चउपई

दिन जाइ नि यौवन गलइ जरा आवीनि साहमी मलि.
चालु, हवि जोइ एकः केदारि कौतक [हूइ] अनेक." २५
चाली आव्या चंदनपुरि; पोलि प्रवेसि; पूछउं धुरि :
" को परदेसी आवि इहां, कहु पोलीया, ते जमइं किहां ?" २६
" साहमुं सरोवर-पालि आराम, स्वयंपाक करवानु ठाम.
नगर माहि रांधणि एक वसि, यती सती देखी उल्हसि. २७
पूतलि नामि घरि डोकरी, गंगाई तहनी दीकिरी.
अछि कुंयारी, मधुरी भाष, तम सरिषा जिमि तहां लाष." २८

---

* गूज. वर्ना. सो. ना संग्रहमांनी एक मात्र प्रति उपरथी आ काव्य लेवामां आव्युं छे. जोडणीमां जरा जेटलीये फेर करवामां नथी आव्यो; विराम-चिह्नो नवा योजी मात्र कयांक अनुस्वार-अनुनासिक रही गयेल छे, तेटलुं उमेरण करवामां आव्युं छे, अने प्रतिनी तेवी जोडणी पादटीपमां आपी छे. २३. हूता. २५. इहा. २६. किहा. २७. साहमुं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलपता चाली मंदिरि गया, 'राम'–नाम कली ऊभा रह्या.
अतिथ जाणी आव्या प्राहूणा, आगतस्वागत कीधां घणां. २९
घरि आवइ जे दि सही मान, ते माणस कहीइ सावधान.
जन्म सुकृत हुइ तेहनु, उपगार करवा मन जेहनु. ३०
ए वात पूछंतां हूउ मध्यान; तव बेटी नीपाउं धान.
उष्णोदकि कीधा अंघोलि; संतोष्या बहू कोमल बोलि. ३१

दूहा

वयण [स]रस वृद्धा तणां संभलि रंज्या सोइ.
घणा देस जोया फरी, [एहं न] दीठं [कोइ] ३२
भोजन-स्थानकि बइठा जसि, प्रीसणि आवी अबला तसि;
नवयौवनी चंपकवानि; झालि झबूकि सोविन कानि; ३३
चंदावदनी; भमहि वांकडी; अलविस्युं आंजी आंषडी;
वासिग–वेणि तजि अभिमान; सिधु स्वर्ग करि सहीसान; ३४
शुक–चंच नासिका; विकसंत कपोल; अधूर प्रवाली सम रंग रसाल;
जिह्वा कमल-पांखडी जिसी; कंठी अनो[प]म कोकिल तसी; ३५
सरल बाह; कोमल आंगुली; राता नख; हथेली वली;
हृदय–स्थल फल करणी तणां; कटिलंकी केसर गुण घणा; ३६
कृशोदरी; नाभि सुविशाल. कदली–जंघ; चरण सुकमाल,
पदम ऊरध रेषा मछ–रूप, रंभादिक हराव्यां रूप. ३७
सवि आभरण धरयां मनि रंगिः दक्षिण फाली पहिरी अंगि;
मोहण वेलि मरकलडे हसि; तव कृपा–चिति नारी वसि. ३८
काया माहि दूरजन–वास; भवोभवि कीधु अभ्यासः
आलस मूकी बइठा थाइ, तेहनुं नाम मदन कहिवाइ. ३९
दूर्जन नही, सूर सुजाण; कामिणि केरा लागा बाण.
वागा बाण सांसि जेह, निश्चि असत कि तपसी तेह. ४०
कायर कहि प्रति चालि नही, सर्व भूत समा तपसी मनि सही.
तेहनि मनि मोटी वांछना; निःकर्मा ध्याइ एकमना, ४१
सही सनाह सबल मन तणूं, न्याइ एवडुं बहुइ पेषणूं.
पुरुष परदेसी थ्यु जाजरु, चलित अन्न जस्यु बाजरु. ४२

---

३१. पूछंता; नीपाउ. ३२. वृधातणा; घणा. ३७. हराव्या.
३८. धरया.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम तणा जे दस अधिकार, तिणि पाड्यु करि पोकार.
आवी मूर्छा, धरणि ढलिउ; गुणवंत मित्रि तिहांथ्यु कलिउः ४३

" तुझ पुरुषारथ–सिरि सल पड्डु, पर घरि पेरण करु एवड्डु.
इस्या पुरुष नीपाया काय, विधि वरासी विमासण थाइ. " ४४

दूहा

' सरस मधुर जे रसवती, ते हूई विष समान;
नाटारंभ मांडिउ नवु; नाटकीयां नही सान. ४५

जोवुं जिमवुं नवि गमि, करवुं एक ज काज,
सश्रूषां सपरि करुं, जिम नावि एह लाज. ४६

सुख–दुष तणां विभागीअ, ए मित्रह आचार. '
हेला भोजन परिहरी साद करि तीणि वारि. ४७

चउपई

माइं बेटीइं दीठं जांम, ढूकडा आवी पूछि तांम :
" असमाधि आगि छि एहनि; किहां आवी हूइ, कहि मूहनि. " ४८

कल्पी ऊतर आपि तदा : " बाई, रोग छि एहनि सदा. "
गंगाई गुणवंती लहि, अति डाही मुहि नवि कहि. ४९

आहमाह डोकरी करंति; सूठि मिरी अजमु आणंति;
कंकोडी कड्डइं तुंबिणी, लस[ण]–कली लेवा दडवडी. ५०

करी ऊगुटं काने धरि; हीइ–हाथ–पग सघलि फरि.
पाडोसणि छि जे अतिमती : " आवु विहिनि, मांदु छि यती. " ५१

तेजू, विइजू, नि सोमली, हापू, वानी नि पोमली,
सलषू, हरषू, वारु, हांसली, नान्ही, कान्ही, कबली, कासली. ५२

एक आवी नि जोइ नाडि; एक कहि : ' वेगि तपाडि. '
वाची पुराणनां उसड घणां, उष्ण अंग हूआं तपसी तणां. ५३

सावधान पुहर एक हूउ : ' सहू घरि जाउ; ' दीधउ दूउ :
' वखत तमारु मोटउ आज, जे समाधि हूई कापडी राज. ' ५४

राति–दिवस रह्या तेणि ठाइ : " दिउ सीषामण; चालसि माय "
अति संतोषी बुलावीआ; केदारि आव्या भावीआ. ५५

दूहा

तिहां वैदेशिक नर घणा कौतुक अर्थ मलंति,
करवत मेहलावि बहू , मनकामना करंति. ५६

---

४३. मिंत्रि. ४८. जांम.; किहा. ५३. पुराणना; हूआ.
५४. तमारुं मोटउं. ५६. घणा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते देखीऊं पुचा तवि : ' करवु एह उपाय.
चिंत्यं हुइ मन तणुं तु एह नारी थाइ.' ५७
गूह्य कहू सवि मित्रि नइ : " हं सही छंडसि प्राण;
विलंब विचारणा नही; पुनरपि न मलि ठाण." ५८
वारवार वारिउ घणूं; कहिउं न करि सोइ;
" आतमहत्या केरङ्‌ पातिक अधिकुं होइ. ५९
आपणइ ते तीरथ करयां, जेणि लहीइ उत्तम ठाम.
कल्पद्रुम लही परिहरि, कमद्रस केरि नामि (?): ६०
हितोपदेस इम कहि घणा, तु निवि भीजइ चित्त.
जिहांइ जे रतु हूउ, कस्युं न जोइ वित्त. ६१
आंक धतूरा लीवडी चुथी रष्या-रेह,
विष न षंडु चंदलु (?) ईश्वर धरीउ देह. ६२
रुचि ऊपरि वात ज हूइ, नवि जोइ पुण्य-पाप;
कि कुलवट लाजडी; इम बोलि ते आप. ६३

वस्तु

करीय मज्जण, करीय मज्जण, शंभु लि नाम.
उपकंठि आवी रहिउ कहि : " वेगि म वार लाउ."
वलतु वेगि ते कहइ : " तुह्म ईछा हुइ तेह ध्याउ."
" हृदय-कमलि माहरि वसि गंगाई जेह नाम,
घरणि हयो भव आवता राज सहीत मुझ ठाम." ६४

चउपई

इम कहितां करवत सिरि धरि, दोइ षंड तव काया करि.
महाकष्ट देषीनि मित्रः " सिउं कीधउं ? निफट रे शित्र." ६५
अति झूरंतु पाछु वलिउ, बीजि दीनि पूतलि-घरि मिल्यु.
तीणि दीठउ आम दूमणु : " कहु कारण तह्मे मन तणुं. ६६
..............................मित्र साथि नही स्या भणी ?
घणा दिवसनु कीधु मोह, तेहनु मुझनि हूउ विछोह." ६७

ढाल मेवाडु

इम कहितां दुष ऊपनुं, हीअडुं आविउं बारि.

---

६०. करया. ६१. जिहाइ. ६३. उपरि.
६५. कहिता.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीसारयु नवि वीसरि, संभरि चित्त मझारि रे :
" मित्रजी गुण घणा, कांई कीधु एवडु सनेह रे. मित्र० द्रूपद ६८
एक पडया परदेसडि, वाहला मूक्या दूरि.
ईणि हूं मेहल्यु एकलु चिंता-समुद्रनि पूरि रे; " मित्र० ६९
वृद्धा वारि अति घणुं : " ए नही पुरुष-आचार. "
गहिवर गंगाइ सुणी, तव आवी घर-बारि. मित्र० ७०

चउपई

रुदन निवारुं; साहस धरि; मित्र-वीतक वात ज करी,
मा बेटी बहि सांभली, नही विकार गंगाई भली. ७१
वलतुं वयण कहि बालिका : " तुझ गुण मित्र न लहि पायका; "
सती-शिरोमणि भाषइ सोइ : " ए समान मूरष नही कोय. ७२

दूहा

कूड कपटह कोथली सपनंतरि नही साच.
हृदय अनेरुं वातवि, कहि अनेरी वाच. ७३
सहिजइ ऊभी कलि करि; कोडि दीइ कलंक.
मायावंती मानिनी काढि पीआरा वांक. ७४
शास्त्रधणी नवि उलषि, तिम जाणेवी नारि.
विष सेव्युं नवि गुण करि. जोउअ चली संसार. ७५

चुपै

रंग पतंग देषाडि सही, मधुरपणि ली बाली कही,
कि पाक (?) दर्शन दाषती, टीवरू-स्वाद परि भाषती. ७६
नरम-वाट केरी दीपिका, आवी सास तणी कुंपिका,
पासि पडया कीधा रे वणी, मुंज नरेसर मालव-धणी. ७७
दुष्ट चित्त दीसि पापिणी, गति चालि जाणे सापिणी,
नरगुण नारी केरि काजि एवडुं स्युं कीधुं, नरराज ? ७८
लींबू-रस तणी परि जोइ, प्रीति वधारि सघली सोइ,
गुण नहीं, अवगुण-भंडार; तेह कारणि स्यूं मूउ गमार ? ७९

दूहा

चिंतामणि नाषी करी ग्रहिनि काचल-षंड,
पुरुषारथ आगलि गम्यु मनि आणी अथि-रंड. ८०

---

६८. आविउ; काई. ७९. लीबू.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धिग धिग हूं एह रूपनिः हूई हत्या मुझ काजि.
निबंध पदारथ किम टलि जे सरज्युं महाराज ?" ८१
आपणपे घणूं नंदती मूकि मुषि नीसास,
गहन गति संभारती : "करम तणा सहू दास. ८२
जन्मभूमि किहां एहनी ? मुझ वसवा आ गाम.
छडी राति विहि–लष्युं, तेह नीपनुं काम.' ८३
"धन धन बाइ तुह्म तणी, गुण नवि लभि पार;"
मधुर वयण केल्ह भणि : "मि सफल करिउ अवतार." ८४

चउपई

मृगलोचना माडीनि कहि : "मूल पुरुष ए मुझनि दहि,
अन्न उदक न करुं आहार, शरण एक वंछूं किरतार. ८५
..............वछि अविचारिउं मुषि म भाषि.
सिउं सगपण छि बहू, माहरुं कीधुं सणसि सहूं." ८६
आग्रह करी मनावी माय; सवी मोकलवा उद्यम थाइ.
नारि केदारि भणी नीसरी, नगर माहि वाणी विस्तरी. ८७
विवध विनोदी नर ईतरा, जोवा केडी थया ते खरा.
बंधव परदेसी संजुत्त, तेणि स्थानकि संपत्त. ८८
स्नान करी संभू वीनव्या : 'मझ ऊपरि जेणि प्राण आठव्या,'
करे कामना सुणि सहू कोइ : 'आवतइ भवि ते बंधव होइ.' ८९
करवत–धार खंड वि थई, सविहुं देषतां अबला मई.
वरस सोल माहि कोमल गात्र, पुहुवीथी गयुं ए पात्र. ९०
हाहाकार सहू को रडि : 'रूपनिधान सांतिउं उरडि,
माणस तणु न लाभे पार; वात असंभव करि विचार.' ९१
'नरनारी जूजूउ अभिलाष;' डाहा शाणा बोलइ लाष :
'आगलि ए नीपजि कसिउं, किम जाणिसि हूउं तिसिउं ?' ९२
घणा नर विकट बाउला, जोवानि थाइं आकुला.
केणी परि ते जोउं न जाइ; न स्वारथ, ऊचाट ज थाइं. ९३
तव केल्हणनि ऊपनी बुद्धि : "कहु तु हूं ए जोउं सिधि;
किसी परि तुह्म जोइसिउ, अह्म प्रति साचुं आयसिउ ? ९४
एह तणी परि करि जि कोइ, समाचार सूधु लहि सोइ."
तेणि वयणि सवि झांषा हूआः 'फोकि जईइ आहां मूआं. ९५

---

८३. किहा. ९३. आकुलां. ९५. झाषा; आहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरण भय मोटउ जाणीउ, तुह्म कायर धूजइ प्राणीउ.
कौतक वि इम वहइसिउ तुह्मे, अंगीकार करेसिउं अह्मे. ९६
प्राणी अगनि करि पयसार, मरण न बीहि एक लगार,
सो नर संसारि अवतरिउ; बिरद कौतकिउ विस्तरिउ. ९७

दूहा

कौतकीया माहि मूलगु, रसीया वालंभ देव,
उद्यमाल ऊतावला अह्मे हारि छि देव.' ९८

चउपई

हसतु हरष धरीनि तेह, सहू जोइ : 'करिसि रयूं एह ?'
तीणि ठामि आवी ऊभु रहि, कामना-मुषि वयण इम कहि : ९९
विहूनि जिहां हुइ अवतार, त्रींजु हूं होय्रो जो अणहार.'
मस्तकि करवत दीधु भार, षंड दोइ हूउ सिंघार. १००
इंद्रजाल परि ऊसरिउ, लोक दहोदसि ताम नीसरिउ,
तव विधि मनि चिंता ऊपनी, किरि विमासण थइ एकमनी : १०१
'चिंतित केरु करिइ योग, जिम मनविंछित वलसि भोग.'
अति सुंदर रूअडु आराम, विवध पंषीआ केरु ठाम. १०२
तरूअर भलु सफल सहिकार; शुकी शुक हूउ अवतार.
बंधव विहिनी नरनारी जाणि; सुष संयोगि रहि तीणि ठामि. १०३
मित्र जीव पारेवउ थयु, नित कौतक जोइ पासि रहिउ,
त्रणि जीव धरि बहू प्रेम, वंध्या गयवार सलकी जेम. १०४

दूहा

मन पूरण मोटउ अछि. हीअडा, म करिसि सोस.
सरजिउं किमइ नवि टलइ, नवि दीजि कहि दोस. १०५

चउपई

अपत्य शुकीइ प्रसव्यु तदा, ईंडा-युग्म दोइ सेवि सदा.
ईणि अवसरइ वनि दवानल थिउ; धूम्र दहो दसि व्यापी रह्यउ. १०६
चाली दव आव्यु सहिकार, बेहू विमासि चित्त मझारि.
मोहइ वालक मेहला नवि जाइ, लागी तृषा, अंदेसण थाइ. १०७
नारि कहि : "संभलि, हो नाह, पाणी लाबु धरी उछाह."
सरोवर जल लेवा ग्यु जसि, स्त्रीबालक अगनि वारां तसि. १०८

१००. जिहा; हू. १०६. 'तदा' ने बदले 'सदा.'; ईंडा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाल सहित घणूं तडफडि; तृषा पापिणी गाढि नडि.
अंदेसण करि पंषिणी: 'नासीनि गयु घरधणी. १०९

दूहा

गयु धणीआणी तजी; बालक नाण्यु मोह;
फट रे पापी पंषीआ; कीधु मोटु द्रोह. ११०
एक वार सही जेहस्युं कीधी वात मनि रंगि,
दीजि छेहु तेहनि, आवि लाज निज अंगि. १११
सुष दुष तणा विभागीआ, अनि कहीइ घरवास,
प्राण प्रेमस्युं जोडीआ; मूक्यां तेह निरास. ११२
संभलि, भोला रे हीआ, म करेसि कहि-वीसास.'
रुदन करंतां आवटि; दुषभरि दि नीसास.' ११३
फट करयण तणी परि, रंग धरिस म राग (?);
पुरष छि तेह सारिषु सु जोउ तस माग? ११४
नारि कोइ मली हसि, लीधी तेहनी केडि.
अवगुण जाणी कंतना ऊजाई गयु वेडि. ११५
विह नर माणस नीपाइउ; पुरुष तणउ संसारि,
कोमल हृदय पाणह जस्युं, इम जाणी मन, म हारि. ११६
जे सही जेहवुं आचरि, तेही मनि तेहवु भाव.
अवगुण काढि अति घणा, इम जाणी, मन, म हारि.' ११७

चउपई

इम चिती निस्चल मन करी, बालक ऊपरि पांष दोइ धरी.
झल लागी नि दाधी देह, जल लेई पंषी आव्यु तेह: ११८
'मोटउ एह थयु उतपात, बालक नारी हूउ घात.
हवि स्यु जीवि रे प्राणीआ? स्त्रीइ मनि भूंडा जाणीं आ. ११९
हूउ विरह, मिलीसि किहां?' ऊभु रुदन करि तिहां.
आवी मूर्छा, भुइ पडयु; देषित दैवि गाढु निडयु. १२०
वाय-लहिर सचेतन थयु, पुरुष प्रवाहि सूहालु कह्यु:
'संनेह लागि, छंडि केवि प्राण, गिहिला थाइ मूरष सुजाण. १२१

दुहा

स्नेह समान को भड नही, जे मांडि साह्यउ वाद,
बोल ऊपरि आणी आपणु, तेह ऊतारि नाद.' १२२

---

११४. करंता. ११९. भूडा. १२०. किहा. १२२. जे मांडि.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोह जाल मांहि पड्यु नीकलि न सकि कोइ,
रडि पडि अ[नि] टलवलि, सार न करि तस कोइ. १२३

चउपई

देषि पारेव्यु आव्यु मित्र : "धुरि दुष स्युं हवुं चरित्र ?"
"आ सवे हूउ संहार;" शुक बोलि : "छेहलु जुहार." १२४
"अवचारिउं बोलि स्या भणी ? तुझ ऊपरि आणुं पंषिणी.
नारी–अरथि न मरि कोइ. मूढा, हृदय विमासी जोइ." १२५
इम प्रीछवणी कीधी घणी. सूडि वात सवे अवगणी :
"नारी न मलि तेह–समान. जाणिउ मि : तुझनि नही सान. १२६
भवि भवि नारी हयो एह." इम कही झंपाविउं तेह.
अगनि आहुति परि लीधु प्रसी. पारेवा मनि वात ज वसी. १२७
"दिन [दिव] प्रति करतु संभाल मित्र विना हवि जीव्युं आल,
कतूहल जोवानि षप घणी, पासि गति होयो मझ तणी." १२८
इम कही नाष्युं अगनि मझारि : कीजइ मित्र एहवा संसारि.
निस्वारथ नि साथि रहि, प्रीति बांध्या सुषदुष सहि. १२९

मरहठ देस, पुर पहिठाण, नित नवलां जिहां हुइ मंडाण,
सूर सबल सालिवाहन राय, दुर्जन जेणि पडाव्या पाय. १३०
तस पटराणी प्रेमावती, रूपि अपछर, सीलि सती,
मध्य यामिनीइं सुहणुं लहिउं: नरवि मान पति आगलि रहु. १३१
शुकनु जीव ऊअरि अवतरिउ; तीरथ-सेव काम ए सरु,
राणी–मनि मनोरथ भला, पुत्र प्रमाणि पुहता तेतला. १३२
सात दवस साढा नव मास, पुत्र–जन्म हूउ; पूगी आस,
उछव करी ठव्युं सुत–नाम 'नरवाहन' कुमर–अभिराम. १३३
पंचमि वरसि नेसालि ठव्यु; विद्यावंत पंडित अनुभव्यु.
लक्षण बत्रीस यौवन आवीउ; राजकुमरि घणी परिणावीउ. १३४
सालिवाहन पुहुतु परलोकि; नरवाहन रा थाप्यिउ लोकि.
मुनिकेसर पारेवां–जीव, प्रधानवटी करि, प्रेम अतीव. १३५
कणया–पुरि कनकभ्रमराय, करि मनि चिंतित ते काज.
कनकमाला पटराणी होई, कूषि पंषिणी अवतरीआ सोइ. १३६

---

१२४. स्यु. १२९. नाष्यु. १३०. जिहा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमलि बइठी सुहणि हंसली, देषि सुपन राणी गुण–नली.
अवधि पुहुती; पुत्री जणी; राइ वधामणी दीधी घणी. १३७
नगर मांहि गूडी ऊछली; सपन अनुसारि **हंसावली**,
दीधुं नाम मननि कोडि; लक्षणवंती, नही तस षोडि. १३८
विद्या तणु करि अभ्यास; देषी रूप सुर थाइ दास.
यौवन वि, दासी परिचरी; हसि रमि सुषि सुंदरी. १३९
पाणी–ग्रहण कथा छि जेह, **असाईत कवि** भाषइ तेह.
सांभलतां श्रवणे सुष होइ, भणि गणि पंडित नर सोइ. १४०
हितोपदेस हीअडि धरी बोल्युं त्रहं तणुं चरी.
संवत सोल एकवीसि जाणि, **इलिदुर्ग** उत्तम अहिठाणि, १४१
कृष्ण पक्ष वैशाषह मास, एकादसी गुरुवार उलास.
मंगलीक प्रथम अधिकार, कहि **मतिसुंदर :** हुइ जयकार. १४२

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

---

१३८. दीधु. १४०. सांभलता; 'सोइ' ने स्थाने 'तेह' छे.
१४१. तणु.

नोंध—आ काव्य पूरुं थतां तेने अंते नीचेना शब्दो प्राप्त थाय छेः—
"इति हंसाउली प्रथम अधिकार पूर्वभवचरित्र समाप्त। प्रथम षंड संपूर्ण ॥ १"

पण वस्तुस्थितिए **हंसाउली**नो आ प्रथम खंड नथी; मात्र पूर्वभव-चरित, ते पण **असाइत**नी कृति नहि, **मतिसुंदर**नी छे.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक : रसिकलाल छो. परीख, अध्यक्ष, उच्च अभ्यास अने
संशोधन विभाग, गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी, भद्र, अमदावाद

वि. सं. २०० आवृत्ति पहेली ई. स. १९४५
प्रत ५००

कीमत दोढ रूपियो

मुद्रक : मणिलाल क. पटेल, सूर्यप्रकाश प्रिन्टिंग प्रेस
पांचकूवा बहार, अमदावाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar